R.N.I. No.HIN/2002/8718 www.aksnews.com M.P./BHOPAL/642/2024-26

In Pursuit of Truth

पाक्षिक

अक्स

वर्ष : 23 । अंक : 18
16 से 30 जून 2025
पृष्ठ : 48
मूल्य : 25 रु.

रिश्तों की मर्डर मिस्ट्री...

वैवाहिक संबंधों में विश्वास का खात्मा, इस दुनिया में किस पर करें भरोसा?

कहीं मुंह दिखाई के पैसे से कराया पति का कत्ल, कहीं पति के किए 15 टुकड़े

मप्र की महिलाएं हो रही आत्मनिर्भर

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मप्र महिला सशक्तिकरण का नया अध्याय लिख रहा है। प्रदेश में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए जहां सरकार केंद्र और राज्य की योजनाओं का लाभ महिलाओं का दिला रहा है, वहीं महिला स्व-सहायता समूहों को बड़े-बड़े काम देकर उनकी कमाई बढ़ाई जा रही है।

मप्र देश के हृदय स्थल में बसा एक ऐसा राज्य है जिसने महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में आज पूरे देश में नई मिसाल कायम की है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के कुशल नेतृत्व में मप्र सरकार ने स्व-सहायता समूहों को महिला सशक्तिकरण का एक सशक्त माध्यम बनाया है। स्व-सहायता समूह न केवल ग्रामीण और शहरी महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बना रहे हैं, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी उनकी स्थिति को सुदृढ़ कर रहे हैं। पिछले कुछ समय में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में महिला सशक्तिकरण की दिशा में मप्र ने कई उपलब्धियों को हासिल किया है। सरकार की अनेक नीतियां और योजनाएं महिलाओं के उत्थान में सहायक सिद्ध हो रही हैं। मप्र में स्व-सहायता समूहों को ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जा रहा है। वर्तमान में, राज्य में 5 लाख से अधिक स्व-सहायता समूह सक्रिय हैं, जिनमें लगभग 62 लाख महिलाएं जुड़ी हैं। ये समूह महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता, कौशल विकास और सामुदायिक नेतृत्व के अवसर प्रदान कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का मानना है कि स्व-सहायता समूह न केवल आर्थिक सशक्तिकरण का साधन है, बल्कि सामाजिक बदलाव का भी एक जन-आंदोलन है। मप्र सरकार ने स्व-सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं के लिए कई महत्वाकांक्षी योजनाएं शुरू की हैं जिनका प्रभाव राज्य के हर कोने में महसूस किया जा सकता है। मुख्यमंत्री उद्यम शक्ति योजना ने हजारों महिला समूहों को कम ब्याज पर ऋण दिलाकर उनके छोटे-छोटे व्यवसायों को सहारा दिया है। अब महिलाएं न सिर्फ घर चला रही हैं, बल्कि दूसरों को भी रोजगार दे रही हैं। अब तक 30 हजार 264 महिला समूहों और 12 हजार 685 महिला उद्यमियों को 2 प्रतिशत ब्याज अनुदान के रूप में 648.67 लाख की राशि वितरित की जा चुकी है।

लाड़ली बहना योजना के तहत हर महीने 1.27 करोड़ बहनों के खाते में 1551.86 करोड़ रुपए की आर्थिक सहायता उनके खातों में पहुंच रही है। इससे न केवल आर्थिक रूप से महिलाओं की स्थिति बेहतर हो रही है बल्कि महिलाएं डिजिटल युग की सहभागी भी बन रही हैं। इस योजना में 1.27 करोड़ महिलाओं को अब तक 35,329 करोड़ रुपए से अधिक की राशि प्रदान की गई है। इसके अतिरिक्त, 25 लाख महिलाओं को 450 रुपए में गैस सिलेंडर रीफिलिंग के लिए 882 करोड़ रुपए से अधिक की सहायता दी गई है। यह योजना महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ-साथ उनके परिवारों में बचत को प्रोत्साहित कर रही है। मुख्यमंत्री लाड़ली लक्ष्मी योजना में वर्ष 2024-25 में 2 लाख 73 हजार 605 बालिकाओं का पंजीकरण हुआ और लगभग 223 करोड़ रुपए से अधिक की छात्रवृत्ति यूनि-पे के जरिए वितरित की गई। अब तक कुल 50 लाख 41 हजार 810 बेटियां इस योजना का हिस्सा हैं। राज्य सरकार द्वारा नारी शक्ति मिशन के तहत जिला और ग्राम स्तर पर 100 दिवसीय जागरूकता हम होंगे कामयाब अभियान चलाया गया। इसमें प्रदेश में जेंडर संवादों, घरेलू हिंसा, बाल विवाह, साइबर सुरक्षा, कार्यस्थल पर उत्पीड़न और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों को महिलाओं को न केवल जानकारी दी गई, बल्कि उन्हें अपने अधिकारों के लिए खड़ा होना भी सिखाया गया। मप्र सरकार ने स्व-सहायता समूहों के माध्यम से 1 लाख से अधिक महिलाओं को लखपति दीदी बनाया है। सरकार का लक्ष्य 5 लाख स्व-सहायता समूहों के माध्यम से 62 लाख महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना है।

2025 में, जब हम महिलाओं के विकास और सशक्तिकरण की दिशा में किए गए कार्यों की समीक्षा करते हैं, तो हम पाएंगे कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में देश-प्रदेश में महिला सशक्तिकरण की दिशा में सार्थक और महत्वपूर्ण प्रयास किए गए हैं। महिलाएं अपनी पूरी क्षमता को समझकर उसका उपयोग कर सकें, महिलाओं को विभिन्न संस्थागत व्यवस्थाओं जैसे स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, कैरियर एवं व्यावसायिक परामर्श-प्रशिक्षण, वित्तीय समावेशन, उद्यमिता आदि से जोड़ने, उन्हें मार्गदर्शन उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं। महिलाएं आज हर क्षेत्र में अग्रणी और महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। महिलाएं ऐसे-ऐसे कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं जिनकी कुछ वर्ष पूर्व कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। आज की महिलाएं जागृत हैं और अनेक क्षेत्रों में नेतृत्व भी कर रही है। महिलाओं के विचारों और उनके जीवन मूल्यों से सुखी परिवार, आदर्श समाज और समृद्ध राष्ट्र का निर्माण होता है। मप्र में किशोरी बालिकाओं, महिलाओं के सर्वांगीण विकास, संरक्षण, सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण, बेहतर स्वास्थ्य, पोषण के लिए विभिन्न योजनाएं और कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, जिनका उद्देश्य उन्हें हर क्षेत्र में सशक्त बनाना है।

– फीचर

छोटे कदम, बड़ी उड़ान...

लाड़ली बहना योजना के तहत हर महीने 1.27 करोड़ बहनों के खाते में 1551.86 करोड़ रुपए की आर्थिक सहायता उनके खातों में पहुंच रही है। न केवल पैसा, बल्कि डिजिटल साक्षरता भी दी जा रही है ताकि बहनें सिर्फ लाभार्थी नहीं, डिजिटल युग की सहभागी बनें। मुख्यमंत्री लाड़ली लक्ष्मी योजना के तहत वर्ष 2024-25 में 2 लाख 73 हजार 605 बालिकाओं का पंजीकरण हुआ और लगभग 223 करोड़ रुपए से अधिक की छात्रवृत्ति यूनि-पे के जरिए वितरित की गई। अब तक कुल 50 लाख 41 हजार 810 बेटियां इस योजना का हिस्सा हैं। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना में विगत वर्षों की तरह ही इस वर्ष भी मप्र द्वारा शत-प्रतिशत पात्र हितग्राहियों को आर्थिक सहायता प्रदाय की गई। वर्ष 2024-25 में लगभग 6 लाख 30 हजार 929 हितग्राही महिला पंजीकृत किए गए। मुख्यमंत्री उद्यम शक्ति योजना ने हजारों महिला समूहों को कम ब्याज पर ऋण दिलाकर उनके छोटे-छोटे व्यवसायों को सहारा दिया है। अब महिलाएं न सिर्फ घर चला रही हैं, बल्कि दूसरों को भी रोजगार दे रही हैं।

इस अंक में

तैयारी

9 | **यूपीएस लागू करने की तैयारी**

मप्र की मोहन यादव सरकार केंद्र सरकार की यूनिफाइड पेंशन स्कीम को किसी भी वक्त राज्य में लागू कर सकती है। प्रदेश के अधिकारियों का कहना है कि यूपीएस को लागू करने के लिए सरकार को इसका प्रस्ताव...

डायरी

10-11 | **कहां अटक गई...**

मप्र में इस समय तबादलों का दौर चल रहा है। 17 जून तक तबादले करने की समय सीमा बढ़ा दी गई है। सभी विभाग तबादले करने में जुटे हुए हैं। लेकिन चर्चा इस बात की हो रही है कि आईएएस अधिकारियों की तबादले की...

लापरवाही

13 | **कॉलोनाइजर पर मप्र सरकार सख्त**

मप्र में अवैध कॉलोनियों के खिलाफ सरकार अब कड़ा रुख अपनाने जा रही है। यदि किसी व्यक्ति ने नियमों को दरकिनार कर गैरकानूनी तरीके से कॉलोनी बसाई, तो उसके खिलाफ सीधे एफआईआर दर्ज कर जेल भेजा जाएगा। उसके साथ ही ऐसे...

फर्जीवाड़ा

15 | **पुलिस भर्ती में धांधली**

मप्र पुलिस भर्ती परीक्षा में बड़ा फर्जीवाड़ा हुआ है। भर्ती घोटाला गिरोह में शामिल 14 लोग अब तक पुलिस के हत्थे चढ़ चुके हैं। गिरोह के मास्टरमाइंड ने दिल्ली में बैठकर पूरे फर्जीवाड़े को ऑपरेट किया। उसने उप्र, बिहार के नकली परीक्षार्थियों को एग्जाम में बिठा दिया। उसने ऐसा आधार कार्ड...

आवरण कथा 24, 25, 26, 27, 28

सनातन संस्कृति में पति-पत्नी का संबंध 7 जन्मों का माना जाता है। लेकिन इंटरनेट की दुनिया में शादी से पहले के अनैतिक संबंध शादी के बाद पति, पत्नी और मर्डर की कहानी बन रहे हैं। मप्र की व्यावसायिक राजधानी इंदौर में राजा रघुवंशी हत्याकांड हो या ऐसे करीब दर्जनभर मामले, सभी में अवैध संबंधों के कारण रिश्तों की मर्डर मिस्ट्री सामने आ रही है। जिस औरत को लक्ष्मी बनाकर लोग घर ला रहे हैं, वही औरत कहीं पति तो कहीं पूरे परिवार की हत्या का कारण बन रही है।

35

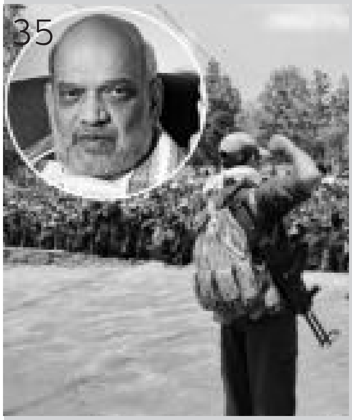

37

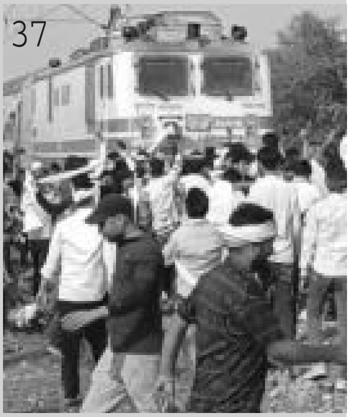

44

45

राजनीति

30-31 | **ऑपरेशन सिंदूर पर...**

ऑपरेशन सिंदूर पर शुरू हुई राजनीति गहरी होती जा रही है। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और ममता बनर्जी खुलकर सामने हैं, जबकि भाजपा की तरफ से रास्ता दिखाने के बावजूद सतर्कता बरतने की कोशिश हो रही है। अगला पड़ाव संसद है, जहां विपक्ष चाहता है कि...

महाराष्ट्र

36 | **अकेले या साथ-साथ?**

बृहन्मुंबई महानगर पालिका (बीएमसी) चुनाव से पहले महाराष्ट्र की राजनीति में बड़ा ट्विस्ट आ सकता है। महायुति और महाविकास अघाड़ी के समीकरण में उलटफेर होने की संभावना भी बन रही है। मुलाकातों और पर्दे के पीछे जारी बातचीत से यह उम्मीद जताई...

उप्र

38 | **'जाति' से डगमगाता...**

कैसे उप्र में हिंदुत्व का जनाधार बना था? कैसे एक साथ दलितों और पिछड़ों को साध ले जाती है भाजपा? क्या यह सवाल उप्र के आगामी 2027 विधानसभा चुनाव में प्रासंगिक रह जाएंगे? 2024 में लोकसभा चुनाव के जातिगत समीकरण यह बताते हैं कि...

6-7	अंदर की बात
40	बिहार
41	पड़ोस
43	विदेश
44	महिला जगत
45	खेल
46	व्यंग्य

पाक्षिक अक्स

वर्ष-23, अंक-18, पृष्ठ-48
16 से 30 जून, 2025

प्रकाशक एवं संपादक : राजेन्द्र आगाल

सम्पादकीय कार्यालय :
प्लाट नम्बर 150, जोन-1 मनोरमा कॉम्पलेक्स,
एफ-03, 04, प्रथम तल, एम.पी. नगर
भोपाल- 462011 (म.प्र.),
टेलीफेक्स - 0755-4017788

email : akshmagazine@gmail.com
W ebsite : www.akshnews.com
RNI NO. HIN/2002/8718 MPBPL/642/2021-23

प्रमुख संवाददाता

भावना सक्सेना-भोपाल, जय मतानी-भोपाल,
हर्ष सक्सेना-भोपाल,
दक्ष दवे-इंदौर, संदीप वर्मा-इंदौर,
विपिन कंधारी-इंदौर, गौरव तिवारी-विदिशा,
ज्योत्सना अनूप यादव-गंजबासौदा, राजेश तिवारी-उज्जैन,
टोनी छाबड़ा-धार, आशीष नेमा-नरसिंहपुर,
अनिल सोडानी-नई दिल्ली, हसमुख जैन-मुंबई,
इंद्र कुमार बिन्नानी-पुणे।

प्रदेश संवाददाता

पारस सरावगी (इंदौर)
09329586555
नवीन रघुवंशी (इंदौर)
09827227000 (इंदौर)
धर्मेन्द्र कथूरिया (जबलपुर)
098276 18400
श्यामसिंह सिकरवार (उज्जैन)
094259 85070
सुभाष सोमानी (रतलाम)
089823 27267
मोहित बंसल (विदिशा)
075666 71111

क्षेत्रीय कार्यालय

नई दिल्ली : ईसी 294 माया इंक्लेव मायापुरी, फोन : 9811017939
जयपुर : सी-37, शांतिपथ, श्याम नगर (राजस्थान) मोबाइल-09829 010331
भिलाई : नेहरू भवन के सामने, सुपेला, रामनगर, भिलाई, मोबाइल 094241 08015
देवास : जय सिंह, देवास मो.-7000526104, 9907353976

स्वात्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक, राजेन्द्र आगाल द्वारा आगाल प्रिंटर्स, प्लाट नं. 150, जोन-1, प्रथम तल, एफ-03, मनोरमा काम्पलेक्स, एम.पी. नगर भोपाल 462011 (म.प्र.), से मुद्रित एवं प्रकाशित

इस अंक में प्रकाशित सामग्री लेखकों के अपने विचार हैं इनसे सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं समस्त विवादों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।

अपनी बात

ये हुनर है... या हद है बेअक्ली की!

सोशल मीडिया पर इन दिनों भोपाल का 90 डिग्री वाला पुल छाया हुआ है। इसको लेकर तरह-तरह के मीम्स बनाए जा रहे हैं। इसमें से एक है...

सरकारी कारीगरी ने ऐसा कमाल कर दिया
मप्र के इंजीनियर्स ने आठवां अजूबा रच दिया

वाकई जो भी इस पुल को देखता है या इसका फोटो देखता है, वह आश्चर्य में पड़ जाता है। क्योंकि करीब 18 करोड़ रुपए झोंककर भोपाल के ऐशबाग में 90 डिग्री का ऐसा ब्रिज बनाया गया, जिसे देखकर जहन में यहीं सवाल उठता है कि क्या ये हुनर है या हद है बेअक्ली की? दरअसल, हृदय प्रदेश की राजधानी भोपाल में हाल ही में बनकर तैयार हुआ ब्रिज इन दिनों देशभर में चर्चा का विषय बना हुआ है। इसकी डिजाइन को लेकर जहां एक ओर सवाल उठाए जा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर सोशल मीडिया पर इसके मीम्स भी जमकर वायरल हो रहे हैं। इसमें लोक निर्माण विभाग के इंजीनियरों के सुरक्षा मापदंड़ों को भी कटघरे में खड़ा किया जा रहा है। सवाल उठ रहा है कि आखिरकार 90 डिग्री मोड का एक पुल 8 साल तक निर्मित होता रहा और किसी का ध्यान ब्रिज की डिजाइन, अनुमति, लेआउट, निर्माण पर नहीं पड़ा। इस ब्रिज को बनाने में 18 करोड़ रुपए खर्च हुए हैं। यानी जनता के टैक्स का पैसा झोंककर ऐसा तिलिस्म खड़ा कर दिया गया है, जिसे देखकर इंजीनियरिंग भी शर्म से पानी-पानी हो जाए। यह ब्रिज रेलवे क्रॉसिंग पर बना आरओबी (रेलवे ओवर ब्रिज) है, जिसकी एप्रोच रोड पर वाहन चालक को लगभग 90 डिग्री के एंगल पर मोड़ना होगा। विशेषज्ञ कहते हैं, ब्रिज पर 30-35 किलोमीटर प्रतिघंटा से ज्यादा की रफ्तार से वाहन चलाना खतरे से खाली नहीं। मोड़ पर तो 20 की स्पीड भी ज्यादा हो सकती है। दरअसल, इस आरओबी की संरचना दो विभागों ने तैयार की है। रेलवे ने ट्रैक के ऊपर का हिस्सा अपने मापदंडों के अनुसार बनाया और पीडब्ल्यूडी ने एप्रोच रोड बनाई। मगर कोऑर्डिनेशन की ऐसी कमी रही कि न रेलवे को पता चला कि आगे क्या बन रहा है और न पीडब्ल्यूडी को यह फिक्र रही कि ब्रिज की दिशा कहां जा रही है। इससे सुशासन वाली सरकार की जमकर भद पिट रही है। इस पुल को लेकर सोशल मीडिया में मीम्स भी वायरल हैं। मप्र कांग्रेस ने इस पर एक मीम शेयर करते हुए लिखा है कि ये है अजब-गजब मप्र में बना दुनिया का आठवां अजूबा है। भोपाल आइए तो जरूर देखिएगा, शायद अभी तो फ्री है, वरना जिस रफ्तार से सरकार कमाई के रास्ते ढूंढ रही है, कल को टिकट भी लग जाए। कांग्रेस के एक नेता ने कटाक्ष करते हुए कहा है कि सोशल मीडिया पर पूरा देश भाजपा सरकार के विकास मॉडल को निहार रहा है। मैं तकनीकी शिक्षा विभाग को सुझाव देता हूं कि इस ब्रिज को अपने पाठ्यक्रम में, एक केस स्टडी के रूप में शामिल करें ताकि इंजीनियर्स की आने वाली पीढ़ी भी जान सके कि जब घोटालों की बीम पर भ्रष्टाचार और कमीशन के कॉलम तान दिए जाते हैं तो ऐशबाग स्टेडियम ओवरब्रिज जैसे अजूबे जन्म लेते हैं। वैसे यह इंजीनियरिंग का पहला कारनामा नहीं है। अगर राजधानी की ही बात करें तो यहां कई ऐसे निर्माण हुए हैं, जो इंजीनियरिंग की पढ़ाई में नहीं हैं। 154 करोड़ रुपए की लागत से बना जीजी फ्लाईओवर काम की गुणवत्ता के कारण उपहास का पात्र बन गया। यह पुल पूरी तरह आरसीसी से बना है, लेकिन निर्माण की खामिया इतनी भयंकर थीं कि जगह-जगह झटके महसूस होते थे। जब लोगों ने आवाज उठाई तो लीपापोती शुरू हुई। ऐसे निर्माण के नमूने मप्र में हर तरफ देखे जा सकते हैं। अब 90 डिग्री वाले पुल को लेकर शासन और प्रशासन स्तर पर सक्रियता बढ़ी है और फाइलें दौड़ने लगी हैं। लेकिन अब कोई कर भी क्या सकता है क्योंकि पुल बनकर तैयार हो गया है और देशभर के लोग इंतजार कर रहे हैं कि कब इस अजीबोगरीब इंजीनियरिंग का कमाल देखने का अवसर उन्हें मिलेगा।

- राजेन्द्र आगाल

पत्र-संपादक के नाम

akshnews.com

बेहतर एजुकेशन मिले

मप्र में विधायकों को वेतन और भत्तों के अलावा कई अन्य सुविधाएं भी मिलती हैं। बीते 50 साल में इनका वेतन 550 प्रतिशत बढ़ चुका है। सरकार को विधायकों की चिंता के अलावा प्रदेश की जनता पर अधिक फोकस करना चाहिए। विधायकी खर्चों को कम कर एजुकेशन पर खर्च करना चाहिए।

● **हेमंत विश्वकर्मा,** राजगढ़ (म.प्र.)

एग्रीकल्चर में मप्र अव्वल

मप्र को निवेश का गढ़ बनाने की दिशा में राज्य सरकार तेजी से कार्य कर रही है। देश में मेड इन इंडिया की लहर चल रही है। मप्र की एग्रीकल्चर ग्रोथ रेट 12 प्रतिशत से अधिक है। जो देश में सबसे अधिक है। मप्र इस समय एग्रीकल्चर के क्षेत्र में देशभर में मॉडल बना हुआ है।

● **प्रिया नागर,** बैतूल (म.प्र.)

महानगर बनेंगे इंदौर-भोपाल

इंदौर और भोपाल दोनों शहरों का विकास तेजी से हो रहा है। सबसे अहम बात ये है कि दोनों शहरों के आसपास शहरीकरण की रफ्तार बाकी शहरों से कहीं ज्यादा है। जैसे-जैसे शहर का दायरा बढ़ रहा है उसके हिसाब से प्लान जरूरी है। आने वाले सालों में ये दोनों शहर महानगर बन जाएंगे।

● **आस्था सूर्यवंशी,** इंदौर (म.प्र.)

कायदे-कानून का पालन नहीं कर रहे सरकारी अधिकारी

सरकारी व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए मप्र सरकार और प्रशासन निरंतर नए-नए कायदे-कानून बनाते रहे हैं। लेकिन उनका पालन कभी भी पूर्णतः नहीं हो पाया है। मप्र में जब अधिकारी-कर्मचारी सप्ताह में 6 दिन कार्यालय जाते थे तब भी वे समय पर नहीं पहुंचते थे। अब कोरोना के बाद 5 दिवसीय कार्यालय होने पर समय अवधि बढ़ाई गई थी, जिसका पालन नहीं किया जा रहा है। कोरोनाकाल में प्रदेश में 5 दिवस कार्यालय लगाने की व्यवस्था के साथ कार्यालयीन समय में जो परिवर्तन किया गया था, उसका पालन नहीं हो रहा है। मप्र में जनता के काम समय पर हो सकें, इसके लिए सरकार ने मंत्रालय सहित अधिकांश कार्यालयों में ई-ऑफिस सिस्टम लागू किया है। लेकिन ये भी कारगर साबित नहीं हो पा रहा है।

● **अनूप चौधरी,** भोपाल (म.प्र.)

भविष्य के लिए वनों को बचाना जरूरी

भारत का ग्रीन इंडिया मिशन के तहत वर्ष 2030 तक 26 मिलियन हेक्टेयर बंजर भूमि को हरा-भरा करने का लक्ष्य है। यह अल्पकालीन लक्ष्य है, सन् 2070 मुख्य टारगेट है। आगामी 45 साल तक बहुत कुछ हटकर करना होगा। बड़ी बंजर जमीन पर वनों को सिर्फ सरकार नहीं उगा सकती, बल्कि उसके लिए सामाजिक सहभागिता की अतिआवश्यकता है। जिस क्षेत्र में वन भूमि है या बड़ी मात्रा में बंजर जमीन है, वहां पर सरकार सहकारिता या सामुदायिक स्तर से वनों को लगाने की दिशा में कार्य हो। सरकार को इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

● **राजेश कुशवाहा,** ग्वालियर (म.प्र.)

दोषियों पर कार्रवाई हो

केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजना स्वच्छ भारत मिशन योजना ग्रामीण में गड़बड़ी को लेकर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं। इस योजना के तहत केंद्र सरकार द्वारा हर साल 7 हजार 194 करोड़ का बजट स्वीकृत किया जाता है। कांग्रेस ने आरोप लगाया है कि इस योजना में जिलों में जमकर फर्जीवाड़ा हो रहा है। ऐसा ही मामला बैतूल जिले की 2 पंचायतों में सामने आया है। इसमें जमीन पर कोई काम तो नहीं हुआ, लेकिन 13 करोड़ 21 लाख की बंदरबांट जरूर हो गई। इस मामले में 12 कर्मचारियों के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया गया है। सरकार को इनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करनी चाहिए।

● **उमेश सिंह,** हरदा (म.प्र.)

पाठकों से निवेदन

कृपया अपनी प्रतिक्रियाएं पक्ष या विपक्ष
जो भी संभव हो इस पते पर भेजें

अक्स

150 जोन-1, मनोरमा काम्पलेक्स,
एफ-02, 03, एमपी नगर, भोपाल

नई सियासी जमीन की तलाश में तेजप्रताप

बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के बड़े बेटे तेजप्रताप इन दिनों सुर्खियों में हैं। तेजप्रताप यादव द्वारा कथित रूप से सोशल मीडिया पर अपने प्यार का इजहार सार्वजनिक करने के बाद उनके पार्टी के निष्कासन की घोषणा पार्टी सुप्रीमो ने कर दी है। अब तेजप्रताप निष्कासित किए जाने के बाद अपने लिए नए राजनीतिक वजूद की तलाश में जुटे हुए हैं। कयास लगाए जा रहे हैं कि तेजप्रताप आगामी चुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर उतर सकते हैं या अपनी अलग पार्टी बना सकते हैं। इस मसले पर राजनीतिक पार्टियां भी आरजेडी पर हमलावर हैं। हालांकि पार्टी तेजप्रताप को खुद से अलग कर इस मामले को शांत करने की कोशिश जरूर कर रही है लेकिन परिवार और सियासत दोनों जगह से दूरी बनने के बाद तेजप्रताप के लिए कई चुनौतियां मौजूद हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि आरजेडी और परिवार से नाता टूटने के बाद तेजप्रताप के सामने सियासी चक्रव्यूह को तोड़कर आगे बढ़ने की चुनौती है। उनके समर्थकों को भी आरजेडी से टिकट मिलने की संभावना नहीं है ऐसे में चुनावी मैदान में निर्दलीय या किसी नई पार्टी के बैनर में उतरने की संभावना प्रबल हो गई है। गौरतलब है कि तेजप्रताप ने पहले भी कई ऐसे काम किए हैं, जिससे आरजेडी की मुश्किलें बढ़ी थीं। उन्होंने वर्ष 2017 में धर्मनिरपेक्ष सेवक संघ (डीएसएस) का गठन किया था।

प्रेशर पॉलिक्सि पर उतरे चिराग

बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर सरगर्मियां तेज हो गई हैं। राजनीतिक दलों ने अपनी-अपनी तैयारी तेज कर दी। इसी बीच केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने कहा कि बिहार मुझे पुकार रहा है। बतौर सांसद यह मेरा तीसरा कार्यकाल है, लेकिन बिहार मेरी हमेशा से प्राथमिकता रही है। अगर पार्टी कहेगी तो मैं विधानसभा चुनाव लड़ूंगा। मेरा सपना है कि बिहार के युवाओं को अपना प्रदेश छोड़कर बाहर न जाना पड़े। मुझे बिहार में ही रहकर काम करना चाहिए। मेरी पार्टी और मैंने यह इच्छा जताई है कि मैं विधानसभा चुनाव लड़ना चाहता हूं। यही नहीं चिराग ने अपना सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स हैंडल का नाम बदल युवा बिहार चिराग पासवान कर लिया है। इसके अलावा राजधानी पटना में हाल ही में चिराग के समर्थन में पोस्टर भी लगे थे। उनके बयान और इस कदम को लेकर सियासी गलियारों में चर्चा तेज हो गई है। कहा जा रहा है कि क्या वे यह सब प्रेशर पॉलिटिक्स के लिए कर रहे हैं या फिर मुख्यमंत्री पद के लिए अपनी दावेदारी मजबूत करने में जुटे हैं। राजनीतिक मामलों के जानकार कहते हैं कि चिराग पासवान कह चुके हैं कि बिहार एनडीए में मुख्यमंत्री पद की वैकेंसी नहीं है। हालांकि उनकी पार्टी के कार्यकर्ता पोस्टर लगाकर उनकी ताजपोशी का इंतजार कर रहे हैं। चिराग ने खुद इसे हवा दी है।

घर वापसी करेंगे सोमशेखर और शिवराम

कर्नाटक में भाजपा ने अपने दो विधायकों एसटी सोमशेखर और ए शिवराम हेब्बार को 6 साल के लिए पार्टी से निकाल दिया है। ये दोनों कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुए थे। उपमुख्यमंत्री और प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष डीके शिवकुमार ने भाजपा की इस कार्रवाई की आलोचना की है। ऐसे में कयास लगाए जा रहे हैं कि ये दोनों विधायक कांग्रेस में शामिल हो सकते हैं। गौरतलब है कि सोमशेखर यशवंतपुर और हेब्बार येल्लापुर विधानसभा के विधायक हैं। ये दोनों उन 18 विधायकों में शामिल थे जो पाला बदलकर भाजपा में गए थे और कांग्रेस के समर्थन वाली एचडी कुमारस्वामी की सरकार गिर गई थी। हालांकि पिछले साल राज्यसभा चुनाव के समय सोमशेखर ने क्रॉस वोटिंग की थी और कांग्रेस के उम्मीदवार का समर्थन किया था। तभी से अटकलें लगाई जा रही थी कि वे पाला बदल सकते हैं। भाजपा नेताओं का कहना है कि इन दोनों विधायकों ने पार्टी छोड़ने का मन बना लिया है इसलिए ये बार-बार पार्टी नेतृत्व के निर्देशों की अनदेखी करते हैं और भाजपा के अंदर गुटबाजी बढ़ाने का प्रयास करते हैं। कई बार चेतावनी देने के बाद दोनों नेताओं को पार्टी से निकाला गया है।

टीएमसी में टकराव!

पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव अगले साल होने हैं लेकिन प्रदेश की सियासत में अभी से उथल-पुथल का दौर शुरू हो गया है। एक तरफ तृणमूल कांग्रेस के भीतर बढ़ती गुटबाजी की खबरें पार्टी के भविष्य पर सवाल खड़े कर रही हैं तो दूसरी तरफ टीएमसी में ममता बनर्जी और उनके भतीजे अभिषेक बनर्जी के बीच मतभेद की चर्चाएं जोरों पर हैं। ममता पार्टी की सर्वोच्च नेता हैं, लेकिन अभिषेक को पार्टी का दूसरा बड़ा चेहरा माना जाता है। 2026 के विधानसभा चुनाव से पहले पार्टी ने हाल ही में संगठनात्मक बदलाव किए जिसमें 11 नए जिला अध्यक्ष और 12 नए चेयरपर्सन नियुक्त किए गए। इसे पार्टी में गुटबाजी को नियंत्रित करने की कोशिश माना जा रहा है। हाल ही में ऑपरेशन सिंदूर से जुड़े एक सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल में टीएमसी की भागीदारी को लेकर विवाद हुआ। केंद्र ने टीएमसी सांसद यूसुफ पठान को बिना पार्टी की सलाह के चुना जिस पर ममता ने आपत्ति जताई। बाद में अभिषेक को प्रतिनिधिमंडल में शामिल किया गया।

राजद की बढ़ी धड़कन

बिहार चुनाव को लेकर समन्वय समिति की अध्यक्षता मिलने के बाद तेजस्वी यादव महागठबंधन में राजद के प्रभुत्व को लेकर निश्चिंत हो गए थे। अपने तौर-तरीकों से कांग्रेस ने भी कुछ ऐसा ही संकेत दिया था। लेकिन महिलाओं को लाभ की घोषणा में श्रेय लेने की मची होड़ बता रही है कि अंदरखाने सबकुछ सामान्य नहीं है। राज्य के विधानसभा चुनाव 2025 में सत्ता मिलने पर हर महिला को मासिक ढाई हजार रुपए देने की घोषणा तेजस्वी पहले ही कर चुके थे। इस बीच कांग्रेस ने ऐसी ही योजना (माई-बहिन मान योजना) के लिए नामांकन कराने तक की घोषणा कर दी है। कांग्रेस की इस घोषणा ने राजद की धड़कन बढ़ा दी है। ऐसे में सवाल है कि महागठबंधन को तो लाभ तेजस्वी के वादे से भी मिल जाता फिर कांग्रेस आतुर क्यों हुई? राजनीतिक पंडितों का कहना है कि महागठबंधन से जुड़े समस्त निर्णय अब तक राजद ही लेता रहा है।

साहब मेहरबान... तो बाबू पहलवान

प्रदेश की प्रशासनिक वीथिका में एक प्रमुख विभाग में चल रही भर्राशाही चर्चा का केंद्र बनी हुई है। दरअसल, विभाग में एक रिटायर बाबू बिना कागज-पत्तर के ही पहलवान बना हुआ है। यानि विभाग के बड़े साहब की मेहरबानी से उक्त रिटायर बाबू जलवादार बना हुआ है। सूत्रों का कहना है कि उक्त बाबू विभाग के बड़े साहब से वर्षों से जुड़ा हुआ है। साहब के चाल, चेहरा और चरित्र को वह भलीभांति जानता है। इसलिए जब उक्त बाबू रिटायर हुआ तो साहब ने उसे रख लिया। सूत्रों का दावा है कि उक्त बाबू जमकर लेन-देन कर रहा है। ऐसे में सवाल उठ रहे हैं कि आखिर वह किसके लिए धन एकत्रित कर रहा है। कोई भी काम कराना होता है तो विभाग के अधिकारी-कर्मचारी बाबू को ही चढ़ावा देते हैं। आलम यह है कि तबादलों के इस दौर में बाबू साहब से आगे निकल चुका है और जमकर वसूली भी कर रहा है। लेकिन सवाल यह उठता है कि आखिर किस आधार पर उसे साहब ने रिटायर होने के बाद भी विभाग में रखा है। जिस विभाग की यहां बात हो रही है, वह विभाग इतना महत्वपूर्ण है कि उसमें गोपनीयता बनाए रखना बेहद जरूरी होता है। इसलिए सरकार सोच-समझकर उस विभाग में अधिकारियों-कर्मचारियों की पदस्थापना करती है। लेकिन सूत्रों का कहना है कि साहब ने अपनी कमाई के लिए एक रिटायर बाबू को विभाग में रखकर सरकारी व्यवस्था को तार-तार कर दिया है।

नर्मदे हर... 5 बजे घर

सुशासन को आधार बनाकर काम कर रही प्रदेश सरकार छोटी-छोटी शिकायतों पर नौकरशाहों सहित अन्य अधिकारियों-कर्मचारियों को चलता कर देती है, लेकिन एक आईपीएस अधिकारी ऐसे हैं जिनके खिलाफ शिकायतों की भरमार है, फिर भी वे अंगद के पांव बने हुए हैं। लोग समझ नहीं पा रहे हैं कि आखिर साहब ने ऐसा कौन-सा मंत्र फूंका है जिससे उनका बाल बांका तक नहीं हो रहा है। 2014 बैच के ये आईपीएस अधिकारी करीब चार साल पहले रेत के अवैध खनन के लिए कुख्यात जिले में कप्तान बनाए गए। सूत्रों का कहना है कि साहब ने अपनी पदस्थापना के साथ ही जिले में अवैध कमाई करने वालों से वसूली शुरू कर दी। आलम यह है कि जिले में प्रदेश की लाइफलाइन को बचाने के लिए सरकारी प्रयासों को पलीता

लगाया जा रहा है और साहब कानून व्यवस्था की आड़ में जमकर चांदी काट रहे हैं। सूत्रों का कहना है कि साहब रेत के अवैध खनन सहित अन्य गलत कामों से अतिरिक्त आय कमा रहे हैं। बताया जाता है कि साहब की शिकायत कई बार उच्च स्तर पर भी पहुंच चुकी है, लेकिन उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हो पाई है। साहब का पूरा फोकस कमाई पर है, इसलिए जिले की कानून व्यवस्था को दरकिनार कर साहब नर्मदे हर बोल 5 बजे ही घर पहुंच जाते हैं।

जाते-जाते भी काली कमाई की भूख

कई नौकरशाह ऐसे होते हैं, जो पूरे सेवाकाल में अवैध कमाई करने में जुटे रहते हैं। ऐसे अफसरों में कुछ तो ऐसे होते हैं, जो रिटायरमेंट की कगार पर पहुंचने के बाद भी काली कमाई करने से घबराते नहीं हैं। ऐसे ही मामले में इन दिनों एक वरिष्ठ आईएएस अधिकारी चर्चा का केंद्र बने हुए हैं। साहब रिटायर होने वाले हैं। लेकिन जाते-जाते भी काली कमाई करने की उनकी भूख शांत होती नहीं दिख रही है। जिन साहब की यहां बात हो रही है वह 2008 बैच के प्रमोटी आईएएस अधिकारी हैं। वह वर्तमान में एक संभाग की बड़ी कुर्सी पर बैठे हैं। सूत्रों का कहना है कि जब से साहब ने संभाग की कमान संभाली है उनका पूरा फोकस लक्ष्मीजी की कृपा पाने पर रहा है। इसके लिए वे संभाग के कनिष्ठ अधिकारियों और कारोबारियों पर दबाव बनाते रहे हैं। साहब की मांगें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। साहब की छवि इस कदर बदनाम है कि उन पर कायदे-कानून का कोई असर नहीं पड़ता है। सूत्रों का कहना है कि साहब की कमाई की कोई सीमा नहीं है। वे पूरे संभाग से लक्ष्मीजी को बटोरने में जुटे हुए हैं। साहब को इस बात का भी डर नहीं सता रहा है कि जाते-जाते अगर वे किसी मामले में फंस गए तो उनकी जमकर फजीहत होगी। बताया जाता है कि जबसे साहब बागियों के क्षेत्र में आए हैं, तबसे उनमें भी काली कमाई की भूख इस कदर बढ़ गई है कि वे किसी को भी बख्शते नहीं हैं।

लक्ष्मी भक्त मैडम

सरकार जब भी कोई पदस्थापना करती है तो वह अफसरों की कार्यप्रणाली को देखते हुए उन्हें विभाग की जिम्मेदारी देती है। यानि चुनिंदा अफसरों को अच्छी जगह पदस्थापना मिलती है। लेकिन कई अफसर ऐसे होते हैं, जो पत्थर पर भी दूब उगा लेते हैं। ऐसे ही अफसरों में 2008 बैच की एक महिला आईएएस अधिकारी शामिल हैं। सूत्रों का कहना है कि मैडम की जबसे वर्तमान विभाग में पदस्थापना हुई है, उन्होंने पैसे कमाने के इतने रास्ते तैयार कर लिए हैं, जिसे देखकर हर कोई आश्चर्यचकित हो रहा है। बताया जाता है कि मैडम स्कूलों की मान्यता, सीबीएसई की एनओसी, जिलों में बजट आवंटन के मार्फत पैसा कमाती रहती हैं। इसलिए मैडम को लोग लक्ष्मी भक्त कहना शुरू कर दिए हैं। मैडम की हर संभव कोशिश रहती है कि विभाग में निरंतर खरीदी का काम चलता रहे, इसके लिए वे जिलों में भी काम निकलवाती रहती हैं। सूत्रों का कहना है कि मैडम की जहां भी पदस्थापना हुई है, उन्होंने लक्ष्मीजी को बटोरने का कोई भी मौका नहीं छोड़ा है। पूर्व में मैडम ग्वालियर-चंबल अंचल के एक जिले में भी पदस्थ रहीं, जहां से उन्हें पैसे के लेन-देन के कारण ही हटाया गया।

फावड़े से बटोर रहे नोट

प्रदेश में कुछ जिले ऐसे हैं, जहां जाने के लिए आईएएस हो या आईपीएस हो, बेकरार रहते हैं। ऐसे ही जिलों में एक ऐसा जिला है, जिसे ऊर्जाधानी के नाम से जाना जाता है। खनिज संपदा से परिपूर्ण इस जिले में अवैध खनन कमाई का सबसे बड़ा जरिया है। सूत्रों का कहना है कि इस जिले में काले सोने से होने वाली अवैध कमाई नौकरशाहों के लिए आकर्षण का केंद्र बनी रहती है। वर्तमान समय में जिले की दोनों बड़ी कुर्सियों पर जो नौकरशाह पदस्थ हैं, उनके बारे में कहा जा रहा है कि वे फावड़े से नोट बटोर रहे हैं। यानि जमकर काली कमाई कर रहे हैं। सूत्र बताते हैं कि चाहे जिले के प्रशासनिक मुखिया हों या पुलिस मुखिया दोनों का पूरा फोकस कमाई पर टिका हुआ है। इसलिए जिले की कानून व्यवस्था की चिंता किए बिना दोनों की नजर इसी पर रहती है कि कहां से अधिक से अधिक कमाई का योग बन रहा है। बताया जाता है कि दोनों अधिकारियों की इस प्रवृत्ति के कारण जिले में काले सोने के अवैध खनन और व्यापार का काम चरम पर पहुंच गया है। अफसरों की मेहरबानी से माफिया भी फल-फूल रहे हैं।

डेटा मिसमैच होने से उठा मामला खत्म

मप्र में 6 महीने से 44,810 कर्मचारियों के वेतन नहीं लिए जाने का मामला निराधार निकला है। दरअसल, मामले में सरकार ने अब तक किसी को जिम्मेदार नहीं पाया है। सरकार ने त्यागपत्र देने वाले, सेवानिवृत्त होने वाले, प्रतिनियुक्ति पर जाने वाले, बगैर एम्प्लाई कोड वाले और मृत कर्मचारियों का डेटा समय पर अपडेट नहीं होने से डेटा मिसमैच होने की बात कही है। उपमुख्यमंत्री एवं वित्तमंत्री जगदीश देवड़ा ने प्रदेश के सभी कर्मचारियों के डेटा को समय पर अपडेट करने के निर्देश जिम्मेदार अधिकारियों को दिए हैं। उन्होंने निर्देशित किया है कि डेटा अपडेशन में देरी पर संबंधित डीडीओ की जिम्मेदारी तय की जाए। उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने बताया कि डेटा क्लीनिंग एक्सरसाइज एक सतत् प्रक्रिया है, जिससे सेवानिवृत्त होने वाले, प्रतिनियुक्ति पर रहने वाले कर्मचारियों, मृत कर्मचारियों एवं अन्य विभिन्न स्थितियों में अन्य स्थानों पर कार्य करने वाले कर्मचारियों का डेटा अपडेट किया जाता है।

उन्होंने बताया कि प्रदेश के कर्मचारियों का डेटा सत्यापन किया गया है और अभी तक कोई भी कर्मचारी संदिग्ध नहीं पाया गया है, अर्थात् किसी भी कर्मचारी को किसी भी प्रकार से कोई भी आर्थिक लाभ नियमों के विपरीत नहीं मिला है। उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने बताया कि डेटा क्लीन करने की प्रक्रिया के बाद आईएफएमआईएस नेक्स्ट जेन में डेटा माइग्रेशन करना सुविधाजनक होगा। इससे शुद्ध डेटा की फीडिंग हो सकेगी। उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा कहते हैं कि डेटा क्लीनिंग एक्सरसाइज कंटीन्यू प्रोसेस है। इसमें लगातार कर्मचारियों का डेटा अपडेट किया जाता है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के कर्मचारियों का डेटा सत्यापन किया गया है और अभी तक कोई भी कर्मचारी संदिग्ध नहीं पाया गया है। यानी किसी भी कर्मचारी को नियमों के विपरीत किसी भी प्रकार से कोई आर्थिक लाभ नहीं मिला है।

वेतन नहीं निकाले जाने के संभावित कारणों की पड़ताल में सामने आया कि त्यागपत्र देने वाले, सेवानिवृत्त होने वाले, प्रतिनियुक्ति पर जाने वाले, बगैर एम्प्लाई कोड वाले और मृत कर्मचारियों का डेटा समय पर अपडेट नहीं होने से डेटा मिसमैच हुआ है। शासन स्तर से इनकी वास्तविक संख्या ज्ञात कराई जा रही है। आईएफएमआईएस में डीडीओ (आहरण संवितरण अधिकारी) तथा कोषालय अधिकारी स्तर से डेटाबेस में अपडेट कराएंगे। इसके लिए सभी डीडीओ से कोषालय अधिकारियों के माध्यम से जानकारी एकत्रित कर भविष्य में सभी प्रविष्टियां समय पर करने के निर्देश दिए हैं। उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने बताया कि डेटा क्लीन करने की प्रक्रिया के बाद आईएफएमआईएस नेक्स्ट जेन में डेटा माइग्रेशन करना सुविधाजनक होगा। इससे शुद्ध डेटा की फीडिंग हो सकेगी। आयुक्त कोष एवं लेखा द्वारा गठित स्टेट फाइनेंशियल इंटेलिजेंस सेल विभिन्न डेटा सेट्स का निरंतर विश्लेषण कर रही है। आईएफएमआईएस डेटा से संज्ञान में आया कि प्रदेश में 36 हजार 26 नियमित, 8 हजार 784 गैर नियमित कुल मिलाकर 44 हजार 810 कर्मचारियों का वेतन नहीं लिया गया है। शासन स्तर से वेतन आहरण नहीं होने के कारणों का पता लगाने के लिए निर्देश जारी किए गए हैं।

दरअसल इस कार्यालय अंतर्गत गठित स्टेट फाइनेंशियल इंटेलिजेंस सेल (एसएफआईसी) द्वारा विभिन्न डेटा सेट्स का परीक्षण तथा विश्लेषण निरंतर किया जाता है। राज्य स्तर पर आईएफएमआईएस डेटा से संज्ञान में आया है कि वेतन आहरण न होने के संभावित कारण- मृत होना, त्यागपत्र, सेवानिवृत्ति, प्रतिनियुक्ति, अर्हता/आवश्यकता के बिना एम्प्लाई कोड का निर्माण आदि हैं। इनकी वास्तविक संख्या ज्ञात करते हुए आईएफएमआईएस में डीडीओ तथा कोषालय अधिकारी स्तर से डेटाबेस में आवश्यक अपडेट करवाए जाने के उद्देश्य से समस्त डीडीओ से जानकारी कोषालय अधिकारियों के माध्यम से एकत्र की गई है। ज्ञातव्य है कि इस संदर्भ में ऐसे नियमित एवं गैर नियमित कर्मचारियों के डेटा संबंधी जानकारी प्राप्त की गई है, जिनका वेतन आहरण दिसंबर 2024 से आईएफएमआईएस कोषालय प्रणाली से आहरित नहीं हुआ है, (यह अन्य किसी प्रणाली से आहरित हो सकता है यथा प्रतिनियुक्ति, स्थानीय निकाय आदि)। इसके साथ अन्य संभावित कारणों को डीडीओ के माध्यम से एकत्रित किया गया है। प्रथम दृष्टया डीडीओ से सत्यापन उपरांत जानकारी विश्लेषण करने पर अभी तक कोई फर्जी/संदिग्ध कर्मचारी परिलक्षित नहीं हुआ है। समस्त डीडीओ को एम्प्लाई कोड के समक्ष उपयुक्त फ्लैगिंग करने तथा एग्जिट-एंट्री इत्यादि के माध्यम से डेटाबेस अद्यतन करने के निर्देश दिए जा रहे हैं। यह डेटा क्लीनिंग एक्सरसाइज एक सतत् प्रक्रिया है एवं उक्त डेटा क्लीन करने के पश्चात् आईएफएमआईएस नेक्स्ट जेन मे डेटा माइग्रेशन किया जाना सुविधाजनक होगा।

● प्रवीण सक्सेना

कोई सस्पेक्ट नहीं

आयुक्त कोष एवं लेखा ने बताया है कि इस संदर्भ में ऐसे नियमित एवं गैर नियमित कर्मचारियों की डेटा संबंधी जानकारी प्राप्त की गई है, जिनका वेतन आईएफएमआईएस कोषालय प्रणाली से आहरित नहीं हुआ है, (यह अन्य किसी प्रणाली से आहरित हो सकता है यथा प्रतिनियुक्ति, स्थानीय निकाय आदि)। इसके साथ अन्य संभावित कारणों को डीडीओ के माध्यम से एकत्रित किया गया है। आयुक्त कोष एवं लेखा ने बताया कि प्रथम दृष्टया डीडीओ से सत्यापन उपरांत जानकारी विश्लेषण करने पर अभी तक कोई संदिग्ध कर्मचारी परिलक्षित नहीं हुआ है। समस्त डीडीओ को एम्प्लाई कोड के समक्ष उपयुक्त फुटपाथ करने तथा एग्जिट-एंट्री इत्यादि के माध्यम से डेटाबेस अद्यतन करने के निर्देश दिए गए हैं। आयुक्त कोष एवं लेखा ने बताया कि प्रथम दृष्टया डीडीओ से सत्यापन उपरांत जानकारी एनालिसिस करने पर अभी तक कोई संदिग्ध कर्मचारी सामने नहीं आया है। सभी डीडीओ को एम्प्लाई कोड के सामने फ्लैगिंग करने तथा एग्जिट-एंट्री वगैरह के माध्यम से डेटाबेस अपडेट करने के निर्देश दिए हैं। आयुक्त कोष एवं लेखा ने बताया है कि ऐसे नियमित एवं गैर नियमित कर्मचारियों की डेटा संबंधी जानकारी प्राप्त की गई है, जिनका वेतन आईएफएमआईएस कोषालय प्रणाली से नहीं निकाला गया है। यह अन्य किसी प्रणाली जैसे प्रतिनियुक्ति, स्थानीय निकाय आदि से निकाला जा सकता है। इसके साथ अन्य संभावित कारणों को डीडीओ के माध्यम से एकत्रित किया गया है।

यूपीएस लागू करने की तैयारी

कमेटी की रिपोर्ट के बाद लागू होगी नई पेंशन स्कीम

मप्र की मोहन सरकार भी नेशनल पेंशन स्कीम और यूनिफाइड पेंशन स्कीम की इन्हीं पेंचीदगियों को समझाने की कोशिश में जुटी है। सरकार इसमें कुछ और भी तबकों को शामिल करने के मूड में है। मप्र सरकार की कोशिश है कि विधवा, परित्याक्ता या बुजुर्ग महिलाएं भी किसी तरह पेंशन स्कीम का हिस्सा बन सकें जिसे अमलीजामा पहनाने की शुरुआत कमेटी से हुई है। उम्मीद की जा रही है कमेटी की रिपोर्ट पेश होने के बाद मप्र सरकार भी जल्द नई पेंशन स्कीम लागू करेगी। अभी प्रदेश में भी साल 2005 से भर्ती हुए अधिकारी और कर्मचारियों के लिए राष्ट्रीय पेंशन योजना यानी कि एनपीएस ही लागू है। लेकिन इस योजना को लेकर कुछ दिक्कतें हैं। इस योजना में सरकार और कर्मचारी का अंशदान बराबर का होता है। रिटायरमेंट के बाद हर कर्मचारी को न्यूनतम पेंशन साढ़े सात हजार रुपए तक मिलना चाहिए। लेकिन कुछ विसंगतियों के चलते कर्मचारियों को इतनी पेंशन नहीं मिल पाती है। प्रदेश में कुछ पेंशनर ऐसे हैं जिन्हें महीने के 5 हजार रुपए ही मिल रहे हैं। इस वजह से कर्मचारी संगठन अक्सर ये मांग करते हैं कि प्रदेश में पुरानी पेंशन योजना ही लागू होनी चाहिए।

मप्र की मोहन यादव सरकार केंद्र सरकार की यूनिफाइड पेंशन स्कीम को किसी भी वक्त राज्य में लागू कर सकती है। प्रदेश के अधिकारियों का कहना है कि यूपीएस को लागू करने के लिए सरकार को इसका प्रस्ताव सदन में पटल पर रखना होगा। सरकार जब चाहे तब ये कदम उठा सकती है। प्रदेश के वित्त विभाग के अधिकारियों का कहना है कि उन्होंने यूपीएस को लेकर शुरुआती तौर पर काम कर लिया है। इस पेंशन स्कीम को लागू करने के लिए सरकार को 225 करोड़ अतिरिक्त रुपयों की जरूरत होगी। यानी, सरकार को यूपीएस के लिए नेशनल पेंशन स्कीम की राशि से 4.5 फीसदी ज्यादा बजट की व्यवस्था करनी होगी। राज्य सरकार ने अधिकारियों-कर्मचारियों के लिए इक्विटी लिमिट और फंड मैनेजर जैसे विकल्पों में वृद्धि की है। रिटायरमेंट के बाद लोगों को इनका सीधा लाभ मिलेगा। हालांकि, ये दोनों लाभ बाजार के जोखिम पर निर्भर करेंगे। इस स्कीम में राज्य के उन अधिकारियों-कर्मचारियों को शामिल किया गया है, जिनकी नौकरी साल 2005 में लगी, जबकि ऑल इंडिया सर्विस के उन अधिकारियों-कर्मचारियों को शामिल किया जाएगा जिनकी नौकरी साल 2004 में लगी। ये विसंगति और विवाद प्रदेश के स्तर पर ही नहीं था बल्कि राष्ट्रीय स्तर भी यही विसंगति बरकरार थी। इसे देखते हुए केंद्र सरकार ने नेशनल लेवल पर यूनिफाइड पेंशन योजना लागू की है। इस पेंशन योजना का लाभ 1 जनवरी से केंद्रीय कर्मचारियों को मिलने भी लगा है। इस योजना को थोड़ा विस्तार से समझ लेते हैं।

गौरतलब है कि केंद्र सरकार अपने कर्मचारियों के लिए 1 अप्रैल, 2025 से यूनिफाइड पेंशन स्कीम (यूपीएस) लागू कर चुकी है। केंद्र सरकार के कर्मचारियों को नेशनल पेंशन स्कीम (एनपीएस) और यूनिफाइड पेंशन स्कीम में से किसी एक को चुनने का फैसला इसी महीने (जून) के अंत तक करना है। आधिकारिक जानकारी के मुताबिक वर्तमान में एनपीएस में पेंशन फंड में कर्मचारियों के वेतन से 10 प्रतिशत की कटौती की जाती है, जबकि राज्य सरकार द्वारा 14 प्रतिशत राशि जमा की जाती है। यूपीएस लागू होने पर पेंशन फंड में कर्मचारियों के वेतन से पूर्व की तरह 10 प्रतिशत राशि ही काटी जाएगी, जबकि सरकार का योगदान 14 प्रतिशत से घटकर 10 प्रतिशत रह जाएगा, लेकिन सरकार को एक कॉर्पस फंड बनाना होगा, जिसमें 8.5 प्रतिशत राशि अलग से जमा करेगी। यानी यूपीएस लागू होने पर सरकार को पेंशन फंड में 4.5 प्रतिशत अधिक योगदान देना होगा। मप्र सरकार हर महीने कर्मचारियों के वेतन-भत्तों पर करीब 5 हजार करोड़ रुपए खर्च करती है। एनपीएस की तुलना में यूपीएस में 4.5 प्रतिशत अधिक राशि जमा करने पर सरकारी खजाने पर हर महीने करीब 225 करोड़ रुपए का अतिरिक्त वित्तीय भार आएगा। मप्र सरकार भी 1 अप्रैल, 2005 को या उसके बाद नियुक्त सरकारी कर्मचारियों के लिए यूपीएस लागू करने की तैयारी कर रही है। इसके लिए सरकार ने अपर मुख्य सचिव वन अशोक वर्णवाल की अध्यक्षता में आईएएस अफसरों की कमेटी का गठन किया है। यह कमेटी गत 29 अप्रैल को गठित की गई थी, लेकिन अब तक कमेटी की एक भी बैठक नहीं हुई है। यही वजह है कि सरकार यूपीएस लागू करने को लेकर आगे कोई निर्णय नहीं ले पाई है। अपर मुख्य सचिव वित्त मनीष रस्तोगी, सचिव वित्त लोकेश जाटव, संचालक बजट तन्वी सुन्द्रियाल, उप सचिव जीएडी अजय कटेसरिया समिति के सदस्य और संचालक पेंशन जेके शर्मा सदस्य सचिव हैं। एनपीएस के अंतर्गत आने वाले जो लोग संशोधित योजना का विकल्प चुनते हैं, उन्हें उनके अंतिम वेतन के 50 प्रतिशत के बराबर गारंटीशुदा पेंशन और मुद्रास्फीति में वृद्धि प्राप्त होगी। कर्मचारी की मृत्यु पर कर्मचारी की पेंशन का 60 प्रतिशत उसके परिजनों को दिया जाएगा (पारिवारिक पेंशन)। इसके लागू होने पर मप्र में करीब पांच लाख सरकारी कर्मचारियों को यूपीएस का लाभ मिलेगा।

राज्य के वित्त विभाग के अधिकारियों ने कहा कि उन्होंने जमीनी काम कर लिया है और सरकार को 2024-25 के लिए मप्र में एनपीएस के लिए अनुमानित राशि के लिए अतिरिक्त 225 करोड़ रुपए या 4.5 प्रतिशत अधिक खर्च करना होगा, जो लगभग 5000 करोड़ रुपए है। हालांकि, यूपीएस बाजार जोखिम पर आधारित होगा। इसमें 2005 के बाद के राज्य सेवाओं के अधिकारी-कर्मचारी और 2004 के बाद के अखिल भारतीय सेवाओं के अधिकारी शामिल होंगे। केंद्र सरकार ने अपने कर्मचारियों के लिए मौजूदा एनपीएस के विकल्प के रूप में यूपीएस लॉन्च किया। अप्रैल 2025 में कार्यान्वयन के लिए निर्धारित, यह नई योजना 2004 के बाद शामिल हुए कर्मचारियों के लिए एक महत्वपूर्ण विकल्प प्रस्तुत करती है। प्रदेश में वर्तमान में करीब 4 लाख 50 हजार कर्मचारी नेशनल पेंशन स्कीम के दायरे में हैं। ये कर्मचारी लंबे समय से सरकार से ओल्ड पेंशन स्कीम लागू करने की मांग कर रहे हैं। तृतीय वर्ग कर्मचारी संघ के प्रदेश महामंत्री उमाशंकर तिवारी का कहना है कि सरकार को ओल्ड पेंशन स्कीम लागू करना चाहिए। यूपीएस को लेकर कर्मचारी सहमत नहीं है।

● **धर्मेंद्र कथूरिया**

कहां अटक गई तबादले की सूची

मप्र में इस समय तबादलों का दौर चल रहा है। 17 जून तक तबादले करने की समय सीमा बढ़ा दी गई है। सभी विभाग तबादले करने में जुटे हुए हैं। लेकिन चर्चा इस बात की हो रही है कि आईएएस अधिकारियों की तबादले की सूची कहां अटक गई है। जबकि कहा जा रहा है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मुख्य सचिव अनुराग जैन के साथ बैठक कर तबादलों की सूची फाइनल कर दी है। सूत्रों के अनुसार मुख्यमंत्री बड़े पैमाने पर फेरबदल के मूड में नहीं हैं, लेकिन जिन पदों पर नियुक्तियां बेहद जरूरी हैं, वहां जल्द बदलाव किए जाएंगे। सचिव स्तर के कुछ वरिष्ठ अधिकारियों के दायित्वों में भी फेरबदल संभव है। वहीं सूत्र बताते हैं कि तबादले की सूची जारी होने में देरी की एक वजह यह भी बताई जा रही है कि मप्र भाजपा अध्यक्ष वीडी शर्मा ने भी बड़ी संख्या में अफसरों के तबादले करने के नाम दिए हैं। ऐसे में सरकार इस बात का इंतजार कर रही है कि प्रदेश में नया भाजपा अध्यक्ष बन जाए तब सूची जारी की जाए। गौरतलब है कि दतिया जिले में कलेक्टर संदीप माकिन के सेवानिवृत्त होने के बाद से यह पद रिक्त है। वर्तमान में जिला पंचायत के सीईओ को अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है, लेकिन जल्द ही नियमित नियुक्ति की संभावना है। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी सुखवीर सिंह और वरिष्ठ आईएएस संजीव कुमार झा की नई पदस्थापनाओं को लेकर भी निर्णय जल्द लिया जा सकता है। लोक निर्माण विभाग जैसे बड़े और अहम विभाग में अब तक कोई स्थायी प्रमुख नहीं है। अब पूर्णकालिक अधिकारी को नियुक्त किया जा सकता है। इसके अलावा राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों की भी नवीन पदस्थापना की जा सकती है, खासकर उन जिलों में जहां प्रशासनिक गति प्रभावित है या कुशल नेतृत्व की आवश्यकता है।

बदले जाएंगे कई कलेक्टर

कर्मचारियों की तबादला अवधि समाप्त होने के बाद केवल मुख्यमंत्री समन्वय के माध्यम से ही तबादले हो सकेंगे। अब आईएएस और आईपीएस अधिकारियों के तबादले किए जाएंगे। इसमें कलेक्टर से लेकर अपर मुख्य सचिव स्तर के अधिकारी शामिल रहेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव सूची को अंतिम रूप देने के लिए जल्द ही मुख्य सचिव अनुराग जैन और पुलिस महानिदेशक कैलाश मकवाना के साथ बैठक करेंगे। सूत्रों के अनुसार डिंडौरी सहित अन्य जिलों के कलेक्टर बदले जा सकते हैं। डिंडौरी कलेक्टर नेहा मराव्या को लेकर स्थानीय स्तर पर असंतोष है। अधीनस्थ अधिकारियों-कर्मचारियों से उनका तालमेल नहीं बन पा रहा है, जिसके कारण काम भी प्रभावित हो रहा है। वहीं, कुछ कलेक्टरों को सरकार बड़ी जिम्मेदारी देना चाहती है इसलिए उन्हें नई पदस्थापना दी जा सकती है। मंत्रालय में भी जिन अधिकारियों के पास अधिक दायित्व हैं, उनसे लेकर दूसरों को दिए जा सकते हैं। लोक निर्माण विभाग में अभी कोई पूर्णकालिक अधिकारी नहीं है। ऊर्जा विभाग के अपर मुख्य सचिव नीरज मंडलोई के पास अतिरिक्त प्रभार है।

आखिर क्यों लिखी जा रही ए+ नोटशीट

प्रदेश में लगता है शासन और प्रशासन के बीच समन्वय नहीं बन पा रहा है। ऐसा इसलिए कहा जा रहा है कि एक आरक्षक के लिए भी ए+ नोटशीट लिखी जा रही है। एक तरफ सरकार प्रदेश में तबादलों को पारदर्शी बनाने का दावा कर रही है। वहीं दूसरी तरफ स्थिति यह है कि जिलों में वरिष्ठ अधिकारियों के बीच समन्वय का अभाव है। यही नहीं जिस तरह के हालात दिख रहे हैं, उससे तो यही लग रहा है कि एक अदना सा कर्मचारी भी अपने वरिष्ठ अधिकारियों को महत्व नहीं दे रहा है। अगर पुलिस महकमे को ही ले लें तो नियमानुसार जिलों में तबादले आईजी-एसपी के समन्वय से किए जा सकते हैं। लेकिन देखा यह जा रहा है कि इनके पास जाने की बजाय एक आरक्षक भी सीएम सचिवालय से ए+ नोटशीट लिखवा रहा है। प्रदेश में जिस तरह दनादन ए+ नोटशीट लिखी जा रही है, उससे कहा जा रहा है कि इस समय ए+ नोटशीट की बयार बह रही है। ऐरा-गैरा नत्थू खेरा, यानि जिसको देखो वह तबादले के लिए ए+ नोटशीट लेकर घूम रहा है। इसको लोग समझ नहीं पा रहे हैं। कुछ अफसर तो यहां तक कह रहे हैं कि अगर मुख्यमंत्री या मुख्यमंत्री सचिवालय डीजीपी या एसपी को फोन कर दे तो तबादले आसानी से हो सकते हैं, लेकिन जिस तरह ए+ नोटशीट लिखी जा रही है, उससे ऐसा लग रहा है, जैसे कोई भी दिशा-निर्देश देने की स्थिति में नहीं है।

अरबों का नुकसान, कौन जिम्मेदार?

एमपी स्टेट इनवायरनमेंट इंपैक्ट असेसमेंट अथॉरिटी यानी सिया में एक ऐसा मामला चर्चा का केंद्र बना हुआ है, जिसमें अरबों रुपए के नुकसान की संभावना जताई जा रही है। इसके लिए कौन जिम्मेदार है, यह खोज का विषय बना हुआ है। दरअसल, रिटायर्ड आईएएस शिवनारायण सिंह चौहान जो सिया के चेयरमैन हैं, ने शिकायत की है कि 28 मार्च 2025 से लेकर 21 अप्रैल 2025 तक एक भी बैठक आयोजित नहीं की गई। इस कारण लगभग 700 प्रकरण अनुमतियों के इंतजार में अटके रहे। लेकिन सिया की सचिव उमा माहेश्वरी अवकाश पर गई और प्रभारी सचिव आईएएस श्रीमन शुक्ला ने एक ही दिन में 450 मामलों को अनुमति दे दी। प्रमुख सचिव नवनीत मोहन कोठारी ने भी तुरंत अनुमति दे दी। अफसरों का तर्क है कि सबकुछ नियमानुसार हुआ है। मंत्रालय का नियम है कि यदि किसी प्रोजेक्ट पर 45 दिनों तक अनुमति का फैसला नहीं होता है तो 46वें दिन उसे स्वीकृत मान लिया जाएगा। सिया के चेयरमैन शिवनारायण सिंह चौहान का कहना है कि बार-बार कहने के बाद भी सचिव उमा माहेश्वरी ने बैठक नहीं बुलाई। मानो वे 45 दिन गुजरने का इंतजार कर रही थी। वे छुट्टी पर गई और प्रभारी अधिकारी ने ताबड़तोड़ अनुमतियां जारी करवा दी। संभव है कि यह मनमानी किन्हीं लोगों को लाभ पहुंचाने के लिए की गई।

सिया के अध्यक्ष शिवनारायण सिंह चौहान ने सरकार को न केवल पत्र लिखे बल्कि मुख्य सचिव अनुराग जैन से सचिव उमा माहेश्वरी की शिकायत भी की। यहां शिकायत पर सुनवाई न होने पर सिया चेयरमैन शिवनारायण सिंह चौहान ने केंद्रीय पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग को शिकायत भेज दी। वहीं इस मामले में 6 जून को मुख्य सचिव अनुराग जैन ने अफसरों को निर्देश दिया कि वे आपस में बैठकर इस मामले को सुलझाएं।

अटक गई आईएएस की डीपीसी

मप्र के राज्य प्रशासनिक सेवा के 16 अफसरों का प्रमोशन (नियुक्ति) कर अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवा में शामिल करने के लिए डीपीसी अटक गई है। मंत्रालय सूत्रों का कहना है कि जून के दूसरे सप्ताह में यूपीएससी में विभागीय पदोन्नति समिति (डीपीसी) की बैठक संभावित है। जिसमें इन अफसरों को आईएएस-आईपीएस अवॉर्ड की मंजूरी मिलेगी। दोनों सेवाओं के कौन-कौन से अफसरों का आईएएस-आईपीएस में प्रमोशन होगा, यह लगभग तय है।

आईएएस अवॉर्ड के लिए राज्य सरकार राज्य प्रशासनिक और राज्य पुलिस सेवा के अधिकारियों की सूची तैयार कर यूपीएससी को भेजती है। यूपीएससी अध्यक्ष किसी एक सदस्य को नॉमिनेट करता है। वह सदस्य मप्र के मुख्य सचिव के साथ बैठक कर लिस्ट को अंतिम रूप देता है। समिति के नामों की सिफारिश किए जाने के बाद इसे डीओपीटी को भेजा जाता है। जहां से आईएएस अवॉर्ड की अधिसूचना जारी की जाती है। इस साल आईएएस के लिए वरिष्ठता सूची के आधार पर 2006 और 2007 बैच के अफसरों को मौका मिला है। आईपीएस के लिए 1997-98 बैच के अफसरों के नाम शामिल किए गए हैं। बता दें कि एक पद के लिए 3 नामों का प्रस्ताव तैयार किया जाता है।

2023 और 2024 के पदों के लिए होगी डीपीसी

इस साल 2023 और 2024 के 8-8 यानी 16 पदों के लिए डीपीसी होगी। दरअसल, 2023 में जिन आठ पदों के लिए डीपीसी होनी थी, वह यूपीएससी को देर से प्रस्ताव भेजने के कारण नहीं हो पाई थी। सामान्य प्रशासन विभाग ने डीपीसी के लिए प्रस्ताव तैयार कर मुख्य सचिव को अनुमोदन के लिए भेजा था। इसमें एसएएस के पदों के साथ नॉन एसएएस (अन्य सेवा) के पदों का भी प्रस्ताव भेजा गया था। इसको लेकर राज्य प्रशासनिक सेवा संघ ने विरोध जता दिया। तब एसएएस अधिकारियों ने मुख्यमंत्री से मुलाकात की थी और विरोध में ज्ञापन सौंपा था। ऐसा 2021-2022 में भी हुआ था।

प्रस्ताव में 2007 बैच के 7 अफसर भी शामिल

इनके अलावा 2007 बैच के 7 और 2008 के दो अफसरों के नाम को भी प्रस्ताव में शामिल किया गया है। 2007 बैच के अफसरों में उपसचिव स्तर के 4 अफसर शामिल किए गए हैं। इनमें सपना लौवंशी, उपायुक्त (राजस्व), इंदौर संभाग, नीता राठौर, मुख्य महाप्रबंधक, पूर्व क्षेत्र विविक, जबलपुर, शैलेंद्र सिंह सोलंकी, अपर संचालक, नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण, इंदौर, रानी पासी, उप सचिव, लोकायुक्त कार्यालय, भोपाल, रंजना देवड़ा, उप सचिव, आयुष विभाग, माधवी नागेंद्र, उप सचिव, महिला एवं बाल विकास विभाग और वर्षा सोलंकी, उप सचिव, पर्यावरण विभाग, वहीं 2008 बैच के दो अफसरों का नाम पैनल में शामिल हैं उनमें प्रियंका गोयल, अतिरिक्त सचिव, माध्यमिक शिक्षा मंडल और अभिषेक दुबे, सीईओ, जिला पंचायत गुना शामिल हैं।

16 आईपीएस होंगे रिटायर

प्रदेश में आईएएस और आईपीएस अधिकारियों का टोटा बना हुआ है। इस बीच 2026 में 16 आईपीएस अधिकारी रिटायर हो जाएंगे। जबकि प्रदेश को 5 आईपीएस मिलेंगे।

मुश्किल से 2 गिरी गाज

प्रदेश में एक तरफ सरकार सुशासन पर जोर दे रही है, दूसरी तरफ स्थिति यह है कि अधिकारी ही उसका पालन नहीं कर रहे हैं। ऐसे ही 2 आईपीएस अधिकारी विगत दिनों चर्चा का केंद्र बने रहे। इनकी शिकायतें शासन-प्रशासन स्तर पर खूब हुईं, लेकिन इन पर गाज तब गिरी जब विवाद सार्वजनिक हो गया। इनमें एक बालाघाट और एक कटनी एसपी शामिल हैं। दोनों महिला से संबंधित विवाद के कारण लगातार चर्चा में रहे और अंत में सरकार ने दोनों को वहां से हटाया।

पीएम आवास में फर्जीवाड़ा

नगरीय क्षेत्रों में रहने वाले आवासहीन लोगों को मकान देने के लिए केंद्र सरकार ने प्रधानमंत्री शहरी आवास योजना शुरू की है। लेकिन ये योजना शुरू से ही फर्जीवाड़े का शिकार होती रही है। नगरीय प्रशासन विभाग ने 2022 में फर्जीवाड़े की शिकायतों की जांच कराई तो पाया गया कि छतरपुर जिले में 400 लोगों को आवास बनाने की अनुमति दी गई है, लेकिन जांच में पता चला कि न तो मौके पर आवास मिले और न ही लोगों को पैसे। इसी तरह होशंगाबाद में भी 3.45 लाख रुपए के फर्जीवाड़े की रिपोर्ट सामने आई, लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हो पाई है। जानकारों का कहना है कि अगर प्रदेशभर में सही तरीके से जांच कराई जाए तो 10 हजार हितग्राहियों के नाम पर फर्जीवाड़ा सामने आ सकता है।

● राजेन्द्र आगाल

मैडम की लग गई लॉटरी...

मप्र में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव स्कूली शिक्षा को उत्कृष्ट बनाने के अभियान में जुटे हुए हैं। प्रदेश के स्कूलों को निजी स्कूलों की तरह सर्वसुविधायुक्त बनाया जाना है। इसके तहत 50-60 सांदीपनि विद्यालयों (सीएम राइज स्कूल) के लिए फर्नीचर खरीदे गए हैं। इसके लिए बकायदा एक कमेटी बनी है। अभी प्रदेशभर के अन्य स्कूलों के लिए तकरीबन 200 करोड़ रुपए के फर्नीचर खरीदे जाने हैं। सूत्रों का कहना है कि इस खरीदी को देखते हुए स्कूल शिक्षा विभाग की कमिश्नर बाग-बाग हो गई हैं। क्योंकि सूत्रों का दावा है कि 2008 बैच की उक्त महिला आईएएस अधिकारी यह कोशिश करेंगी कि सांदीपनि विद्यालयों में खरीदी के लिए जो कमेटी बनी है, उसी से अन्य स्कूलों में की जाने वाली फर्नीचर खरीदी की अनुशंसा करा ली जाए। ताकि उसके बाद वे मनमाफिक तरीके से खरीदी करवा सकें, जिससे उन्हें मोटा कमीशन मिले। ऐसा करने से उनकी कमाई भी हो जाएगी और वे फंसेंगी भी नहीं। क्योंकि नियमानुसार अगर कमेटी किसी खरीदी की अनुशंसा करती है तो उस पर किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं उठाई जा सकती है।

मप्र में सरकार जनता को घर बैठे ही कई तरह की सुविधाएं मुहैया करा रही है। इसी कड़ी में नगरीय निकायों में ई-नगरपालिका 2.0 पोर्टल शुरू करने की तैयारी हो रही है। इस पोर्टल पर 24 तरह की सेवाएं ऑनलाइन मिलेंगी। इससे लोगों को ऑफिस का चक्कर लगाने से राहत मिलेगी। यानि लोग घर बैठे ही कई तरह की सेवाएं इस पोर्टल के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।

अब घर बैठे ही पूरे होंगे काम

मप्र में नगरीय निकाय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को अब 24 सेवाएं ऑनलाइन मिलेंगी। इसके लिए नगरीय निकायों में ई-नगरपालिका पोर्टल लॉन्च करने वाला है। यह पोर्टल नागरिकों को घर बैठे ही कई तरह की सेवाएं प्रदान करेगा। इसमें जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र, नल कनेक्शन, संपत्ति कर भुगतान जैसी कई सुविधाएं शामिल होंगी। पोर्टल को और बेहतर बनाने के लिए जीआईएस और एआई तकनीक का भी इस्तेमाल किया जाएगा। इस नए पोर्टल का नाम ई-नगरपालिका 2.0 है। यह पुराने पोर्टल का उन्नत संस्करण है। इससे पहले वाले पोर्टल में कुछ तकनीकी दिक्कतें आ रही थीं। उन्हें दूर करने के लिए इस नए पोर्टल को और ज्यादा तकनीकी रूप से मजबूत बनाया गया है। इससे लोगों को बेहतर और सुविधाजनक सेवाएं मिल सकेंगी। मप्र ऐसा पहला राज्य बनने जा रहा है जहां प्रदेश के सभी नगरीय निकायों को एक पोर्टल पर लाया जा रहा है। हालांकि अभी भोपाल नगर निगम का अलग पोर्टल बीएमसी ऑनलाइन है। इसका अनुबंध पूरा होने पर भोपाल नगर निगम को भी ई-नगर पालिका से जोड़ा जाएगा।

जानकारी के अनुसार नगरीय विकास विभाग ने प्रदेश के सभी नगरीय निकायों में एक साथ ऑनलाइन सेवाएं देने के लिए ई-नगरपालिका 2.0 सॉफ्टवेयर तैयार करा लिया है। ई-नगर पालिका 2.0 का राजस्व, उद्योग और पंजीयन विभाग के साथ एकीकरण किया गया है। इससे प्रॉपर्टी की रजिस्ट्री के साथ ही नामांतरण हो जाएगा और प्रॉपर्टी टैक्स का खाता भी बन जाएगा। ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के तहत उद्योगों को भी जल्द ऑनलाइन अनुमतियां जारी होंगी। नागरिकों को भी घर बैठे नगरीय निकायों की सेवाएं मिलेंगी, उन्हें कार्यालय के चक्कर लगाने की जरूरत नहीं होगी। नगरीय विकास एवं आवास विभाग ने प्रदेश के सभी नगरीय निकायों को ऑनलाइन सेवाओं से जोड़ने के लिए केंद्रीकृत वेब आधारित ई-नगरपालिका 2.0 योजना शुरू कर दी है। यह योजना डिजिटल इंडिया अभियान को प्रदेश में आगे बढ़ाने और पारदर्शी तथा त्वरित नागरिक सेवाएं देने के उद्देश्य से लागू की गई है। इसके पहले ई-नगरपालिका 1.0 शुरू किया गया था। इसके द्वारा नगरीय निकायों द्वारा दी जा रही नागरिक सेवाओं, जन-शिकायत सुविधा, निकायों की आंतरिक कार्य-प्रणाली, सभी तरह के भुगतान और बजट प्रक्रिया को एकीकृत किया गया है।

एआई और जीआईएस का उपयोग

ई-नगरपालिका 2.0 में पहले के मुकाबले ज्यादा सेवाएं और सुविधाएं होंगी। पुराने पोर्टल पर 22 नागरिक सेवाएं और 15 मॉड्यूल उपलब्ध थे। नए पोर्टल में 24 सेवाएं और 16 मॉड्यूल होंगे। इसके अलावा, इसमें जीआईएस (भौगोलिक सूचना प्रणाली) और एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) का भी इस्तेमाल किया जाएगा। जीआईएस की मदद से शहर के नक्शे और भौगोलिक जानकारी आसानी से मिल सकेगी। एआई से सिस्टम और भी स्मार्ट और कारगर बनेगा। इससे निकायों के टैक्स पैटर्न का विश्लेषण एआई मिनटों में कर देगा कि कहां से टैक्स ज्यादा आ रहा है और कहां से कम। जीआईएस और एआई तकनीक से जांच की जा सकेगी भवन कितने क्षेत्र में और कितने मंजिल का बना है। उसी के अनुसार आवेदनों का निराकरण होगा।

इसमें ऑनलाइन आवेदन की व्यवस्था की गई थी। लेकिन अब नई सेवा के तहत आवेदन के साथ 24 प्रकार की सेवाएं भी ऑनलाइन ही दी जाएंगी। यानी घर बैठे नागरिक ऑनलाइन आवेदन करेंगे और उन्हें ई-मेल और अन्य माध्यमों से सेवा प्रदान कर दी जाएगी।

अभी तक लोगों को नगर निगम के कामों के लिए दफ्तर के चक्कर काटने पड़ते थे। जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र, नल कनेक्शन या कोई और काम हो, सबके लिए ऑफिस जाना जरूरी था। लेकिन अब इस नए पोर्टल के जरिए लोग घर बैठे ही ये सभी काम कर सकेंगे। इससे समय की भी बचत होगी और परेशानी भी कम होगी। ई-नगरपालिका 2.0 को कॉमन सर्विस सेंटर, एमपी ऑनलाइन कियोस्क सेंटर और भुगतान गेटवे के साथ जोड़ा जा रहा है। इससे तय शुल्क का आसानी से ऑनलाइन भुगतान हो सकेगा। इसके साथ कॉमन सर्विस सेंटर और कियोस्क के माध्यम से भी सेवाएं ली जा सकेंगी। अब इस पोर्टल को क्लाउड पर शिफ्ट कर दिया गया है। इसलिए अब सर्वर डाउन जैसी समस्याएं भी नहीं होंगी। इससे नागरिकों को सेवाएं तेजी से मिलेंगी। नागरिकों को घर बैठे संपत्ति कर का नया खाता खोलने और कर जमा करने, नया नल कनेक्शन लेने, जलकर का भुगतान करने, जन्म, मृत्यु प्रमाण-पत्र बनवाने, ट्रेड लाइसेंस, मैरिज रजिस्ट्रेशन, बिल्डिंग परमिशन, पेड़ काटने की अनुमति, फायर एनओसी के साथ अन्य प्रकार की सभी एनओसी ऑनलाइन मिलेंगी। सभी दस्तावेजों के साथ ऑनलाइन आवेदन करने पर ई-मेल या वाट्सऐप पर डिजिटल हस्ताक्षरित प्रमाणपत्र, एनओसी आदि मिल जाएगी।

● **सुनील सिंह**

म प्र में अवैध कॉलोनियों के खिलाफ सरकार अब कड़ा रुख अपनाने जा रही है। यदि किसी व्यक्ति ने नियमों को दरकिनार कर गैरकानूनी तरीके से कॉलोनी बसाई, तो उसके खिलाफ सीधे एफआईआर दर्ज कर जेल भेजा जाएगा। उसके साथ ही ऐसे कॉलोनाइजर की संपत्ति जब्त कर उसके बैंक खाते सीज किए जाएंगे। मोहन सरकार ने इस दिशा में मप्र नगरपालिका कॉलोनी विकास नियमों को और सख्त करने की तैयारी कर ली है। नए नियमों का प्रारूप बन चुका है और इसे जल्द ही कैबिनेट से मंजूरी के बाद लागू कर दिया जाएगा।

वर्ष 1998 से ही मप्र नगरपालिका कॉलोनी विकास नियमों में यह प्रावधान है कि कलेक्टर और नगर निगम आयुक्त किसी भी अवैध कॉलोनी के निर्माण पर कॉलोनाइजर को जेल भेज सकते हैं। इतना ही नहीं, यह संज्ञेय अपराध की श्रेणी में आता है, जिसमें पुलिस को सीधे गिरफ्तारी का अधिकार है। इसके बावजूद अब तक किसी कॉलोनाइजर पर कठोर कार्रवाई नहीं की गई, जिससे अवैध कॉलोनियों की संख्या लगातार बढ़ती गई। अब सरकार नियमों को प्रभावी और सख्त बनाकर इस समस्या पर अंकुश लगाने जा रही है। नए प्रस्ताव के अनुसार किसी कॉलोनाइजर ने कृषि भूमि पर बिना अनुमति कॉलोनी काटी, तो सरकार पहले उस कॉलोनी का अधिग्रहण करेगी। उसके बाद वहां मौजूद खाली प्लॉट को सरकार द्वारा बेचा जाएगा और कॉलोनी का व्यवस्थित विकास किया जाएगा। इससे स्थानीय निकायों को राजस्व की हानि से बचाया जा सकेगा। रहवासियों को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकेंगी। वर्तमान में राज्य सरकार द्वारा ऐसे कॉलोनियों का सर्वे करवाया जा रहा है। जब तक सर्वे पूरा नहीं होता, तब तक उन कॉलोनियों में किसी भी प्रकार की रजिस्ट्री और नामांतरण पर रोक रहेगी।

पूर्ववर्ती शिवराज सरकार ने वर्ष 2022 तक की अवैध कॉलोनियों को वैध करने का निर्णय लिया था। इसके लिए 2021 में कॉलोनी विकास नियमों में संशोधन कर 31 दिसंबर 2016 तक बनी कॉलोनियों को वैध करने का प्रविधान जोड़ा गया था। वर्तमान में यह संशोधित नियम लागू है, जिसमें यह भी तय किया गया कि एलआईजी और ईडब्ल्यूएस वर्ग के रहवासियों से कोई विकास शुल्क नहीं लिया जाएगा। जबकि अन्य वर्गों से विकास शुल्क का केवल 50 प्रतिशत ही वसूला जाएगा और शेष 50 प्रतिशत राशि निकाय द्वारा वहन की जाएगी। प्रदेश में वर्तमान समय में 8 हजार से अधिक अवैध कॉलोनियां हैं। इनमें अधिकांश नगर निगम और नगर निकाय की सीमा से लगे ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं। अब सरकार का उद्देश्य ऐसे अवैध निर्माण को पूरी तरह से रोकना है। सरकार चाहती है कि भविष्य में कोई भी कॉलोनाइजर नियमों का उल्लंघन कर कॉलोनी विकसित न कर सके। इसके लिए कठोर कानूनी व्यवस्था की जा रही है ताकि प्रदेश का नगरीय विकास सुव्यवस्थित तरीके से हो सके।

कॉलोनाइजर पर मप्र सरकार सख्त

ईओडब्ल्यू ने लिया एक्शन

बाबा महाकाल की नगरी उज्जैन में साल 2028 में सिंहस्थ का आयोजन होना है, जिसकी तैयारियों में मप्र सरकार जुट गई है। इस बीच शासन-प्रशासन अवैध कॉलोनाइजरों पर शिकंजा कस रही है। जिन्होंने सिंहस्थ भूमि क्षेत्र में अवैध रूप से कॉलोनियां काटकर आम जनता को बेच जमकर मुनाफा कमाया था। ऐसे 4 कॉलोनाइजर्स को चिन्हित कर उनके खिलाफ ईओडब्ल्यू ने केस दर्ज किया है। यह कार्रवाई प्लाट खरीदने वाले लोगों की शिकायत पर की गई है। ईओडब्ल्यू एसपी रामेश्वर यादव ने बताया कि सिंहस्थ क्षेत्र में अवैध रूप से कॉलोनी काटने के आरोप में ऋतुराज सिंह चौहान, जसराज शर्मा, सोनू शर्मा और पुष्पराज सिंह चौहान के खिलाफ केस दर्ज किया है। इन लोगों ने मिलकर चिंतामण जवासिया मार्ग पर गौरी नंदन परिसर कॉलोनी एवं दशरथ नंदन कॉलोनी काटी थी। जिसके लिए उन्होंने टीएंडसीपी, रेरा और नगर निगम की अनुमतियां नहीं ली थी, जिसके चलते शासन को राजस्व का नुकसान हुआ है। एसपी रामेश्वर यादव ने कहा कि कॉलोनाइजरों ने प्लाट बेचते वक्त कॉलोनी में पीने का पानी, बिजली, सड़क और सीवर लाइन देने का वादा किया था, लेकिन कोई निर्माण नहीं करवाया। नतीजतन चारों कॉलोनाइजर के खिलाफ धोखाधड़ी सहित धारा 420, 120-बी और 292 के तहत प्रकरण दर्ज किए गए हैं। एसपी रामेश्वर यादव के मुताबिक, कॉलोनी गौरी नंदन में टीएंडसीपी, नगर निगम, कॉलोनी सेल, रेरा आदि से कॉलोनी की वैध अनुमति प्राप्त नहीं की गई थी।

गौरतलब है कि प्रदेश में अवैध कॉलोनियों से लोगों को बचाने और उन्हें सही निवेश के लिए जागरूक करने के उद्देश्य से सरकार ने प्रदेश में रजिस्टर्ड कॉलोनाइजरों की सूची जारी की है। इस सूची में कॉलोनाइजरों के नाम, रजिस्ट्रेशन नंबर और कार्यालय का पता भी शामिल किया गया है, ताकि लोग अवैध कॉलोनियों से बच सकें। साथ ही, निकायों को निर्देश दिए गए हैं कि वे लगातार सर्वेक्षण करें और अवैध कॉलोनियों के बनने पर त्वरित कार्रवाई करें। पूर्व में कॉलोनाइजरों के रजिस्ट्रेशन सिर्फ उसी जिले में होते थे, जहां वे अपना प्रोजेक्ट शुरू करते थे। इसका फायदा उठाकर कई कॉलोनाइजर एक जिले में रजिस्ट्रेशन कराने के बाद दूसरे जिले में उसी रजिस्ट्रेशन से अवैध कॉलोनियां बना लेते थे। अब सरकार ने कॉलोनाइजरों के रजिस्ट्रेशन को प्रदेश स्तर पर कर दिया है, जिससे वे किसी भी जिले में प्रोजेक्ट शुरू कर सकते हैं, लेकिन उनके पास रजिस्ट्रेशन का प्रमाण होना जरूरी होगा।

प्रदेश में अब तक लगभग 8 हजार अवैध कॉलोनियां चिन्हित की जा चुकी हैं। इनमें से 600 से अधिक कॉलोनाइजरों पर एफआईआर दर्ज की गई है। हालांकि, निकाय अधिकारियों की ओर से अभी तक इस मुद्दे पर कार्रवाई अपेक्षाकृत धीमी रही है। सरकार अब कड़े नियम और कानून बनाने की तैयारी कर रही है, ताकि अवैध कॉलोनियों पर प्रभावी नियंत्रण रखा जा सके। इसके लिए वार्ड प्रभारी को जिम्मेदारी दी जाएगी कि वे अवैध कॉलोनियों के निर्माण होते ही उन पर कार्रवाई करें।

● नवीन रघुवंशी

पदोन्नति में आरक्षण की आस जगी

पिछले 9 सालों से पदोन्नति का रास्ता देख रहे मप्र के अधिकारी-कर्मचारियों को राज्य सरकार जल्द ही बड़ी राहत देने जा रही है। प्रदेश सरकार पदोन्नति में आरक्षण का नियम जल्द ही लागू करने की तैयारी करने जा रही है। इसके प्रारूप को देखने के बाद मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के साथ सभी मंत्रियों ने इसमें अपनी सहमति दे दी है। नए प्रारूप में तय किया गया है कि पहले जिनकी पदोन्नति हो चुकी है, उन्हें न तो रिवर्ट किया जाएगा और न ही रिटायर्ड हो चुके कर्मचारियों को इसका लाभ मिलेगा। पदोन्नति में आरक्षण के लाभ के लिए सबसे पहले एससी के 16 फीसदी और एसटी के 20 फीसदी पद भरे जाएंगे। इसके बाद बाकी वर्गों को इसका फायदा मिलेगा। माना जा रहा है कि जून माह के अंतिम सप्ताह में इस प्रारूप पर कैबिनेट अपनी मुहर लगा देगी।

मप्र में पदोन्नति का मामला पिछले 9 सालों से उलझा हुआ है। इन 9 सालों के दौरान हजारों कर्मचारी बिना पदोन्नति के ही रिटायर्ड हो गए और बड़ी संख्या में कर्मचारी पदोन्नति का रास्ता देख रहे हैं, लेकिन अब इसका रास्ता खुलने जा रहा है। राज्य सरकार ने इसका प्रारूप तैयार कर लिया है। इस प्रारूप को दो बार मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भी देख चुके हैं। गत दिनों सामान्य प्रशासन विभाग के अपर मुख्य सचिव संजय दुबे ने कैबिनेट में सभी मंत्रियों के साथ इसका प्रेजेंटेशन दिया। अब माना जा रहा है कि अगली कैबिनेट में इस प्रस्ताव को मंजूरी के लिए लाया जा सकता है। प्रारूप में तय किया गया है कि पदोन्नति में आरक्षण का सबसे पहले जनजातीय वर्ग को लाभ दिया जाएगा। इसमें जनजातीय वर्ग के खाली पदों को भरा जाएगा। इसके बाद अनारक्षित वर्ग के कर्मचारियों को इसका लाभ दिया जाएगा। यदि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति वर्ग के आरक्षण पद पर कोई पात्र व्यक्ति नहीं मिलता तो दूसरे वर्ग के कर्मचारी को इसका लाभ नहीं दिया जाएगा। यह पद खाली रखे जाएंगे। पदोन्नति के लिए जितने भी पद खाली होंगे, उससे दोगुना के साथ 4 अतिरिक्त नाम बुलाए जाएंगे। इस तरह यदि 10 पद खाली हैं तो उसके लिए 20 और 4 अतिरिक्त यानी 24 लोग बुलाए जाएंगे। पदोन्नति के लिए हर साल सितंबर से लेकर नवंबर के बीच डीपीसी की जाएगी। इसके अलावा 31 दिसंबर को रिटायर्ड होने वाले कर्मचारियों की पात्रता का निर्धारण किया जाएगा। हर साल 1 जनवरी को रिक्त होने वाले पदों पर पात्र लोगों को प्रमोशन का लाभ मिलता जाएगा। पदोन्नति के लिए दो तरह की लिस्ट तैयार होंगी। इसमें क्लास वन अधिकारियों को पदोन्नति का आधार मैरिट कम सीनियरिटी को बनाया जाएगा। वहीं क्लास-2 के लिए नीचे के पदों के लिए सीनियरिटी कम मैरिट के आधार पर लिस्ट तैयार की जाएगी। इससे सभी वर्गों को फायदा पहुंचेगा।

सरकार ने समाधान निकालने की इच्छा शक्ति दिखाई

पदोन्नति न मिलने से नाराज कर्मचारियों को साधने के लिए सरकार ने उच्च पद का प्रभार देने का रास्ता निकाला पर यह भी सभी विभागों में लागू नहीं हो पाया। समय गुजरता गया। मोहन सरकार ने पदोन्नति के विवादित विषय का समाधान निकालने की इच्छा शक्ति दिखाई। मुख्य सचिव अनुराग जैन की देखरेख में सामान्य प्रशासन विभाग के अपर मुख्य सचिव संजय दुबे और उनकी टीम ने पदोन्नति से जुड़े सैंकड़ों परिपत्र, न्यायालयों के दृष्टांत और कर्मचारी संगठनों की अपेक्षाओं के आधार पर नए नियम का प्रारूप तैयार किया है, जो अब अगली कैबिनेट बैठक में प्रस्तुत किया जाएगा।

मप्र लोक सेवा पदोन्नति नियम 2002 को वर्ष 2016 में हाईकोर्ट जबलपुर द्वारा निरस्त करने के बाद से अब तब एक लाख से अधिक अधिकारी-कर्मचारी बिना पदोन्नति के ही सेवानिवृत्त हो गए। ये सभी पदोन्नति के पात्र हो गए थे लेकिन कोई नियम न होने के कारण विभागीय पदोन्नति समिति की बैठकें ही 9 साल से नहीं हुईं। कर्मचारियों की नाराजगी को देखते हुए वैकल्पिक व्यवस्था के तौर पर तत्कालीन शिवराज सरकार ने उच्च पदों का प्रभार देने की व्यवस्था बनाई पर यह भी संतुष्ट नहीं कर पाई। मोहन सरकार ने इसे पदोन्नति के लिए पात्र कर्मचारियों के प्रति अन्याय माना और लगातार बैठकें कराकर नए नियम का खाका खींच लिया। यदि सब कुछ ठीक रहा तो जल्द ही नए नियम कैबिनेट के अनुमोदन से अधिसूचित हो जाएंगे।

तत्कालीन दिग्विजय सरकार ने अनुसूचित जाति-जनजाति वर्ग को साधने के लिए मप्र लोक सेवा पदोन्नति नियम 2002 बनाकर लागू किए। इसमें यह प्रविधान किया कि अनुसूचित जाति-जनजाति वर्ग को जनसंख्या के अनुपात में पदोन्नति में आरक्षण दिया जाएगा। योग्यता सह वरिष्ठता का प्रविधान भी रखा। निर्माण विभाग में इसके कारण एक साथ भर्ती हुए इंजीनियरों में कोई आगे बढ़ गया तो कोई पीछे छूट गया। इसे लेकर हाईकोर्ट में मामला पहुंचा और 2016 में नियम को इस आधार पर निरस्त कर दिया कि आरक्षण देने से पहले सुप्रीम कोर्ट द्वारा एम नागराज के मामले में पिछड़ेपन, कार्यक्षमता का आंकलन करने के लिए अध्ययन कराने के जो निर्देश थे, उसका पालन नहीं किया गया। यह सियासी रूप से सरकार के लिए बड़ा झटका था इसलिए इस आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई। यहां से यथास्थिति बनाए रखने के निर्देश मिले तो किसी को पदावनत नहीं करना पड़ा पर पदोन्नति की प्रक्रिया रुक गई। इसी बीच अनुसूचित जाति-जनजाति अधिकारी-कर्मचारी संगठन के सम्मेलन में तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बयान दे दिया कि कोई माई का लाल आरक्षण खत्म नहीं कर सकता है क्योंकि कांग्रेस इसे मुद्दा बना रही थी।

● अरविंद नारद

पुलिस भर्ती में धांधली

फरार आरोपितों पर 10-10 हजार का ईनाम घोषित

मप्र पुलिस आरक्षक भर्ती घोटाले में फर्जी अभ्यर्थियों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। सॉल्वर के जरिए परीक्षा देकर आरक्षक बनने वाले अब तक 33 उम्मीदवारों का खुलासा हो चुका है। वहीं जांच एजेंसियों को आशंका है कि यह संख्या और भी अधिक हो सकती है। अब तक इस मामले में 14 आरोपित गिरफ्तार किए गए हैं और 4 फरार आरोपितों पर 10-10 हजार रुपए का ईनाम घोषित किया गया है। राज्य पुलिस द्वारा की जा रही गहन जांच में यह सामने आया है कि आरोपितों ने आधार कार्ड अपडेट कर सॉल्वर से बायोमैट्रिक दर्ज करवाया और फिर शारीरिक परीक्षा से पहले फिर से आधार अपडेट कर खुद का बायोमैट्रिक दर्ज कराया। इस तरह बायोमैट्रिक आधारित सुरक्षा प्रणाली को चकमा देकर नौकरी हासिल की गई। अब तक 14 आरोपितों को गिरफ्तार किया गया, जिनमें सॉल्वर और आधार अपडेट कराने वाले भी शामिल हैं। अब तक 24 एफआईआर दर्ज की गई हैं। 4 फरार आरोपितों पर 10-10 हजार का ईनाम घोषित किया गया है। आधार अपडेट की मदद से सॉल्वर और वास्तविक उम्मीदवारों ने बायोमैट्रिक डेटा बदला था। राज्यभर में टीमें गठित की गईं, एसआईटी की अभी जरूरत नहीं मानी गई। उप्र, बिहार और गुजरात से जुड़े सॉल्वर गिरोहों का खुलासा हुआ। जांच अधिकारियों का मानना है कि अभी तो मामला केवल आरक्षक भर्ती परीक्षा तक सीमित है, लेकिन यही गिरोह अन्य सरकारी परीक्षाओं में भी सॉल्वर भेज चुका हो, इसकी आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता।

मप्र पुलिस भर्ती परीक्षा में बड़ा फर्जीवाड़ा हुआ है। भर्ती घोटाला गिरोह में शामिल 14 लोग अब तक पुलिस के हत्थे चढ़ चुके हैं। गिरोह के मास्टरमाइंड ने दिल्ली में बैठकर पूरे फर्जीवाड़े को ऑपरेट किया। उसने उप्र, बिहार के नकली परीक्षार्थियों को एग्जाम में बिठा दिया। उसने ऐसा आधार कार्ड में फर्जी फिंगर प्रिंट अपडेट करवाकर किया। इसके लिए हर व्यक्ति से 8 लाख रुपए तक लिए गए थे। यह मामला तब उजागर हुआ, जब मुरैना की 5वीं बटालियन में दस्तावेज सत्यापन के दौरान कई उम्मीदवारों के आधार कार्ड में बदलाव मिले, जो संदिग्ध थे। जांच में सामने आया है कि इस पूरे नेटवर्क ने जिन उम्मीदवारों से रुपए, उनके स्थान पर एग्जाम में कौन बैठा, उन्हें कभी न तो बताया, न ही मिलने दिया। उन्होंने ऐसा, इसलिए किया, जिससे किसी प्रकार की गड़बड़ी होने पर कोई सुराग न मिले। पुलिस के लिए इस केस में सबसे बड़ी चुनौती, दो साल पुराने कॉल रिकॉर्ड्स को जुटाना और दिल्ली के मास्टरमाइंड्स तक पहुंचना है।

मुरैना पुलिस के अनुसार, अगस्त-सितंबर 2023 में आयोजित पुलिस भर्ती परीक्षा का रिजल्ट आने के बाद 31 उम्मीदवारों को पांचवीं बटालियन में पहुंचकर दस्तावेज का वेरिफिकेशन करवाना था। इसके लिए आखिरी तारीख 6 मई थी। सत्यापन के दौरान 12 उम्मीदवार ऐसे पाए गए जिनके कागजों में हेरफेर थी, खासकर आधार कार्ड में। मामला संदिग्ध लगने पर जांच की तो बड़ा फर्जीवाड़ा निकला। इस रैकेट ने आधार कार्ड में फर्जी फिंगरप्रिंट अपडेट कर परीक्षार्थियों की जगह बिहार और उप्र के नकली परीक्षार्थियों से परीक्षा दिलवाई। इसके लिए हर उम्मीदवार से 8 लाख रुपए तक की मोटी रकम वसूली गई। अब तक 12 फर्जी परीक्षार्थी पकड़े जा चुके हैं, जिनमें से 8 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इन परीक्षार्थियों में अकेले 4 मुरैना जिले के ही रहने वाले हैं।

पुलिस ने सबसे पहले हरिओम रावत पिता केदार सिंह रावत, निवासी खितारपाल, जिला श्योपुर को गिरफ्तार किया था। हरिओम को एसएएफ की पांचवीं बटालियन में डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन के दौरान पकड़ा गया। जांच में सामने आया कि उसके आधार कार्ड में परीक्षा से पहले और परीक्षा के बाद फिंगर प्रिंट अपडेट किए गए थे। पुलिस पूछताछ में शुरुआत में वह कोई जवाब नहीं दे सका। बाद में उसने कबूला कि उसने 8 लाख रुपए में सौदा किया था। यह सौदा मुरैना जिले के जौरा थाना क्षेत्र के टुड़ीला गांव के एक व्यक्ति से हुआ था, जिसने उसे नकली परीक्षार्थियों के जरिए परीक्षा पास कराने का भरोसा दिलाया था। आरोपी ने बताया कि नकली परीक्षार्थी उप्र के मेरठ जिले का रहने वाला है। हालांकि उसकी नकली परीक्षार्थियों से कभी मुलाकात नहीं कराई गई और न ही उसकी कोई जानकारी दी गई।

हरिओम ने बताया कि एक व्यक्ति स्कैनर और लैपटॉप लेकर उसके पास आया था। दिल्ली में बैठे एक ऑनलाइन सेंटर से एनी डेस्क सॉफ्टवेयर के जरिए उस व्यक्ति के लैपटॉप का कंट्रोल ले लिया गया। इसके बाद हरिओम के अंगूठे के फिंगर प्रिंट स्कैन किए गए और दिल्ली में बैठे नकली परीक्षार्थियों के फिंगर प्रिंट आधार कार्ड में अपडेट कर दिए गए। हरिओम ने परीक्षा में खुद हिस्सा नहीं लिया। 20 नवंबर 2024 को फिजिकल टेस्ट पास कर लिया। इसके बाद 7 मार्च 2024 को जब परीक्षा का परिणाम आया तो उसका चयन हो गया। हरिओम ने सौदे के मुताबिक 80 प्रतिशत राशि जौरा के दलाल को दे दी थी। डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन के दौरान जब पुलिस ने गड़बड़ी पकड़ी तो उससे पूछताछ की गई। पहले वह बहाने बनाता रहा, फिर कहा कि उसे कुछ भी मालूम नहीं है। पुलिस ने उसे तत्काल गिरफ्तार कर लिया।

रैकेट में शामिल लोगों ने सबसे पहले उन दलालों से संपर्क किया जो इस काम को पहले से करते आ रहे थे। यह दलाल परीक्षा की तैयारी कराने वाली कोचिंग संस्थानों के बाहर घूमते और युवकों के घर व उनकी आर्थिक स्थिति का पता लगाते। उनसे संपर्क किया और फिर अपने स्थायी होने का हवाला देते हुए उन्हें इस बात के लिए भरोसे में लिया कि तुम तो हमें सबकुछ समझते हुए रुपए देना। स्थानीय युवकों ने भी इन्हीं दलालों की बातों पर भरोसा कर लिया और जाल में फंसते चले गए। इस पूरे रैकेट में दलालों की भी कई परतें सामने आई हैं। मुख्य सरगना सामने नहीं आया है। रकम वसूली का काम उसके करीबी लोगों ने किया है, ताकि असली मास्टरमाइंड तक पुलिस या जांच एजेंसियां न पहुंच सकें। फर्जीवाड़े में एक बात और सामने आई है कि दिल्ली में बैठे रैकेट के सरगनाओं ने लोकल के दलालों से संपर्क किया। दिल्ली से ही परीक्षार्थियों के आधार कार्ड अपडेट कराए। उनकी जगह नकली परीक्षार्थियों के फिंगर प्रिंट अपडेट हुए, नकली परीक्षार्थी ने परीक्षा दी, उसके बाद फिर से फिंगर प्रिंट अपडेट कराए गए। रैकेट के सरगना इतने शातिर थे कि अभ्यर्थी (परीक्षार्थी) को न तो नकली परीक्षार्थी से मिलवाया और न उससे सीधा संपर्क किया।

● जितेंद्र तिवारी

मप्र में लगातार मिल रही करारी हार के बाद कांग्रेस आलाकमान ने कांग्रेस को मजबूत करने की कवायद शुरू कर दी है। आलाकमान कांग्रेस को भाजपा की तरह ही कैडरबेस बनाने की रणनीति पर काम कर रही है। मप्र में कांग्रेस की जमीनी हालत की बात करें तो यह खस्ताहाल नजर आती है। गौरतलब है कि 2018 के विधानसभा चुनाव में जीत के बाद कांग्रेस ने कमलनाथ की अगुवाई में 15 साल बाद सरकार बनाई लेकिन विधायकों की बगावत ने 15 महीने में ही सत्ता वापस छीन ली।

कैडरबेस होगी मप्र कांग्रेस...!

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी 3 जून को मप्र की राजधानी भोपाल में थे। राहुल गांधी करीब 5 घंटे भोपाल में रहे और 5 कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। उन्होंने पार्टी के संगठन सृजन अभियान की शुरुआत की और नेताओं को गुटबाजी खत्म करने, एकजुट होकर काम करने और संगठन के ढांचे को सशक्त बनाने का दो टूक निर्देश दिया। राहुल गांधी ने कहा कि कोई भी फैसला ऊपर से नहीं थोपा जाएगा। आप सब मिलकर फैसले लें और अगर बदलाव की जरूरत लगी, तो हम वह करेंगे। दरअसल, कांग्रेस को फिर से खड़ा करने के लिए राहुल गांधी नए फॉर्मूले पर काम कर रहे हैं। यह फॉर्मूला है कांग्रेस को कैडरबेस बनाना। मप्र में इसकी शुरुआत की जा रही है। अगर ये फॉर्मूला हिट होता है तो पार्टी इसे देश के अन्य राज्यों में भी लागू करेगी। राहुल गांधी के इस फॉर्मूले में पार्टी की सबसे मजबूत कड़ी होंगे जिलाध्यक्ष। जिनकी पार्टी हाईकमान तक सीधी एंट्री होगी। अब विधानसभा और लोकसभा चुनाव में उम्मीदवारी इन जिलाध्यक्षों की रजामंदी से होगी। यानी क्षत्रपों की पार्टी कहे जाने वाली कांग्रेस में अब पदाधिकारियों के चयन की पूरी प्रक्रिया बदल रही है। राहुल गांधी की पहल पर चल रही इस कवायद से संदेश साफ है कि अब इस पार्टी क्षत्रपों और पट्ठाबाद से बाहर निकलना चाहती है। इसकी शुरूआत जिलाध्यक्षों के चयन से की जा रही है, जिसके लिए कांग्रेस आलाकमान ने पर्यवेक्षक नियुक्त कर दिए हैं। यह इस बात का संकेत है कि आंदोलन से उपजी कांग्रेस क्या भविष्य में कैडरबेस होगी।

मप्र में कांग्रेस की जमीनी हालत की बात करें तो यह खस्ताहाल नजर आती है। 2018 के विधानसभा चुनाव में जीत के बाद कांग्रेस ने कमलनाथ की अगुवाई में 15 साल बाद सरकार बनाई और विधायकों की बगावत से पहले, 15 महीने सत्ता में रही। 2023 के चुनाव में जीत के विश्वास के साथ मैदान में उतरी ग्रैंड ओल्ड पार्टी करीब 41 फीसदी वोट शेयर के साथ 230 में से 66 सीटें ही जीत सकी थी। साल 2018 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने 41.5 फीसदी वोट शेयर के साथ 114 सीटें जीती थीं। कांग्रेस के वोट शेयर में पिछले चुनाव के मुकाबले एक फीसदी से भी कम की कमी आई, लेकिन सीटें 48 कम हो गईं। पिछले साल हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस का प्रदर्शन और भी निराशाजनक रहा। 2024 के चुनाम में कांग्रेस खाता खोलने में भी विफल रही। हालांकि, पार्टी को 32.9 फीसदी वोट मिले थे।

गौरतलब है कि कांग्रेस को हमेशा लीडरबेस पार्टी माना जाता रहा है। प्रदेश में चार दशक तक सत्ता में रहने वाली यह पार्टी पिछले 20 साल से सत्ता से बाहर है। 2018 में उसकी सरकार बामुश्किल बनी तो पर अंतर्विरोधों के चलते महज 15 महीने में ही गिर गई। लगातार सत्ता से दूर रहने का असर संगठन पर भी पड़ा है। खासकर पिछले तीन-चार सालों में कांग्रेस के कई बड़े नेताओं ने पार्टी को अलविदा कहा है। इससे पार्टी की साख पर भी असर पड़ा है। राहुल गांधी ने अब मप्र पर फोकस किया है। कांग्रेस नेताओं की मानें तो 2016 में राहुल गांधी ने प्रदेश में संगठन नेताओं की बैठक ली थी, उसके बाद वे किसी रैली या अन्य कार्यक्रम में प्रदेश के दौरे पर तो आए पर संगठन से जुड़े मसलों पर कोई बात कार्यकर्ताओं से नहीं हुई। 3 जून को राहुल गांधी ने 5 घंटे से अधिक का समय कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ बिताया। उन्होंने एक के बाद एक कई बैठकें लीं और आला नेताओं से साफ कहा कि अब गुटबाजी नहीं चलेगी। लंगड़े घोड़ों और बारात वाले घोड़ों की चर्चा कर उन्होंने इस बात को भी साफ कर दिया कि अब उम्रदराज नेताओं को मार्गदर्शक

संगठन सृजन की वजह से टलेगा युवा कांग्रेस चुनाव

प्रदेश कांग्रेस में इन दिनों संगठन सृजन कार्यक्रम के तहत केंद्रीय एवं प्रदेश के पर्यवेक्षक अलग-अलग जिलों के प्रवास पर हैं। इस बीच युवा कांग्रेस के चुनाव की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई है। ऐसे में संगठन सृजन का काम देख रहे केंद्रीय पर्यवेक्षकों के समक्ष यह मांग उठ रही है कि युवा कांग्रेस के चुनाव को आगे बढ़ा दिया था। सभी पर्यवेक्षक 20 जून को दिल्ली में होने वाली संगठन सृजन की समीक्षा बैठक में पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी एवं अन्य के सामने युवा कांग्रेस का चुनाव कार्यक्रम आगे बढ़ाने की बात रख सकते हैं। मप्र कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ने बताया कि संगठन सृजन के बीच युवा कांग्रेस चुनाव उचित नहीं है। इसे टालने के लिए पार्टी नेतृत्व से मांग की है। संगठन सृजन कार्यक्रम के साथ ही यदि युवा कांग्रेस के चुनाव होते हैं तो फिर दोनों कार्यक्रम प्रभावित होने की संभावना है। पार्टी नेताओं की रुचि युवा कांग्रेस के चुनाव में भी है। सभी बड़े नेता अपने-अपने चहेतों को युवा कांग्रेस का अध्यक्ष बनवाने के लिए गोटियां फिट कर चुके हैं।

मंडल में बैठाने का समय आ गया है। राहुल गांधी ने बैठक में साफ कहा कि अब किसी नेता के समर्थक को पद नहीं सौंपा जाएगा। उनका यह कहना कि अब रेस में दौड़ने वाले घोड़े ही हमारे साथ चलेंगे, यह बताता है कि अब पद से लेकर टिकट वितरण में पट्‌ठाबाद नहीं चलेगा। जिलाध्यक्षों के चयन में उसे ही वरीयता मिलेगी जो पार्टी के लिए सच्चे मन से काम कर रहा है। राहुल गांधी ने जो कहा, उससे यह भी साफ है कि कांग्रेस अब प्रदेश में युवाओं की नई टीम खड़ी करना चाहती है। एक ऐसी टीम जो आने वाले सालों के लिए पार्टी को मजबूती दे। राहुल जानते हैं कि मप्र में तीसरी ताकत मजबूत नहीं है। ऐसे में कांग्रेस को नए सिरे से खड़ा कर भाजपा को वे आने वाले सालों में तगड़ी चुनौती पेश करना चाहते हैं। पिछले विधानसभा और उसके बाद लोकसभा चुनाव में मिली बड़ी पराजय को भुलाकर वे संगठन को ब्लॉक स्तर तक मजबूत करना चाहते हैं।

जिलाध्यक्षों के चयन की प्रक्रिया को इसकी शुरूआत माना जा रहा है। राहुल गांधी ने यह कहकर कार्यकर्ताओं में उत्साह का संचार करने का प्रयास किया है कि अब टिकट वितरण में जिलाध्यक्षों की राय महत्वपूर्ण होगी। राहुल गांधी की मंशा अच्छी है पर क्षत्रपों में बंटी कांग्रेस में जिलाध्यक्षों के चयन में स्थापित नेताओं के प्रभाव से पार्टी कैसे अपने आप को बचा पाएगी, यह उसके सामने बड़ी चुनौती है। कांग्रेस की दिक्कत यही है कि उसके पास जो कार्यकर्ता हैं वे पार्टी के कम और नेताओं के प्रति वफादार ज्यादा हैं। इसी से राहुल गांधी निजात चाह रहे हैं। मप्र कांग्रेस की सबसे बड़ी समस्या गुटबाजी रही है। कमलनाथ, दिग्विजय सिंह और सुरेश पचौरी से लेकर अजय सिंह राहुल तक, मप्र कांग्रेस कई गुटों में बंटी रही है। मप्र चुनाव में करारी हार के बाद पार्टी ने प्रदेश अध्यक्ष बदला, प्रभारी बदला लेकिन आम चुनाव में नतीजा ये रहा कि 2019 के लोकसभा चुनाव में जीती अपनी इकलौती सीट छिंदवाड़ा भी कांग्रेस हार गई। लोकसभा चुनाव में अजय सिंह और गोविंद सिंह जैसे वरिष्ठ नेताओं ने चुनाव लड़ने में असमर्थता जता दी थी। कमलनाथ अपने बेटे की उम्मीदवारी वाले छिंदवाड़ा में भी उतने एक्टिव नहीं दिखे।

लोकसभा चुनाव से पहले मप्र कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी का भी एक वीडियो सामने आया था, जिसमें वह गुटबाजी को कैंसर बताते हुए कहते नजर आ रहे थे कि पार्टी को उबारने के लिए पहले आंतरिक स्तर पर गुटबाजी को खत्म करना ही होगा। मप्र में कांग्रेस की खस्ता हालत के लिए पार्टी के अन्य नेता भी गुटबाजी को जिम्मेदार बताते रहे हैं।

मप्र कांग्रेस को पिछले विधानसभा चुनाव से अब तक करीब 7 साल में 6 प्रभारी मिल चुके हैं। इसे भी गुटबाजी से ही जोड़कर देखा जाता है। कांग्रेस की प्रदेश इकाई में गुटबाजी इस कदर हावी है कि कोई प्रभारी जब तक प्रदेश की राजनीति समझ पाता है, उसे हटा दिया जाता है। 2018 के विधानसभा चुनाव के समय दीपक बाबरिया प्रभारी थे और तब से अब तक मुकुल वासनिक, जेपी अग्रवाल, रणदीप सिंह सुरजेवाला, भंवर जितेंद्र सिंह के बाद अब हरीश चौधरी प्रभारी हैं। हरीश चौधरी को इसी साल महू में कांग्रेस की रैली के दौरान गुटबाजी खुलकर सामने आने के बाद प्रभारी बनाया गया था। वह गांधी परिवार के करीबी माने जाते हैं। स्थानीय नेतृत्व की बात करें तो कमलनाथ उतने सक्रिय नजर नहीं आ रहे। ज्योतिरादित्य सिंधिया भाजपा में जा चुके हैं। जीतू पटवारी को पार्टी में ही उतना सहयोग नहीं मिलने की बातें आती रही हैं, जितना सहयोग उन्हें मिलना चाहिए। ऐसे में लोकल लीडरशिप भी पार्टी के लिए चुनौती बना हुआ है।

राहुल गांधी ने कहा कि भाजपा की मदद करने वालों की पहचान की जाए, संगठन में सही व्यक्ति को सही स्थान दिया जाए। हमें रेस के घोड़े, बारात के घोड़े और लंगड़े घोड़े को अलग-अलग करना होगा। राहुल गांधी ने संगठन को सशक्त बनाने के लिए लोकसभा, विधानसभा, निकाय चुनाव के लिए उम्मीदवार चयन में जिला कांग्रेस कमेटियों की भूमिका को महत्वपूर्ण बनाने, जिम्मेदारी और जवाबदेही तय करने की भी बात कही। राहुल गांधी को गुटबाजी खत्म करने, भाजपा की मदद करने वाले नेताओं की पहचान करने की बात क्यों कहनी पड़ी? इसे समझने के लिए मप्र में कांग्रेस की जमीनी हालत की चर्चा जरूरी है। राहुल गांधी ने कहा कि मप्र में कांग्रेस विचारधारा के लीडर्स की कोई कमी नहीं है। यह भरा पड़ा हुआ है, इसी कमरे में भाजपा को हराने का टैलेंट बैठा हुआ है। मगर आपके हाथ बंधे हुए हैं। बधे क्यों हैं क्योंकि आपकी आवाज कांग्रेस पार्टी के संगठन में नहीं सुनाई देती।

● श्याम सिंह सिकरवार

कांग्रेस नेता बनने में ट्रांसजेंडरो की रुचि नहीं

पिछले एक महीने से ठप पड़ी युवा कांग्रेस के चुनाव की प्रक्रिया आगे बढ़ गई है। चुनाव अधिकारियों ने प्रदेशाध्यक्ष, महासचिव, जिलाध्यक्ष समेत अन्य पदों के लिए दावेदारों के नामों का ऐलान कर दिया है। युवा कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष के लिए 20 नाम आए हैं। जबकि दस्तावेजों के अभाव में एक नाम होल्ड पर है। खास बात यह है कि युवा कांग्रेस का महासचिव बनने के लिए कोई ट्रांसजेंडर नहीं आया है। पार्टी नेता राहुल गांधी के निर्देश पर महासचिव का एक पद ट्रांसजेंडर के लिए आरक्षित रखा गया था। प्रदेशाध्यक्ष के लिए घोषित दावेदारों की सूची में सामान्य, पिछड़ा, अजा एवं अजजा वर्ग के युवा शामिल है। एक युवा नेता राजीव सिंह का दस्तावेजों के अभाव में आवेदन रोका गया है। प्रदेशाध्यक्ष के लिए कुल 20 नाम आए थे, जिनमें से 2 निरस्त हो गए हैं, जबकि एक रोका गया है। इसी तरह महासचिव के 48 पदों के विरूद्ध 178 नामांकन मान्य किए गए हैं। 3 नाम रोके गए हैं। ट्रांसजेंडर के लिए आरक्षित एक पद पर कोई नामांकन नहीं आया है। कांग्रेस को महासचिव पद के लिए ट्रांसजेंडर नहीं मिलने पर भाजपा ने चुटकी ली है। युवा कांग्रेस के चुनाव में कुल पंजीकृत सदस्यों की संख्या 4332 है। जिनमें सशुल्क सदस्य 3948 है। जबकि अनपैड सदस्य संख्या 384 है।

अनुशासन और जनसेवा को बनाएं मंत्र

पचमढ़ी में भाजपा के सांसद-विधायक प्रशिक्षण वर्ग में भाजपा सांसदों, मंत्रियों और विधायकों को सोच समझकर बोलने की नसीहत दी गई। उन्हें ये भी कहा गया है कि अपने स्टाफ का चयन भी सोच-समझकर करें। अपने ऑफिस में अच्छे लोगों को बैठाए। साथ ही उन्हें मंत्र दिया गया कि अनुशासन और जनसेवा को अपनी राजनीति का मंत्र बनाएं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और पार्टी संगठन के सीनियर लीडर्स ने सांसद-विधायकों से सामाजिक और भौगोलिक कार्य विस्तार की दृष्टि से एससी-एसटी प्रभाव वाली सीटों पर भी चर्चा की गई। इसके अलावा भाजपा की कार्यपद्धति के बारे में बताया गया। ऑफिस मैनेजमेंट, मोबाइल मैनर और सामाजिक शिष्टाचार की भी सीख दी गई।

कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री सीआर पाटिल ने मोबाइल मैनेज और सामाजिक शिष्टाचार के गुण सिखाए। साथ ही ऑफिस मैनेजमेंट को लेकर भी टिप्स दिए। भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े ने सोशल मीडिया की क्लास ली। उन्होंने विधायकों और सांसदों को सोशल मीडिया पर सक्रिय रहने के लिए कहा। इस दौरान भाजपा सांसदों, मंत्रियों और विधायकों को सोच-समझकर बोलने की नसीहत दी गई। प्रशिक्षण शिविर में मंत्री राकेश शुक्ला ने प्रशिक्षण को नेतृत्व और संयम की दिशा में महत्वपूर्ण बताया, जबकि विधायक हरदीप सिंह ने इसे जीवन में सुधार का माध्यम बताया। प्रशिक्षण शिविर के दूसरे दिन नेताओं ने नेतृत्व, संयम और आत्ममूल्यांकन पर चर्चा की। मंत्री राकेश शुक्ला ने कहा कि प्रशिक्षण से हमेशा सीखने को मिलता है। उन्होंने इसे नेतृत्व और संयम की दिशा में महत्वपूर्ण बताया। सभी ने अपने-अपने उद्बोधन में महत्वपूर्ण बातें कही।

सांसद-विधायकों को यह बताया गया कि कार्यकर्ताओं से संवाद अच्छा होना चाहिए। परिवारिक भाव होना चाहिए। कार्यालय का मैनेजमेंट सही होना चाहिए। कार्यालय पर विधायकों को अच्छे व्यक्ति को बैठाना चाहिए। नेता हो या कार्यकर्ता हो, सबको मर्यादा में रहकर ही बात करना चाहिए। प्रशिक्षण वर्ग में संगठन को लेकर चर्चा हुई। पार्टी की गतिविधियों के बारे में बताया गया। विकास के बारे में चर्चाएं हुई। कार्यालय, सोशल मीडिया, विधायक के संपर्क, संवाद बेहतर होना चाहिए। अनुसूचित जाति वर्ग की सीटों पर अजय जामवाल ने चर्चा की। सामाजिक समरसता के जरिए इस वर्ग को जोड़ने की कोशिश की गई। अनुसूचित जनजाति की प्रभाव वाली 56 सीटों पर संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा ने प्रशिक्षण दिया। उन्होंने कहा कि आदिवासी वर्ग के लिए चलाई जा रही योजनाओं को प्रचारित करें।

प्रशिक्षण वर्ग में संगठन और सरकार के बीच समन्वय, जनप्रतिनिधियों की भूमिका, संवाद कौशल, सोशल मीडिया संयम और राष्ट्र निर्माण जैसे विषयों पर केंद्र व प्रदेश स्तर के वरिष्ठ नेताओं ने अपनी बात रखी। सत्रों में स्पष्ट संदेश था कि भाजपा को पार्टी नहीं, एक मिशन मानकर हर सांसद और विधायक को जनसेवक की भूमिका में उतरना है। सुबह योग और प्रार्थना सत्र के बाद विधायकों के अलग-अलग समूहों में संवाद आयोजित किए गए। केंद्रीय मंत्री सीआर पाटिल ने सांसद-विधायकों को प्रेज़ेंटेशन के जरिए अपना ऑफिस मैनेजमेंट, ऑफिस स्टाफ और तमाम जानकारियां साझा की। विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष और विधायक डॉ. सीतासरन शर्मा और सांसद सुधीर गुप्ता ने कहा कि आज का जनप्रतिनिधि केवल बोलने वाला नहीं, बल्कि समाज का श्रोता और समाधानकर्ता होना चाहिए। उन्होंने कहा कि श्रोता बनिए, तब ही वक्ता बनिए, यह मंत्र जनसेवा में सबसे उपयोगी है। दूसरे सत्र में उपमुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल, विधायक प्रदीप लारिया और हरिशंकर खटीक ने कहा कि विधायक का दायित्व केवल योजनाओं की घोषणा तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उनका क्षेत्र एक विकास मॉडल बनकर उभरे, यही असली राजनीतिक पूंजी है। शाम के विशेष सत्र में राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावडे ने कहा कि सोशल मीडिया जरूरी है, लेकिन उससे ज्यादा जरूरी है आपकी जिम्मेदारी। ट्वीट आपकी नीति को दर्शाता है, न कि भावनाओं को। उन्होंने सलाह दी कि जनप्रतिनिधि हर बयान, पोस्ट और तस्वीर के सार्वजनिक प्रभाव को समझें।

● सिद्धार्थ पांडे

पार्टी की रीति-नीति और अनुशासन पर जोर

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह मप्र के हिल स्टेशन पचमढ़ी पहुंचे। यहां भाजपा का तीन दिवसीय (14 से 16 जून) प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम का उद्देश्य सांसदों, विधायकों और मंत्रियों को पार्टी की विचारधारा, इतिहास और आचरण संबंधी दिशा-निर्देशों से अवगत कराना है। शिविर की शुरुआत वंदे मातरम् गान के साथ हुई, जिसके बाद अमित शाह ने विधायकों और सांसदों को संबोधित किया। उन्होंने कहा- गलती एक बार हो सकती है, लेकिन दोहराई नहीं जानी चाहिए। शाह ने स्पष्ट रूप से कहा, आप में से कई लोगों से पहले भी ऐसी गलतियां हो चुकी हैं। लेकिन याद रहे कि गलती बार-बार ना हो और किसी भी सूरत में विवादित या संवेदनशील मुद्दों पर बयान देने से बचें। उन्होंने जनसंघ की स्थापना से लेकर भारतीय जनता पार्टी के वर्तमान राजनीतिक सफर तक का संक्षिप्त परिचय भी दिया और बताया कि किस तरह संगठनात्मक अनुशासन और वैचारिक प्रतिबद्धता पार्टी की असली ताकत है। शाह का कहना था कि जनसंघ से भाजपा तक ना तो हमारी विचारधारा बदली और ना ही हमारा संकल्प। जब आप आत्मनिरीक्षण करेंगे तो आपको पता चलेगा कि हम अक्सर पार्टी के बजाय अपने लिए ज्यादा काम करते हैं। अब समय आ गया है कि हम पार्टी के लिए काम करना शुरू करें।

झुग्गी फ्री बनाने का फॉर्मूला अधर में

नवंबर 2024 में मप्र सरकार ने राजधानी भोपाल समेत पूरे प्रदेश को झुग्गी फ्री बनाने का फॉर्मूला बनाया था। लेकिन आज तक योजना धरातल पर नहीं उतर पाई है। जिला प्रशासन अब तक कागजी कार्रवाई तो पूरी कर चुका है, लेकिन शासकीय भूमि से अतिक्रमण हटाने अथवा झुग्गियों के विस्थापन की शुरुआत अभी नहीं हो सकी है। उल्लेखनीय है कि भोपाल को झुग्गी मुक्त बनाए जाने के प्रयास पहले भी कई बार हो चुके हैं। हालांकि पिछले सभी प्रयास न केवल विफल रहे, बल्कि हर वर्ष शहर की सबसे पॉश और कीमती शासकीय भूमि पर नई झुग्गी बस्तियां विकसित होती गईं।

गौरतलब है कि सात माह पहले प्रदेश सरकार ने एक नई पहल शुरू करते हुए शहरी क्षेत्रों में झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर में सुधार करने की योजना बनाने की घोषणा की। उसके तहत शहरी क्षेत्रों में आने वाली झुग्गी-बस्तियों के आंकड़े इकट्ठे किए जा रहे हैं। इसकी शुरुआत राजधानी भोपाल से की गई। पहले चरण में शहरी क्षेत्रों में स्थित झुग्गी बस्तियों के आंकड़े इकट्ठे किए जा रहे हैं। जिससे इनके उन्मूलन के लिए कार्य योजना तैयार की जा सके। इसके साथ ही इन बस्तियों में रहने वाले परिवारों का सर्वे किया जा रहा है। जिससे कि यहां रहने वाले लोगों की गणना की जा सके। हालांकि इसकी शुरुआत सबसे पहले राजधानी भोपाल से की गई है। लेकिन मामला आगे नहीं बढ़ पाया है। राजधानी सहित पूरे मप्र के शहरों में अवैध झुग्गियों को राजनीतिक संरक्षण रहा है। भोपाल में सत्ता और विपक्ष के कुछ चिन्हित राजनेता न सिर्फ वोटों के लालच में बल्कि अवैध मासिक उगाही के फेर में भी झुग्गियों और गुमठियों के संरक्षक बने रहे हैं। गुमठी बसाकर उगाही करने वालों में दो पूर्व विधायक (एक दिवंगत) और एक पूर्व मंत्री सबसे आगे रहे हैं।

मप्र की राजधानी भोपाल को झुग्गी मुक्त बनाने की कार्ययोजना पर काम चल रहा है। जिला प्रशासन अब तक कागजी कार्रवाई तो पूरी कर चुका है, लेकिन शासकीय भूमि से अतिक्रमण हटाने अथवा झुग्गियों के विस्थापन की शुरुआत अभी नहीं हो सकी है। उल्लेखनीय है कि भोपाल को झुग्गी मुक्त बनाए जाने के प्रयास पहले भी कई बार हो चुके हैं। हालांकि पिछले सभी प्रयास न केवल विफल रहे, बल्कि हर वर्ष शहर की सबसे पॉश और कीमती शासकीय भूमि पर नई झुग्गी बस्तियां विकसित होती गईं। पिछले साल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश पर राजधानी को झुग्गी मुक्त बनाने की कार्ययोजना पर काम शुरू हुआ। इसके लिए प्रशासन ने निजी सहभागिता से शासकीय भूमि पर बहुमंजिला इमारतें तैयार कर झुग्गी बस्तियों के विस्थापन की योजना तैयार की है। झुग्गी विस्थापन योजना के तहत पहले चरण में चिन्हित झुग्गियों को 9 क्लस्टरों में विभाजित किया गया। इसमें सबसे पहले वल्लभ भवन के आसपास की झुग्गियों का सर्वे पूरा किया जाना था। निजी सहभागिता से इमारत बनाए जाने का काम भी प्रारंभिक तौर पर लगभग 17-18 एकड़ से शुरू होना था। कलेक्टर की उपस्थिति में हुई बैठक में एक सप्ताह में डीपीआर डिजाइन, प्लानिंग पॉलिसी, एस्टीमेट और टेंडर की शर्तें एवं सभी तैयारियां पूरी किए जाने पर निर्णय हुआ था। हालांकि निर्धारित अवधि में ऐसा हो नहीं सका था।

भोपाल में चाहे राजभवन से सटे इलाके में 17 एकड़ में फैली रोशनपुरा बस्ती हो या बाणगंगा, भीमनगर, विश्वकर्मा नगर जैसी टॉप-8 झुग्गी-बस्तियां शहर के बीच प्राइम लोकेशंस पर करीब 300 एकड़ में फैली हैं। इनके अलावा राहुल नगर, दुर्गा नगर, बाबा नगर, अर्जुन नगर, पंचशील, नया बसेरा, संजय नगर, गंगा नगर, बापू नगर, शबरी नगर, ओम नगर, दामखेड़ा, उड़िया बस्ती, नई बस्ती, मीरा नगर जैसी कुल 388 बस्तियां शहर में हैं। इन सबकी जमीन का हिसाब लगाएं तो यह करीब 1800 एकड़ के आसपास बैठती हैं। इनमें से ज्यादातर पॉश इलाकों में ही हैं। वल्लभ भवन के पास बसी भीमनगर झुग्गी बस्ती 2 लाख 64 हजार 900 वर्गमीटर शासकीय भूमि पर अवैध रूप से बसी है। जिन सात सर्वे नंबरों 1478, 1479, 1480, 1483, 1484, 1489, 1511 आदि पर यह अवैध कब्जा है, उस भूमि की दर 8800 रुपए प्रति वर्गमीटर है, जिसकी कीमत 233.11 करोड़ से अधिक है। इसी प्रकार ईदगाह हिल्स कलेक्ट्रेट के पास स्थित सर्वे नंबरों 105, 106 और 107 की 1.12 लाख वर्गमीटर शासकीय अतिक्रमित भूमि की दर 8 हजार रुपए प्रति वर्गमीटर से अधिक है और इसकी कीमत 80.60 करोड़ रुपए है।

● विकास दुबे

भोपाल में 3 साल में 20 इलाकों में नई बस्तियां

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के आदेश के बाद जिला प्रशासन ने भोपाल की भदभदा बस्ती से कुल 384 झुग्गियां हटा दीं। दूसरी ओर, राजधानी में अभी भी हजारों ऐसी झुग्गियां हैं, जो सरकारी जमीन पर तान दी गई है। इन अवैध झुग्गियों को हटाने के लिए सिर्फ कागजों में ही कवायदें हो रही हैं, जमीन पर कुछ नहीं। यही कारण है कि पिछले 3 साल में 20 इलाकों में नई बस्ती डेवलप हो गई। आरिफ नगर में तो 500 से ज्यादा झुग्गियां बन गई हैं। डीआईजी बंगला चौराहे से करोंद चौराहे की ओर जाने वाले रास्ते पर रेलवे ओवरब्रिज की शुरुआत पर ही झुग्गियां नजर आती हैं। यही तस्वीर बाकी जगहों पर भी देखने को मिली। पिछले कुछ सालों में अवैध तरीके से झुग्गियां बना दी गई हैं। आरिफ नगर में रेलवे ओवरब्रिज के पास ही बस्ती बन गई। यहां पर 500 से ज्यादा झुग्गियां हैं। टीनशेड पर बकायदा पार्टियों के फ्लैक्स-बैनर भी लगे हैं। अंदर संकरी सड़क है, तो गंदगी भी पसरी हुई है। यहां रहने वाले लोगों को रेलवे ट्रैक से हटाया गया था। पुरानी जेल के ठीक सामने अरेरा हिल्स इलाके में सरकारी जमीन पर झुग्गियां बनी हुई हैं। पहाड़ी और पेड़ों के बीच होने से ये झुग्गियां दिखाई नहीं देती हैं। सरकारी जमीन पर 3 साल के भीतर यहां पर कच्चे-पक्के कंस्ट्रक्शन किए गए। इन झुग्गियों के सामने ही मेट्रो डिपो बना है।

म प्र सरकार की महत्वपूर्ण जनकल्याणकारी योजना में से एक है अमृत सरोवर, जिसे गांव-गांव में लाखों रुपए की लागत से ग्रामीण यांत्रिकी सेवा विभाग द्वारा अमल में लाया गया। अमृत सरोवर का मकसद था कि गांवों में पानी का जल स्तर बढ़े, मवेशी प्यासे न रहें और किसान खेती में इसका उपयोग कर सकें। लेकिन डिंडोरी जिले के अमृत सरोवर सूखे पड़े हैं। इनमें एक बूंद पानी नहीं है। उधर, जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत डिंडोरी जिला पंचायत सभाकक्ष में जिला स्तरीय समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया।

बैठक में बताया गया कि जिले को 2171 खेत तालाब निर्माण का लक्ष्य प्राप्त हुआ था, जिसके विरुद्ध 2321 कार्य स्वीकृत कर 2200 कार्यों का निर्माण प्रारंभ कर दिया गया है। इन तालाबों के निर्माण से लघु एवं सीमांत कृषक लाभांवित होंगे तथा जल स्तर में वृद्धि होने से जलसंकट दूर होगा और आजीविका के नए साधन भी उपलब्ध होंगे। कलेक्टर नेहा मारव्या ने निर्देश दिए कि सभी निर्माण कार्य तय समय-सीमा में गुणवत्ता के साथ पूरे किए जाएं। साथ ही मजदूरी एवं सामग्री की नियमित मूल्यांकन प्रक्रिया पूर्ण कर एफटीओ जारी किए जाएं। जिले में 1500 कूपों में जल स्तर बढ़ाने के लिए रिचार्ज संरचना निर्माण का लक्ष्य था, जिसमें अब 1570 कूपों में कार्य स्वीकृत किया जा चुका है। कलेक्टर ने निर्देशित किया कि एक सप्ताह के भीतर सभी कूपों में गुणवत्तापूर्ण रिचार्ज संरचना निर्माण कार्य पूर्ण कर एफटीओ की प्रक्रिया पूर्ण की जाए। जिले में 13 अमृत सरोवर एवं प्रत्येक जनपद पंचायत में कुल 187 सार्वजनिक तालाबों का निर्माण किया जा रहा है। उन्होंने निर्देश दिए कि तालाबों में बंड, पिचिंग और वेस्ट वेयर का निर्माण प्राथमिकता से गुणवत्तापूर्वक किया जाए और इसकी रिपोर्ट समय पर प्रस्तुत की जाए।

डिंडोरी जिले के अमरपुर विकासखंड क्षेत्र की ग्राम पंचायत रमपुरी में वर्ष 2022-23 में अमृत सरोवर 40 लाख 75 हजार रुपए की लागत से बनाया गया। लेकिन इसमें गर्मी के दिनों में एक बूंद पानी तक नहीं है। पूरे जिले में अधिकांश अमृत सरोवरों के यही हाल हैं। इस मामले में कलेक्टर नेहा मारव्या का कहना है कि जांच के आदेश दिए गए हैं। जैसे ही रिपोर्ट आती है तो उसके आधार पर कार्रवाई की जाएगी। वहीं ग्रामीण यांत्रिकी विभाग के एग्जीक्यूटिव इंजीनियर दीपक आर्मो का कहना है कि जिले के 7 विकासखंडों में लगभग 88 अमृत सरोवर वर्ष 2022-23 में बनाए गए थे। फरवरी तक अधिकांश अमृत सरोवर में पानी रहा है, लेकिन वर्तमान में 90 प्रतिशत अमृत सरोवर सूखे पड़े हैं। ग्राम रमपुरी की आबादी वैसे तो 410 लोगों की है लेकिन क्षेत्रफल बड़ा है। यहां बनाए गए अमृत सरोवर में एक बूंद पानी नहीं है। गांव के चरवाहा गुलपत सिंह टेकाम बीते कई सालों से मवेशियों को चराते हैं। उनका कहना है कि अमृत सरोवर बनने का कोई मतलब नहीं है। गांव में पानी की समस्या जस की तस है। ग्रामीण बलराम ने कहा कि गर्मी की शुरुआत होते ही सरोवर पूरी तरह से सूख गया। ग्रामीण दूरदराज से पानी लाने को मजबूर हैं। बता दें कि सरकार की योजना के मुताबिक हर जिले में कम से कम 75 अमृत सरोवरों का निर्माण या पुनरुद्धार करना है।

बता दें कि आदिवासी बाहुल्य जिला डिंडोरी के अधिकांश गांवों में भीषण पेयजल संकट है। नल जल योजना भी कागजों में है। भानपुर गांव में ग्रामीण दो किमी दूर जाकर गड्ढों से पानी भरकर लाते हैं। पूरी गर्मी के दौरान ग्रामीण दूषित पानी पीने के लिए मजबूर हैं। वैसे तो सालभर ही पानी की दिक्कत रहती है लेकिन गर्मी के मौसम में हालात भयंकर हो जाते हैं। क्योंकि गांव में स्थित पुराने कुओं से पानी सूख जाता है। हैंडपंप भी सूखे पड़े हैं। भानपुर गांव के लोग 100 फीट नीचे कुएं की तलहटी में रिसते पानी को ही अपना जीवन का आधार मानकर निकालते हैं।

इसी प्रकार डिंडोरी जिले में चौरा दादर ग्राम पंचायत के बैराग टोला की महिलाओं को दिनभर दूरदराज से भीषण धूप में पानी के लिए भटकना पड़ता है। इस गांव की महलाएं 3 किमी दूर पैदल चलकर झरने से पानी लाती हैं। झरने में भी पानी बहुत कम होता है। ऐसे में बैराग टोला की महिलाएं दिनभर झरने के पास पानी की आस में बैठी रहती हैं। झरने से मिलने वाला पानी भी अक्सर दूषित होता है, जिससे स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं और बढ़ जाती हैं। ग्रामीणों का कहना है कि सालों से यही हाल है। खास बात ये है कि डिंडोरी के गांवों में जल जीवन मिशन पूरी रफ्तार से कागजों में दौड़ रहा है।

डिंडोरी में आज भी कई गांव ऐसे हैं, जहां लोग मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं। ऐसा ही एक गांव भानपुर है, यहां के लोग बूंद-बूंद पानी के लिए तरस रहे हैं। ग्रामीणों के नसीब में शुद्ध पेयजल तक नहीं है। मजबूरी में यहां के लोग दूषित पानी पीने को मजबूर हैं। गर्मी के मौसम में हालात तो और भी खराब हो जाते हैं। गांव में कुओं के जलस्त्रोत सूख गए हैं, जिससे जलसंकट गहरा हुआ है। ग्रामीण 50 से 100 फीट नीचे कुएं की तलहटी में पानी रिसने का इंतजार करते हैं। दरअसल, पूरा मामला मेंहदवानी जनपद क्षेत्र के भानपुर गांव का है। यहां के लोग जलसंकट से जूझ रहे हैं और बूंद-बूंद पानी के लिए ग्रामीणों को मोहताज होना पड़ रहा है। 600 से ज्यादा आबादी वाले गांव में करीब चार कुएं हैं और कई हैंडपंप भी हैं, लेकिन गर्मी के कारण जलस्त्रोत सूख गए हैं।

● रजनीकांत पारे

अमृत सरोवरों में एक बूंद पानी नहीं

17 साल पहले दूषित पानी से हुई थी 11 लोगों की मौत

भानपुर गांव के सरपंच गुलजार सिंह ने कहा कि इस गांव में 2008 में दूषित पानी पीने से 11 लोगों की मौत हो गई थी और सैकड़ों लोग बीमार हो गए थे। इसके बावजूद आज तक गांव में लोग शुद्ध पेयजल के लिए तरस रहे हैं। ग्रामीण जनपद स्तर से लेकर जिला स्तर तक और कलेक्टर की जनसुनवाई में आवेदन दे चुके हैं, लेकिन समस्या का निदान नहीं हुआ है। पीएचई विभाग और एसडीएम को पत्र लिखकर मामले की जानकारी दी गई है। इस मामले में पीएचई अधिकारी गगनदीन कुमरे का कहना है कि भानपुर गांव में हैंडपंप लगवाए गए हैं, लेकिन ज्यादा गर्मी के चलते कुछ हैंडपंप सूख गए हैं। इन गांवों में फिर से बोरिंग कराकर पानी की व्यवस्था की जाएगी।

कपास के कपड़ों से अब नहीं होगी एलर्जी

कॉटन एक प्राकृतिक उत्पाद है, जिसे खेती कर उगाया जाता है। कॉटन जिसे कपास के नाम से जाना जाता है, उससे कपड़ा तैयार किया जाता है। इस कपड़े से बने परिधान बाजारों में काफी महंगे बिकते हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं की जिस कॉटन से बने कपड़े हम पहनते हैं, वह कैमिकलयुक्त यानी इनॉर्गेनिक होते हैं। कई बार लोगों के शरीर में इन कपड़ों से एलर्जी हो जाती है, लेकिन अब मप्र के कृषि वैज्ञानिकों ने कपास के जैविक बीज तैयार किए हैं। जिनसे पूरी तरह ऑर्गेनिक (जैविक) बीज की दो किस्में तैयार की हैं। जिनसे मिलने वाले कपास से कभी किसी को एलर्जी नहीं होगी। ये पूरी तरह एलर्जी फ्री होंगे।

हर मौसम में कॉटन के कपड़े लोगों की पहली पसंद होते हैं। यही वजह है कि अलग-अलग क्षेत्रों के साथ टेक्सटाइल इंडस्ट्री में कपास की खासी डिमांड होती है। जिससे ना सिर्फ मप्र के किसानों को फायदा होता है, बल्कि मप्र में उगाया कपास विदेशों में भी निर्यात किया जाता है। बड़ी बात यह है कि खेत से लेकर भारतीय बाजार तक में मिलने वाला कपास इनॉर्गेनिक यानी रसायन प्रभावित होता है। जिससे ना सिर्फ कॉटन की गुणवत्ता कम होती है, बल्कि यह तमाम तरह की शारीरिक एलर्जी का कारक भी बनता है। पूरे मप्र में कपास का उत्पादन भी सिर्फ 7 जिलों में होता है। जिनमें प्रमुख रूप से खरगोन, धार, बड़वानी, खंडवा और बुरहानपुर में इसकी खेती होती है। जबकि अलीराजपुर और झाबुआ में भी कुछ किसान कपास की खेती करते हैं, लेकिन पिछले कुछ सालों में इन किसानों की रूचि कपास की खेती में कम होती जा रही है। जिसका असर है कि साल दर साल कपास की खेती का रकबा भी कम हो रहा है, क्योंकि एक ओर जहां कपास की फसल में लगने वाले कीट किसानों की मेहनत खराब कर रहे हैं, तो वहीं इन कीटों से बचाव के लिए इस्तेमाल होने वाले रासायनिक कीटनाशक और खादों से खेतों की मिट्टी में उर्वरकता कम हो रही है। जिसकी वजह से उत्पादन भी पहले की अपेक्षा घट रहा है।

किसानों की परेशानी को समझते हुए मप्र के राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने कपास की दो जैविक किस्में तैयार की हैं। जिन्हें आरवीजेके एसजीएफ-1 और आरवीजेके एसजीएफ-2 नाम दिया गया है। ये दोनों ही बीज ऑर्गेनिक कपास तैयार करेंगे। इनके साथ ही 3-4 वैराइटी अभी पाइपलाइन में भी हैं, जो जल्द तैयार होंगी। कृषि विश्वविद्यालय के कुलगुरु अरविंद कुमार शुक्ला ने बताया कि विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले खंडवा कृषि महाविद्यालय में मुख्य रूप से कॉटन (कपास) पर रिसर्च की जाती है। यहीं ऑर्गेनिक कॉटन की दो वैराइटी तैयार की गई हैं। राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. अरविंद शुक्ला के मुताबिक, बाजार में उपलब्ध इनॉर्गेनिक कॉटन में पेस्टिसाइड्स का उपयोग बहुत ज्यादा होता है। जिसकी वजह से ये रासायनिक कीटनाशक का असर पौधे के जरिए कॉटन में भी आ जाता है, और जो हमारे शरीर के लिए भी नुकसानदायक है। कई लोगों को अलग-अलग तरह से एलर्जी होती है और कई लोगों को उस कॉटन से बने कपड़े पहनने में कंफर्ट नहीं होता। ऐसे में यह निर्णय लिया गया कि विश्वविद्यालय नॉन-जीएम (नॉन जेनिटिकली मॉडिफाइड) वैराइटी को क्या ऑर्गेनिक रूप से पैदा कर सकते हैं। इस पर शोध किया जा रहा है। हमने दो वैराइटी तैयार भी कर ली है। इनसे पूरी तरह ऑर्गेनिक कॉटन ही तैयार होगा, क्योंकि मार्केट में भी ऑर्गेनिक कॉटन की काफी डिमांड है। खासकर विदेशी मार्केट्स में।

कुलगुरु ने बताया कि कॉटन की गुणवत्ता दो भागों में मापी जाती है। पहला तो इसके रेशों को देखा जाता है। इनॉर्गेनिक कॉटन में फाइबर लेंथ 28एमएम होती है। जबकि ऑर्गेनिक कॉटन की लंबाई 29.5 मिमी तक होती है। इसके अलावा ऑर्गेनिक कपास की स्ट्रेंथ इनॉर्गेनिक कॉटन से ज्यादा होती है। कपास में स्ट्रेंथ टैक्स इकाई में मापा जाता है। इनॉर्गेनिक कॉटन की स्ट्रेंथ जहां 25-26 टैक्स होती है। वहीं ऑर्गेनिक कपास की स्ट्रेंथ 28-30 पर टैक्स होती है। इन दोनों ही दशा में ऑर्गेनिक कॉटन की गुणवत्ता इनॉर्गेनिक कपास से बेहतर है, इसलिए इसे बढ़ावा दिया जा रहा है। ग्वालियर कृषि विश्वविद्यालय के कुलगुरु की मानें तो ऑर्गेनिक कॉटन की खेती किसानों के लिए बेहद लाभदायक होने वाली है, क्योंकि विदेश में ऑर्गेनिक कॉटन की अच्छी खासी डिमांड है। लोगों के पास ज्यादा पैसा है, तो वे ऑर्गेनिक कॉटन से बने कपड़े खरीदने में दिलचस्पी रखते हैं।

● **हर्ष सक्सेना**

घट रहा खेती का रकबा

मप्र में इंदौर मालवा के कुछ जिलों में ही कॉटन का उत्पाद होता है। उस क्षेत्र को कॉटन बेल्ट ही कहा जाता है। इन जिलों में पहले कपास की फसल का रकबा करीब 6.5 लाख हेक्टेयर हुआ करता था, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में किसानों ने कॉटन की खेती से दूरी बनाना शुरू कर दिया है। 2024 में ही इन 7 जिलों में करीब 544 हेक्टेयर भूमि पर ही कपास की फसल लगाई गई थी। जो पूर्व से लगभग एक लाख हेक्टेयर कम रही है। जिसका मतलब है किसान का अब कपास से मोह भंग होने लगा है। इन परिस्थितियों पर जब कुलगुरु से सवाल किया गया तो उनका कहना है कि किसानों के लिए कपास की फसल बेहद चिंताजनक होती जा रही है। जिसकी एक बड़ी वजह है, इस फसल में एक ऐसा कीड़ा लग जाता है, जो पूरी फसल को नष्ट कर देता है। इसे पिंक बॉलवर्म कहते हैं। यह कीड़ा कपास के पौधे में लगने वाले कॉटन बॉल को खा लेता है। ऐसे में पूरी फसल के लिए मेहनत करने के बाद किसान की फसल में जब कॉटन बॉल बनती है, तो वह कीड़ा उसे खाकर समाप्त कर देता है। इससे बचने के लिए किसान खेतों में भारी मात्रा में पेस्टीसाइड का उपयोग करता है, लेकिन पिंक बॉलवर्म कुछ ही समय में दवा का रेसिस्टेंट बना लेता है। इस पर कीटनाशक दवा का कोई असर नहीं होता। साथ ही ज्यादा कीटनाशकों के उपयोग की वजह से मिट्टी में मौजूद सूक्ष्म जीवाणुओं को नुकसान पहुंचता है। इससे मिट्टी की उर्वरकता में कमी आने लगती है। जिससे फसल की उपज पर भी असर पड़ता है। प्रोडक्शन कम हो जाता है और किसान को नुकसान होता है। यह एक बड़ी वजह है कि समय के साथ-साथ किसानों में कपास की खेती को लेकर रूचि कम होती जा रही है।

मप्र बन रहा है लव जिहाद की नर्सरी

मप्र में हाल के दिनों में हिंदू युवतियों और महिलाओं के साथ रेप और ब्लैकमेलिंग के संगठित मामले सामने आ रहे हैं। न केवल राजधानी भोपाल, बल्कि छोटे शहरों में भी एक ही पैटर्न पर आधारित रेप के मामले उजागर हो रहे हैं। सभी मामलों में आरोपियों के मुस्लिम और पीड़िताओं के हिंदू होने के कारण इन घटनाओं को कथित तौर पर लव जिहाद गैंग का नाम दिया जा रहा है, जिससे प्रदेश की सियासत गरमा गई है। पिछले एक महीने में मुस्लिम युवकों द्वारा हिंदू युवतियों को प्रेम जाल में फंसाकर उनका शारीरिक शोषण करने और अंतरंग पलों के वीडियो बनाकर ब्लैकमेल करने के मामले सामने आए हैं। पुलिस ने अब तक विभिन्न शहरों में 12 से अधिक आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

भोपाल में एक 35 साल की तलाकशुदा महिला, जो अपने 14 वर्षीय बेटे के साथ रहती है, ने कमला नगर थाने में मुस्लिम युवक नदीम के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई। महिला ने आरोप लगाया कि नदीम ने शादी का झांसा देकर कई बार उसका रेप किया और बाद में धर्म परिवर्तन का दबाव बनाया। उसने कहा कि नदीम ने शादी के लिए शर्त रखी कि उसे और उसके बेटे को इस्लाम कबूल करना होगा, साथ ही बेटे का खतना करवाने का दबाव भी डाला। पीड़िता ने बताया कि 12 साल पहले उसका तलाक हो गया था और वह तब से अपने बेटे के साथ रहती है। तीन साल पहले उसकी मुलाकात नदीम से हुई, जो उससे बात करने की कोशिश करता था। नदीम ने कहा कि वह परेशानी में उसका साथ देगा। इसके बाद नदीम का उसके घर आना-जाना शुरू हो गया। जून 2022 में नदीम ने उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए और शादी का वादा किया। कई बार संबंध बनने के बाद भी जब वह शादी की बात करती, नदीम टालमटोल करता। बाद में पता चला कि नदीम शादीशुदा है। उसने बताया कि उसकी शादी परिवार की मर्जी के खिलाफ हुई थी और वह अब अपनी पत्नी के साथ नहीं रहता। 13 मई 2025 को नदीम ने बेटे की अनुपस्थिति में महिला के घर आकर जबरन रेप किया और उसके फोटो-वीडियो बना लिए। उसने कहा कि शादी के लिए उसे और उसके बेटे को इस्लाम कबूल करना होगा और बेटे का खतना करवाना होगा। जब महिला ने इनकार किया, तो नदीम ने फोटो-वीडियो वायरल करने की धमकी दी। उसने महिला को बुर्का पहनने, तिलक न लगाने, गुरुवार का व्रत न रखने और बिना बताए कहीं न जाने का दबाव डाला। बिना अनुमति बाहर जाने पर नदीम हिंसक होकर गाली-गलौज करता था। परेशान होकर और बेटे की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए महिला ने कमला नगर थाने में एफआईआर दर्ज कराई। पुलिस ने नदीम के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 69, 352(2) और मप्र धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम की धारा 3 व 5 के तहत मामला दर्ज किया है।

भोपाल के बागसेवनिया थाने में एक युवती ने फरहान नामक शख्स के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई, जिसके बाद संगठित गिरोह का खुलासा हुआ। पुलिस ने फरहान को गिरफ्तार किया और उसके मोबाइल की जांच में एक दर्जन से अधिक युवतियों के अश्लील वीडियो मिले, जिनमें वह रेप और मारपीट करता दिखा। अब तक पांच पीड़िताएं सामने आ चुकी हैं और पांच आरोपियों (फरहान, साहिल, अली, साद और नबील) को गिरफ्तार किया गया है, जबकि छठा आरोपी अबरार फरार है।

गिरोह का मास्टरमाइंड फरहान हिंदू युवतियों को प्रेम जाल में फंसाकर रेप करता और वीडियो बनाकर ब्लैकमेल करता। वह पीड़िताओं को अन्य युवतियों से दोस्ती करवाने का दबाव डालता। फरहान ने साहिल, अली, साद, नबील, अबरार और हामिद के साथ मिलकर गैंग बनाया। साहिल अशोक गार्डन में डांस क्लास चलाता था, जहां वह हिंदू युवतियों को फंसाकर रेप करता और वीडियो बनाकर फरहान को भेजता। अली ने भी एक छात्रा को प्रेम जाल में फंसाकर रेप किया और वीडियो फरहान को भेजा। साद मैकेनिक था और युवतियों को फरहान के कमरे तक लाने-ले जाने का काम करता, साथ ही उन्हें गांजे का नशा करवाता। नबील और अबरार अपना कमरा रेप के लिए उपलब्ध कराते थे। हामिद ने पिछले साल आत्महत्या कर ली, लेकिन पुलिस अब उसकी भूमिका की भी जांच कर रही है। गिरोह का हर सदस्य रेप के वीडियो बनाकर फरहान को भेजता, जो उन्हें ब्लैकमेलिंग के लिए इस्तेमाल करता। यह गैंग केवल हिंदू युवतियों को निशाना बनाता, खासकर उनको जो छोटे शहरों या गांवों से भोपाल पढ़ाई के लिए आई थीं। युवतियों को हुक्का लाउंज और पब में ले जाकर नशा करवाया जाता और फिर रेप किया जाता। पुलिस की पूछताछ में फरहान ने बेशर्मी से कहा कि उसे अपने कृत्यों का कोई पछतावा नहीं है और उसने हिंदू युवतियों के साथ संबंध बनाकर सवाब का काम किया। यदि उसे पकड़े जाने की जानकारी होती, तो वह वीडियो पहले ही वायरल कर देता। इस बयान पर भोपाल के भाजपा विधायक रामेश्वर शर्मा ने कहा- जो सवाब की बात करते हैं, उन्हें पता होना चाहिए कि आगे कब्रिस्तान ही मिलता है। मप्र में लव जिहाद और लैंड जिहाद को पनपने नहीं देंगे।

● **लोकेश शर्मा**

ब्रेनवॉश के आरोप में परिवार के लोग भी गिरफ्तार

भोपाल के टीटी नगर थाना क्षेत्र में भी ऐसा ही मामला सामने आया, जहां नाबालिग हिंदू छात्रा के साथ रेप हुआ। तत्कालीन टीटी नगर थाना प्रभारी सुधीर अरजरिया ने बताया कि बैरागढ़ की 16 वर्षीय छात्रा की जावेद नामक युवक से दोस्ती थी। दो महीने पहले जावेद उसे बाणगंगा झुग्गी में अपने भाई फैजान के घर ले गया, जहां फैजान की पत्नी जोया और शाहरुख मौजूद थे। शाहरुख ने छात्रा का नंबर लिया और मिलने का दबाव बनाया। बाद में जावेद ने उसे फिर से फैजान के घर ले जाकर शाहरुख के पास छोड़ दिया। शाहरुख ने नाबालिग के साथ रेप किया। यह सिलसिला कई दिनों तक चला। जब पीड़िता ने जावेद को बताया, तो उसने उसे चुप रहने को कहा। जोया और फैजान ने भी बदनामी का डर दिखाकर चुप रहने का दबाव बनाया। हिम्मत जुटाकर पीड़िता ने अपनी मां को सब बताया, जिसके बाद टीटी नगर थाने में एफआईआर दर्ज की गई। मामला श्यामला हिल्स थाने में स्थानांतरित कर दिया गया। पुलिस ने शाहरुख, जावेद, जोया और फैजान को रेप, पॉक्सो और आपराधिक साजिश के आरोप में गिरफ्तार किया।

> *संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वर्ष 2025 को अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इस वर्ष की थीम है- सहकारिता एक बेहतर दुनिया का निर्माण करती है। स्व से सब का भाव हो जाना ही सहकार है। भारतीय संस्कृति स्वयं से ऊपर उठकर हम की भावना रखना सिखाती है और इसी भावना से जन्म हुआ है सहकार का। सनातन संस्कृति में जब हम प्रार्थना करते हैं तो सर्वे भवन्तु सुखिनः की कामना करते हैं। सबके सुख और मंगल की यही कामना सहकारिता का मूल भाव है। हम लाभ से ज्यादा सेवा को महत्व देते हैं। एक से ज्यादा समूह को महत्व देते हैं। प्रतिस्पर्धा से ज्यादा परस्पर सहयोग को महत्व देते हैं और यही सहकारिता है।*

सहकारिता में नवाचार से नित नए आयाम गढ़ता मध्यप्रदेश

भारत का सहकारिता आंदोलन सांस्कृतिक और सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में गहराई से निहित है। यह आंदोलन समावेशी विकास, सामुदायिक सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास के लिए एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में विकसित हुआ है। सहकारिता मंत्रालय की स्थापना और इसकी नवीनतम पहलों के माध्यम से सरकार ने एक सहकारिता-संचालित मॉडल को बढ़ावा देने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की है, जो देश के हर कोने तक पहुंचेगा और समाज की मुख्य धारा से अलग पड़े समुदायों के लिए स्थायी आजीविका और वित्तीय समावेशन की सुविधा प्रदान करेगा।

सहकारी समितियों को पुनर्जीवित करने की दृढ़ प्रतिबद्धता के साथ केन्द्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह ने इस क्षेत्र को मजबूत और आधुनिक बनाने के उद्देश्य से एक व्यापक नीतिगत ढांचा, कानूनी सुधार और रणनीतिक पहल शुरू की। सरकार ने सहकारी समितियों के लिए व्यापार करने में आसानी, डिजिटलीकरण के माध्यम से पारदर्शिता सुनिश्चित करने और वंचित ग्रामीण समुदायों के लिए समावेशिता को बढ़ावा देने की अपनी पहल पर काफी जोर दिया है। केन्द्रीय मंत्री अमित शाह के नेतृत्व में भारत का सहकारिता आंदोलन एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। अपनी दूरदर्शी सोच को आधार बनाकर उन्होंने सहकारिता के लिए नई विचारधारा को जन्म दिया है। उनके नेतृत्व में सहकारिता मंत्रालय ने भारतीय सहकारी आंदोलन में उल्लेखनीय परिवर्तन किए हैं। प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (पैक्स) का विस्तार, पैक्स के लिए बेहतर प्रशासन और व्यापक समावेशिता, पैक्स को कम्प्यूटरीकृत करने एवं पैक्स को नाबार्ड से जोड़ने का काम किया है।

दुग्ध उत्पादक किसानों के साथ मध्यप्रदेश सरकार

डेयरी क्षेत्र विकसित करने के संकल्पों की सिद्धि के लिए प्रदेश में श्वेतक्रांति मिशन के अंतर्गत 2500 करोड़ रुपए के निवेश का लक्ष्य है। प्रदेश में निराश्रित गौवंश की समस्या के निराकरण के लिए स्वावलंबी गौशालाओं की स्थापना की नीति:2025 की स्वीकृति दी है। गौ-शालाओं को पशु चारे और आहार के लिए दी जाने वाली अनुदान राशि को भी 20 रुपए प्रति गौवंश प्रति दिवस से बढ़ाकर 40 रुपए प्रति गौवंश प्रति दिवस करने का निर्णय लिया गया है। मुख्यमंत्री पशुपालन विकास योजना अब डॉ. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना के नाम से जानी जाएगी। डॉ. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना अंतर्गत 25 दुधारू गाय अथवा भैंस की इकाई स्थापित करने का प्रावधान किया गया। प्रदेश की गौ शालाओं को हाइटेक बनाया जा रहा है। ग्वालियर स्थित आदर्श गौ-शाला में देश के पहले 100 टन क्षमता वाले सीएनजी प्लांट की स्थापना की गई है। भोपाल के बरखेड़ी-डोब में 10 हजार गौ-वंश क्षमता वाली हाइटेक गौ-शाला बनाई जा रही है। प्रदेश के सवा 2 लाख किसानों एवं दुग्ध उत्पादकों को सहकारिता के माध्यम से जोड़ा गया है। सरकार द्वारा दुग्ध सहकारी संघों के डेयरी प्रोडक्ट्स को मार्केट लिंकेज दिलाकर वैश्विक सप्लाई चेन से कनेक्ट करने की योजना पर कार्य किया जा रहा है। पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए नई योजना के तहत 25 या 25 से ज्यादा गायों का पालन करने वाले पशुपालकों को पशुपालन पर अनुदान दिया जाएगा।

नई श्वेत क्रांति की ओर अग्रसर मध्यप्रदेश

प्रदेश में सहकार से समृद्धि की पहल के तहत केन्द्रीय मंत्री अमित शाह की उपस्थिति में राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड और स्टेट डेयरी को-ऑपरेटिव फेडरेशन तथा फेडरेशन से संबद्ध दुग्ध संघों के बीच कोलेबोरेशन एग्रीमेंट हुआ। इस कोलेबोरेशन एग्रीमेंट के माध्यम से सहकारी डेयरी नेटवर्क को सशक्त बनाने का लक्ष्य है, जिससे दुग्ध उत्पादकों की आय में वृद्धि हो सके और सांची ब्रांड का उत्थान और विस्तार किया जा सके। यह नई श्वेत क्रांति की ओर प्रदेश का महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। इसका लाभ दुग्ध उत्पादकों और दुग्ध उपभोक्ताओं दोनों को मिलेगा। दुग्ध उत्पादक राज्यों में मध्यप्रदेश टॉप-थ्री में है, हमारे यहां देश का करीब 9 प्रतिशत दुग्ध-उत्पादन होता है। प्रदेश में रोजाना करीब 551 लाख किलोग्राम दूध का उत्पादन होता है, जिसमें से मध्यप्रदेश स्टेट को-ऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन और इससे जुड़े संघ करीब 10 लाख किलोग्राम दूध जमा करते हैं। मध्यप्रदेश देश का फूड बास्केट तो है ही, हममें डेयरी कैपिटल बनने की क्षमता भी है। देश का डेयरी कैपिटल बनने के लिए हमारे पास पर्याप्त संसाधन हैं। प्रदेश में सहकारी डेयरी नेटवर्क को हाइटेक बनाने के लिए एक डेयरी डेवलपमेंट प्लान तैयार करने की योजना है, जिसमें लगभग 1450 करोड़ रुपए का निवेश होगा। प्रदेश में औसत दुग्ध संकलन को दोगुना किया जाएगा, दुग्ध संकलन को 10 लाख किलो से बढ़ाकर 20 लाख किलो प्रतिदिन करने का प्रयास शुरू कर दिया गया है। प्रदेश में दुग्ध सहकारी समितियों की संख्या 6 हजार से बढ़ाकर 9 हजार की जाएगी। प्रदेश भर के 18 हजार गांवों के दुग्ध-उत्पादन से जुड़े किसान भाइयों को सहकारी डेयरी नेटवर्क से जोड़ेंगे। ग्राम स्तर पर दुग्ध शीतलीकरण की क्षमता विकसित करेंगे, औसत पैकेट दुग्ध विक्रय 7 लाख लीटर प्रतिदिन से बढ़ाकर 15 लाख लीटर प्रतिदिन करेंगे। मिल्क प्रोसेसिंग क्षमता बढ़ाने के लिए नए हाइटेक संयंत्र स्थापित किए जाएंगे, जिससे दुग्ध संकलन और दुग्ध विक्रय में वृद्धि हो सके। सभी दुग्ध संघों का व्यवसाय 1944 करोड़ से बढ़ाकर 3500 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष किया जाएगा। एनडीडीबी द्वारा एमपीसीडीएफ एवं दुग्ध ?संघों के प्रबंधन, संचालन, तकनीकी सहयोग, नवीन प्रसंस्करण एवं अन्य अधोसंरचनाएं विकसित करेंगे। एनडीडीबी द्वारा दुग्ध सहकारी समितियों के सभी सदस्यों, सचिवों, प्रबंधन समिति के सदस्यों और दुग्ध संघों के कर्मचारियों को स्वच्छ और गुणवत्तायुक्त दुग्ध उत्पादन के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा।

प्रदेश में डेयरी गतिविधियों के लिए त्रि-स्तरीय सहकारी संस्थाओं का गठन कर, ग्रामीण दुग्ध सहकारी समितियां, सहकारी दुग्ध संघ और राज्य स्तर पर एमपीसीडीएफ (मध्यप्रदेश स्टेट कोआपरेटिव डेयरी फेडरेशन लिमिटेड) की स्थापना की गई। ये दुग्ध सहकारी समितियां किसानों से दूध संग्रह, गोवंश के कृत्रिम गर्भाधान, संतुलित पशु आहार, तकनीकी पशु प्रबंधन, उन्नत चारा बीज, पशु उपचार और टीकाकरण जैसी सुविधाएं देने की जिम्मेदारी निभा रही हैं।

- फीचर

सनातन संस्कृति में पति-पत्नी का संबंध 7 जन्मों का माना जाता है। लेकिन इंटरनेट की दुनिया में शादी से पहले के अनैतिक संबंध शादी के बाद पति, पत्नी और मर्डर की कहानी बन रहे हैं। मप्र की व्यावसायिक राजधानी इंदौर में राजा रघुवंशी हत्याकांड हो या ऐसे करीब दर्जनभर मामले, सभी में अवैध संबंधों के कारण रिश्तों की मर्डर मिस्ट्री सामने आ रही है। जिस औरत को लक्ष्मी बनाकर लोग घर ला रहे हैं, वही औरत कहीं पति तो कहीं पूरे परिवार की हत्या का कारण बन रही है।

● राजेंद्र आगाल

जिस दांपत्य रिश्ते को 7 जन्मों का पवित्र बंधन कहा व माना जाता है। वही रिश्ता आज मुस्कान और सोनम सरीखी युवतियों के कारण कलंकित हो रहा है। इसे रिश्तों में जुड़ाव की कमी कहें या आईटी के इस दौर में बदलती संस्कृति को इसका कारण मानें। वजह जो भी है, मगर इतना जरूर है कि हमारी संस्कृति व सभ्यता पर आईटी (तकनीकी) संस्कृति हावी हो रही है। यही वजह है कि शादीशुदा किसी अन्य से प्यार (एक्स्ट्रा मैरिटल रिलेशन) के फेर में पड़कर अपने पतियों की हत्या करा रही हैं। इन दिनों आए दिन ऐसी खबरें आती हैं कि पति ने पत्नी को मार दिया। पत्नी ने पति को तरबूज में जहर मिलाकर खिला दिया। बेटी ने प्रेमी के लिए पूरे परिवार को मार डाला। पिता ने दूसरी शादी करने के लिए बच्चों का गला घोंटा। यदि अपनों का ही विश्वास न रहे तो आखिर हम दुनिया में किसका भरोसा कर सकते हैं। रिश्तों की मर्डर मिस्ट्री ने भारतीय समाज को डरा दिया है।

विश्वास का खात्मा

पति को मारकर उसके शव को नीले ड्रम में सीमेंट से ढकने वाली मेरठ की मुस्कान का केस ठंडा भी नहीं हुआ था कि इंदौर की सोनम का मामला सामने आ गया। कौन अपराधी है और कौन नहीं, अदालत किसे कितनी सजा देगी, यह वक्त बताएगा, लेकिन यह सोचकर दहशत होती है कि हनीमून के लिए मेघालय गई सोनम ने अपने पति राजा रघुवंशी को मरवा दिया। ससुराल वालों के साथ खुश रहना, विवाह के समय नाचना-कूदना और मन में किसी और योजना का चलना। क्या सचमुच उसने राज कुशवाहा जैसे फटेहाल प्रेमी के लिए यह सब किया या किसी और के लिए? राजा की हत्या का राज खुलने के बाद कुछ लोग एनसीआरबी रिपोर्ट का हवाला देकर कह रहे हैं कि 90 प्रतिशत से अधिक अपराध पुरुष करते हैं और स्त्रियां तो मात्र छह-आठ प्रतिशत ही ऐसा करती हैं। क्या यह कहा जा रहा है कि जब तक 92-94 प्रतिशत स्त्रियां भी अपराध न करने लगें, तब तक इन घटनाओं की अनदेखी की जाए?

अपराध को अपराध की तरह देखना चाहिए। स्त्री-पुरुष नहीं करना चाहिए। इसीलिए लंबे अर्से से मांग हो रही है कि स्त्रियों संबंधी कानूनों को लैंगिक भेद से मुक्त किया जाए। स्त्री या पुरुष, जो भी अपराधी हो, उसे सजा मिले। कई महिलाएं टीवी डिबेट्स में कह रही हैं कि सोनम का मीडिया ट्रायल किया जा रहा है, जबकि वह राजा के घर वालों से बात कर रहा है तो सोनम और राज कुशवाहा के घर वालों से भी। जब किसी पुरुष के आरोपित बनते ही उसके परिवार वालों को रात-दिन दिखाया जाता है, तब ऐसे विचार क्यों प्रस्फुटित नहीं होते? दुष्कर्म के मामलों में महिलाओं के तो नाम बताना, चित्र दिखाना अपराध है, लेकिन पुरुषों के चित्र हर वक्त दिखाए जाते हैं। अगर वे निर्दोष साबित हो जाते हैं तो क्या उनकी और उनके परिवार की खोई प्रतिष्ठा वापस मिलती है? अनेक बार तो नौकरी तक

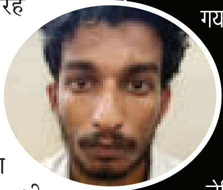

राजा रघुवंशी मर्डर केस में अब तक क्या हुआ?

20 मई: राजा रघुवंशी और उनकी पत्नी सोनम मप्र के इंदौर से हनीमून मनाने के लिए असम के गुवाहाटी के लिए रवाना हुए।

23 मई: जोड़े ने एक मंदिर में दर्शन किए, फिर चेरापूंजी के पास ओसारा हिल्स पहुंचे। दोपहर में परिजनों से बातचीत के बाद उनका मोबाइल बंद हो गया।

24-25 मई: उनके परिजन लगातार कॉल करते रहे, लेकिन जवाब नहीं मिला। बाद में पता चला कि किराए पर ली गई गाड़ी लावारिस हालत में मिली है।

26 मई: राजा और सोनम के परिजन शिलांग पहुंचे और दोनों के लापता होने की जानकारी मीडिया में आई और पूरे देश में वायरल हुई।

28 मई: जोड़ा जिस होमस्टे में रुका था, पुलिस को उसकी तलाशी में उनके बैग मिले। खोजी कुत्तों की मदद से अभियान तेज किया गया।

29-30 मई: लगातार बारिश के कारण तलाशी अभियान बाधित रहा। पुलिस इस पूरे मामले को अब तक एक हादसे के रूप में देखती रही।

31 मई - 1 जून: जिस स्कूटी से राजा और सोनम निकले थे, उसकी जीपीएस लोकेशन के आसपास जांच के बाद भी कोई सुराग नहीं मिला।

2 जून: राजा का शव खाई में मिला, जो सड़ चुका था। शव को ड्रोन और खोजी कुत्तों ने ढूंढा। इसे पोस्टमार्टम के लिए शवगृह में रखवाया गया।

9 जून: सोनम रघुवंशी को आत्मसमर्पण के बाद गाजीपुर से गिरफ्तार किया गया।

11 जून: सोनम और अन्य आरोपियों को शिलांग की स्थानीय अदालत में पेश किया गया। जहां से उन्हें 8 दिन की रिमांड पर भेजा गया।

चली जाती है। इस प्रसंग में 1988 का चर्चित इंदु अरोड़ा-अजीत सेठ कांड याद आता है। हरीश से विवाहित इंदु के अजीत से संबंध थे। उन्हें लगता था कि उनके संबंधों में इंदु के दो छोटे बच्चे रोड़ा बन रहे हैं। दोनों ने मिलकर बच्चों पर मिट्टी का तेल छिड़का और आग लगा दी। उस समय इस घटना पर भी लोगों में काफी आक्रोश जागा। जब उन्हें जेल भेजा गया तो वहां कैदियों ने उनकी पिटाई की।

मेघालय की घटना से राजा रघुवंशी और सोनम के साथ उन चार लड़कों के परिवार भी तबाह हुए, जिन्हें हत्या के आरोप में पकड़ा गया है। जो किसी अपराध को अंजाम देते हैं, उन्हें यह क्यों नहीं लगता कि वे पकड़े भी जाएंगे या यह सोचते हैं कि कुछ भी करके बच निकलेंगे? पुरुषों के अधिकारों के लिए काम करने वाली संस्था एकम न्याय फाउंडेशन की दीपिका भारद्वाज ने दो फिल्में बनाई हैं-मार्टरस ऑफ मैरिज और इंडियाज संस। वह पुरुष आयोग बनाने की मांग करती रही हैं। उन्होंने पत्नियों द्वारा पति की हत्या और पुरुषों की आत्महत्या के मामलों का अध्ययन किया था। इसके अनुसार देशभर में जनवरी 2023 से लेकर दिसंबर तक 306 पतियों और कई मामलों में उनके परिवार वालों की हत्या पत्नियों द्वारा की गई। इनमें से कुछ हत्याओं को आत्महत्या बताने की कोशिश की गई।

एक तरफ महिलाओं के बारे में कहा जाता है कि वे बहुत सशक्त हो रही हैं, लेकिन दूसरी तरफ जैसे ही कोई स्त्री अपराध करती है, उसके बचाव में कहा जाने लगता है कि वह तो ऐसा कर ही नहीं सकती। क्यों नहीं कर सकती? आखिर वे स्त्रियां कौन हैं, जो जघन्य अपराध कर रही हैं? किसी अपराध को साबित करने के लिए पुलिस के सामने भी कितनी चुनौतियां होती हैं। राजा की हत्या के मामले में मेघालय पुलिस को आलोचना का सामना करना पड़ा। वह जिस तरह बिना किसी प्रतिक्रिया के मामले की छानबीन करती रही, वह तारीफ के काबिल है।

प्रतिक्रिया न देने पर सोनम और राजा के परिवार वाले उसकी लगातार आलोचना कर रहे थे। मेघालय में ऐसे अपराध न के बराबर होते हैं। वहां भी इस घटना पर लोगों में गुस्सा है। लोग दोनों परिवारों से माफी की मांग कर रहे हैं। कुछ कह रहे हैं कि पूर्वोत्तर को बेवजह बदनाम किया गया। लोग पूछ रहे हैं कि यदि सोनम को राजा पसंद ही नहीं था तो उससे विवाह क्यों किया? यदि उसे इसकी चिंता थी कि अगर वह मना करेगी तो हृदय रोगी पिता का क्या होगा, तो क्या अब वह बहुत खुश होंगे?

मध्यप्रदेश के स्कूलों में हो रहा बच्चों का बौद्धिक विकास

स्कूली शिक्षा बच्चे के विकास में एक महत्वपूर्ण चरण है, जो उनके भविष्य को आकार देने वाली आधारभूत ज्ञान और कौशल प्रदान करती है। आमतौर पर गणित, विज्ञान, भाषा, कला और सामाजिक अध्ययन जैसे विभिन्न विषयों में औपचारिक निर्देश शामिल होते हैं। सिखाने के इस चरण का उद्देश्य बौद्धिक क्षमताओं, भावनात्मक विकास और सामाजिक कौशल को विकसित करना है। प्रदेश में इन्हीं उद्देश्यों को लेकर लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

स्कूली शिक्षा अनुशासन, टीमवर्क और समस्या समाधान जैसे मूल्यों को भी बढ़ावा देती है, जिससे बच्चों को अकादमिक और वास्तविक दुनिया की चुनौतियों से निपटने में मदद मिलती है। प्रदेश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति वर्ष 2020 का क्रियान्वयन भी प्रभावी तरीके से किया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश अग्रणी राज्यों की श्रेणी में आता है।

मप्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और स्कूल शिक्षा मंत्री उदय प्रताप सिंह के कुशल मार्गदर्शन में नवाचारों के साथ कई प्रभावी कदम उठाये गये हैं। इसका प्रभाव यह हुआ है कि प्रदेश के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण एवं सर्वांगीण शिक्षा प्रदान की जा रही है। शैक्षणिक सत्र 2024-25 में स्कूल शिक्षा विभाग ने महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। प्रदेश में स्कूल शिक्षा विभाग के 2023-24 में कुल बजट का 92.12 प्रतिशत उपयोग किया गया था, जबकि वर्ष 2024-25 में प्रावधान किये गये बजट का 95.12 प्रतिशत व्यय किया गया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 3.48 प्रतिशत अधिक है। बजट में प्रावधान की गई राशि का उपयोग बच्चों की शिक्षा की बेहतरी के लिये किया गया।

प्रदेश में माध्यमिक शिक्षा मंडल बोर्ड की कक्षा 10वीं बोर्ड परीक्षाओं में 76 प्रतिशत बच्चे उत्तीर्ण हुए, जो पिछले वर्ष के 58 प्रतिशत से 18 प्रतिशत अधिक है। यह वृद्धि बच्चों में बढ़ी शैक्षणिक योग्यता को दर्शाती है। इसी तरह 12वीं बोर्ड परीक्षा का परिणाम पिछले वर्ष में 64 प्रतिशत की तुलना में इस वर्ष 74 प्रतिशत आया है, जो 10 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है। प्रदेश के 53 प्रतिशत बच्चों ने कक्षा 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। प्रदेश में बोर्ड परीक्षाएं शून्य प्रतिशत पेपर लीक के साथ संपन्न हुई।

प्रदेश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन के लिये स्कूल शिक्षा मंत्री उदय प्रताप सिंह की अध्यक्षता में राज्य स्तरीय टास्क फोर्स का गठन किया गया है। नई शिक्षा नीति में विभिन्न समितियों का गठन भी किया गया है। इन समितियों की अनुशंसा के अनुसार मध्यप्रदेश में स्कूल शिक्षा के गुणात्मक सुधार के लिये लगातार प्रयास किये जा रहे हैं। भारतीय मूल्यों, संस्कृति आधारित शिक्षा के लिये स्कूल शिक्षा विभाग ने कई उल्लेखनीय कदम उठाये हैं। प्रदेश की शालाओं में गुरूओं को सम्मान प्रदान करने के लिये गुरू पूर्णिमा उत्सव का आयोजन, जन्माष्टमी पर्व, गीता महोत्सव और मकर संक्रांति पर्व विद्यालयों में आयोजित किये गये। कक्षा 11 और 12 में कला और संस्कृति पर आधारित प्रोजेक्ट जोड़े जा चुके हैं। स्थानीय भाषाओं गोंडी, सहरिया, बारेली, निमाड़ी, बुंदेली, बघेली में तैयार की गई त्रिभाषा पुस्तकें 21 जिलों में 89 जनजातीय विकासखंडों में उपलब्ध कराई गई हैं। प्रदेश के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को उनकी शैक्षणिक गुणवत्ता सुधार के लिये अनेक योजनाओं का फायदा दिलाया जा रहा है। नि:शुल्क पाठ्यक्रम योजना में शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत करीब 82 लाख बच्चों को पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध कराई गई हैं। सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले कक्षा 1 से 8 तक के करीब 60 लाख बच्चों को डीबीटी के माध्यम से राशि प्रदान की गई। कक्षा 1 से 12वीं में अध्ययनरत एससी, एसटी, ओबीसी और बीपीएल के 66 लाख बच्चों को विगत वर्ष छात्रवृत्ति के रूप में 332 करोड़ रुपए की राशि उनके बैंक खातों में ट्रांसफर की गई है। नि:शुल्क साइकिल वितरण योजना में कक्षा 6 और 9 के करीब 4 लाख 75 हजार बच्चों को घर से स्कूल तक आने जाने के लिये साइकिल वितरित की गई हैं। प्रदेश में कक्षा 12वीं की बोर्ड परीक्षा में 75 प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित करने वाले 89 हजार 801 प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को करीब 224 करोड़ 25 लाख रूपये की राशि प्रोत्साहन स्वरूप टेबलेट क्रय करने के लिये उनके बैंक खातों में अंतरित की गई है।

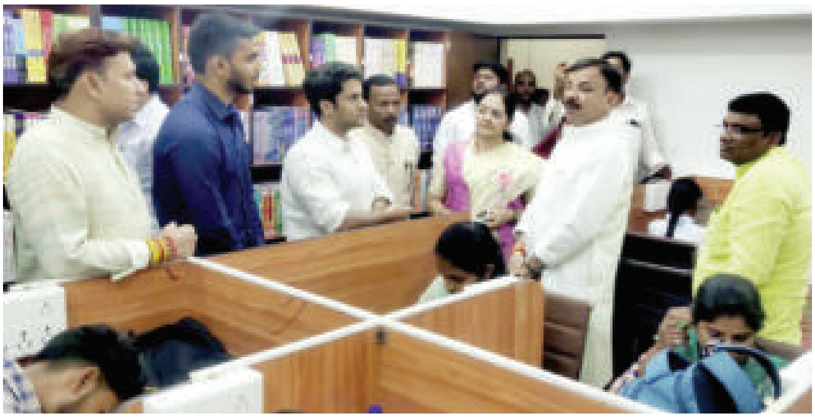

सरकारी स्कूलों में बच्चों को पूर्व प्राथमिक शिक्षा से जोड़ने के लिये 4 हजार 473 सरकारी स्कूलों में पूर्व प्राथमिक कक्षाएं शुरू की गई हैं। इन कक्षाओं में 3 वर्ष 6 वर्ष तक के आयुवर्ग के 96 हजार बच्चों को पिछले वर्ष दाखिला कराया गया था। इन कक्षाओं के बच्चों को पढ़ाने के लिये 117 मास्टर ट्रेनर्स और 4473 शासकीय शिक्षकों को प्रशिक्षण दिलाया गया। प्रदेश के सरकारी स्कूलों में कक्षा 1 एवं 2 के छात्रों को बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान प्रभावी तरीके से देने के लिये मिशन अंकुर संचालित किया जा रहा है। इस मिशन के अंतर्गत बच्चों को अभ्यास के लिये नि:शुल्क वर्कबुक का वितरण किया गया। अंकुर मिशन में अभिभावकों की भागीदारी सुनिश्चित करने और बच्चों के शारीरिक, मानसिक और भाषा विकास की क्षमताओं का आंकलन करने के लिये सभी स्कूलों में फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी (एफएलएन) मेलों का आयोजन किया गया। शिक्षकों को अपनी कक्षा अनुभवों, ज्ञान, कौशल एवं नवाचारों को अपने शिक्षक समुदाय से साझा करने के लिये कक्षा एक से 8 तक पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिये जन शिक्षा केन्द्र स्तर पर शैक्षिक संवादों का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के सर्वांगीण विकास पर जोर देती है। इस मंशा को पूरा करने के लिये स्कूल शिक्षा विभाग हर वर्ष अनुगूंज का आयोजन करती है। प्रदेश में वर्ष 2024 में इस कार्यक्रम को राज्य स्तर के साथ संभाग स्तर पर करने का निर्णय लिया गया। इनके आयोजन से प्रदेश के प्रतिभाशाली बच्चों को अपनी कला को अभिव्यक्त करने का अवसर मिला। प्रदेश में पिछले वर्ष अनुगूंज का छठवां वार्षिक आयोजन था।

- फीचर

वह नाते-रिश्तेदारों, आसपास वालों का सामना कैसे कर रहे होंगे? आखिर हमारे समाज में भरोसे में इतनी कमी (ट्रस्ट डेफिसिट) कैसे हो गई। इन दिनों आए दिन ऐसी खबरें आती हैं कि पति ने पत्नी को मार दिया। पत्नी ने पति को तरबूज में जहर मिलाकर खिला दिया। बेटी ने प्रेमी के लिए पूरे परिवार को मार डाला। पिता ने दूसरी शादी करने के लिए बच्चों का गला घोंटा। यदि अपनों का ही विश्वास न रहे तो आखिर हम दुनिया में किसका भरोसा कर सकते हैं। क्या यह कहने से समस्या हल हो सकती है कि विवाह संस्था सड़-गल चुकी है और अब इससे निजात पा लेनी चाहिए। पा लीजिए, लेकिन पति को पार्टनर कहने भर से स्थितियां नहीं बदल जातीं। कोई भी संबंध हो, उसमें विश्वास और धैर्य ही काम आते हैं, जिनका लगातार लोप हो रहा है।

सोनम रघुवंशी से पहले भी ऐसे ही चौंकाने वाले मामले सामने आ चुके हैं, जहां अपनों ने ही रिश्तों का गला घोंट दिया है। हम आपको ऐसी ही कुछ घटनाएं बता रहे हैं, जहां पत्नी या प्रेमिका ने ही अपने साथी का कत्ल कर दिया या करवा दिया।

नीले ड्रम का खौफ

इस साल मार्च में उप्र के मेरठ से एक दिल दहला देने वाली वारदात सामने आई थी। यहां एक महिला ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर पति को बेरहमी से मार डाला था। इतना ही नहीं सबूत छिपाने के लिए महिला ने पति के शव के 15 टुकड़े किए और फिर इन्हें ड्रम में रखकर उसके ऊपर सीमेंट से चिनाई करा दी थी। घटना के बाद महिला अपने प्रेमी के साथ शिमला घूमने चली गई थी। वहां से लौटने के बाद महिला ने ही खुद इस हत्याकांड का खुलासा किया। पुलिस ने मामले में महिला और उसके प्रेमी को गिरफ्तार कर लिया था।

दरअसल, मेरठ में लंदन से लौटे सौरभ कुमार (29) की तीन मार्च की रात पत्नी मुस्कान रस्तोगी ने प्रेमी साहिल शुक्ला के साथ मिलकर हत्या कर दी थी। आरोपियों ने शव के 15 टुकड़े ड्रम में रखकर ऊपर से चिनाई कर दी। मुस्कान अपनी 5 साल की बेटी को मायके में छोड़कर प्रेमी के साथ 4 मार्च की शाम को हिमाचल घूमने चली गई। वापस लौटकर मुस्कान ने अपने पिता को सौरभ की हत्या करने की जानकारी दी।

16 दिन, 120 पुलिसकर्मी और 3 राज्य... ऐसे सुलझी राजा रघुवंशी मर्डर मिस्ट्री

मप्र के इंदौर के कारोबारी राजा रघुवंशी मर्डर केस को सुलझाने का मेघालय पुलिस ने दावा किया है। पुलिस का कहना है इस हत्याकांड की मास्टरमाइंड कोई और नहीं बल्कि राजा की पत्नी सोनम रघुवंशी है। उसने अपने प्रेमी राज कुशवाहा और चार सुपारी किलर की मदद से इस साजिश को अंजाम दिया है। पुलिस की टीम सभी आरोपियों को ट्रांजिट रिमांड पर शिलांग ले जा चुकी है, जहां उनसे आगे पूछताछ की जा रही है। मेघालय पुलिस ने पूरे ऑपरेशन का नाम ऑपरेशन हनीमून रखा था। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के मुताबिक, ऑपरेशन हनीमून के तहत सभी आरोपियों को पकड़ा गया है। इस केस की जांच के लिए गठित एसआईटी में 120 पुलिसकर्मी शामिल हैं। इनमें एसपी और डीएसपी रैंक के कई अधिकारी शामिल हैं। इन टीमों की अगुवाई ईस्ट खासी हिल्स के पुलिस अधीक्षक विवेक सियेम और एसपी (सिटी) हर्बर्ट पिनियाड खारकोंगोर कर रहे हैं। इस जांच में एनडीआरएफ, एसडीआरएफ जेंटिया हिल्स माउंटेनियरिंग क्लब और स्निफर डॉग्स की टीम भी शामिल रही है। राजा रघुवंशी और सोनम रघुवंशी की शादी 11 मई को हुई थी। इसके बाद सोनम के बनाए प्लान के तहत दोनों मेघालय हनीमून के लिए पहुंचे। 23 मई को दोनों अचानक लापता हो गए। 2 जून को राजा का शव सोहरा (चेरापूंजी) के वीसावडोंग जलप्रपात के पास एक गहरी खाई से बरामद हुआ। शव की स्थिति और पास में मिले खून से सने दाओ (चाकू) और रेनकोट ने हत्या की पुष्टि की थी। राजा के दाहिने हाथ पर बने राजा टैटू और कलाई पर मौजूद वाटरप्रूफ स्मार्टवॉच से शव की पहचान हुई।

मुंह दिखाई के पैसों से मर्डर

इसी साल मार्च में औरैया जिले में शातिर दिमाग के चलते हाइड्रा चालक की नई नवेली पत्नी प्रगति और उसके प्रेमी अनुराग ने इंसानियत को शर्मसार करने वाली घटना को अंजाम दे डाला। उसने शादी के 14 दिन बाद पति दिलीप को मरवा डाला। उसका प्रेमी बेरोजगार था, लेकिन वह प्रेमी के साथ ही रहना चाहती थी। घरवाले राजी नहीं थे। ऐसे में प्रेमी के साथ जीवन बिताने में परेशानी न हो। इसके लिए प्रगति ने रसूखदार लड़के हाइड्रा चालक दिलीप से शादी की। उसका इरादा था कि पति की हत्या कर उसकी संपत्ति लेकर प्रेमी के साथ खुशी से जिंदगी जिएगी। वह सोच रही थी कि शादी के कुछ ही दिन बाद जब वह विधवा हो जाएगी तो दूसरी शादी अपने प्रेमी से कर लेगी। विधवा होने के नाते परिजन भी इसमें सहयोग करेंगे, लेकिन सुपारी की रकम के लेनदेन को लेकर पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया।

हत्या कर सांप से डसवाया

इसके बाद इसी साल अप्रैल में मेरठ के बहसूमा में शहर के सौरभ हत्याकांड जैसा ही एक और मामला सामने आया है। यहां पत्नी ने पति की प्रेमी संग मिलकर न सिर्फ हत्या की, बल्कि पकड़ी न जा सके इसके लिए सांप के काटने की कहानी गढ़ दी। पुलिस ने जांच-पड़ताल के बाद पूरे मामले का खुलासा कर दिया। अकरबपुर सादात गांव के अमित कश्यप उर्फ मिक्की (25) की मौत वाइपर सांप के काटने से नहीं हुई थी। अमित की हत्या उसकी पत्नी रविता ने प्रेमी अमरदीप के साथ मिलकर की थी। दोनों आरोपियों ने गला दबाकर पहले हत्या की और फिर वारदात को हादसा दर्शाने के लिए जहरीला सांप उसके बिस्तर पर छोड़ दिया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में दम घुटने से मौत की पुष्टि के बाद पुलिस ने दोनों आरोपियों को हिरासत में लेकर चौंकाने वाला खुलासा किया है।

पूरे परिवार को दी मौत

अमरोहा के बावनखेड़ी गांव के लोगों के जहन में आज भी 14-15 अप्रैल 2008 की काली रात का खौफ है। दरअसल, इस रात अमरोहा में गांव के लोगों ने जो देखा, वह किसी सदमे से कम

नहीं था। यहां एक ही परिवार के सात सदस्यों का बेरहमी से कत्ल कर दिया गया था। इस परिवार की सिर्फ एक महिला शबनम जिंदा बची थी, जिसने गांववालों को बुलाया तो हैवानियत देखकर हर किसी के बदन में सिहरन दौड़ गई। पुलिस ने जब इस मामले में जांच की तो पता चला कि हत्या से पहले सभी मृतकों को कोई नशीला पदार्थ दिया गया था जिसके कारण सभी बेहोश हो गए थे। ऐसे में पुलिस का सीधा शक शबनम पर गया, क्योंकि उसने सोने से पहले रात में सभी के लिए चाय बनाई थी। बाद में जब इस घटना की परतें खुलती हैं तो सामने आता है कि हत्या किसी और ने नहीं बल्कि शबनम ने ही अपने प्रेमी के साथ मिलकर की थी। शबनम ने अपने परिवार के सात सदस्यों को कुल्हाड़ी से वार कर मौत के घाट उतार दिया था। जिन लोगों की हत्या की गई, उनमें एक 8 महीने का बच्चा भी शामिल था। शबनम ने प्रेमी सलीम के साथ मिलकर अपने पिता मास्टर शौकत, मां हाशमी, भाई अनीस और राशिद, भाभी अंजुम, भतीजे अर्श और फुफेरी बहन राबिया का कुल्हाड़ी से वार कर कत्ल कर दिया था। इस घटना को अब 17 साल गुजर चुके हैं। लेकिन अब यहां गांववाले अपनी बेटियों का नाम इस घटना को अंजाम देने वाली शबनम के नाम पर नहीं रखते। शबनम और सलीम को फांसी की सजा सुनाई जा चुकी है। शबनम का डेथ वारंट जारी होना बाकी है।

दोस्त के किए 300 टुकड़े

मुंबई स्थित एक प्रोडक्शन हाउस में काम करने वाले नीरज ग्रोवर की मई 2008 में लाश मिली थी। नीरज की लाश के कई टुकड़े कर दिए गए थे और उन टुकड़ों को तीन कूड़ा रखने वाले थैलों में भरकर उनमें आग लगा दी गई थी। इस मामले में नीरज की महिला मित्र मारिया सुसाइराज ने पुलिस के पास उनके गुमशुदा होने की शिकायत की थी। इसके बाद कई हफ्तों तक नीरज की कोई खबर नहीं मिली। पूरे शहर में पोस्टर चिपकवाए गए, लेकिन पुलिस को सफलता नहीं मिली। हालांकि, जब पुलिस ने अपनी जांच आगे बढ़ाई और नीरज के मोबाइल लोकेशन के जरिए उसे खोजने की कोशिश की तो पूरा मामला खुलकर सामने आ गया। बाद में मारिया की बिल्डिंग के सिक्योरिटी गार्ड से पूछताछ हुई तो सामने आया कि 7 मई 2008 की रात को मारिया और उनके बॉयफ्रेंड एमएल जेरोम कुछ बैग्स में भारी सामान ले जाते दिखे थे। पुलिस ने इस जानकारी के आधार पर मारिया सुसाइराज को गिरफ्तार किया। मारिया ने गिरफ्तारी के बाद पूरे मामले की पोल खोल दी। सामने आया कि नीरज की हत्या मारिया के प्रेमी लेफ्टिनेंट एमएल जेरोम ने की थी। दरअसल, जेरोम को शक था कि नीरज और मारिया के बीच अवैध संबंध थे। मारिया खुद अभिनय की दुनिया में काम तलाशने के लिए कुछ समय से ग्रोवर के अपार्टमेंट भी जा रही थी। इस बीच 7 मई 2008 की रात जब मारिया ने नीरज को मिलने के लिए बुलाया तो अचानक उनके फ्लैट पर जेरोम भी पहुंच गया। इसके बाद जेरोम ने कथित तौर पर गुस्से में आकर नीरज की हत्या कर दी। इतना ही नहीं जेरोम और मारिया ने इस घटना के बाद जिस कमरे में लाश पड़ी थी, वहीं कई बार शारीरिक संबंध भी बनाए।

एक महिला की हत्या भी करना चाहती थी सोनम

शिलांग के सदर थाने के लॉकअप में बंद सोनम समेत सभी आरोपी ज्यादातर समय शांत रहते हैं। मेघालय पुलिस इंदौर के ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी की हत्या के पांचों आरोपियों से लगातार पूछताछ कर रही है। शिलांग के सदर थाने के लॉकअप में बंद आरोपियों की आपसी बातचीत पर पुलिसकर्मी नजर रख रहे हैं। हालांकि, ये लोग ज्यादातर समय शांत ही रहते हैं। सूत्रों के मुताबिक, सोनम समेत सभी आरोपियों ने पुलिस से नॉर्थ इंडियन भोजन की मांग की। पुलिस ने उन्हें खाना मंगाकर दिया। इससे पहले पुलिस ने बताया था कि राजा की हत्या का मास्टरमाइंड उसकी पत्नी सोनम का कथित प्रेमी राज कुशवाह है। उसने राजा और सोनम की शादी के 11 दिन पहले मर्डर का प्लान बना लिया था। यह खुलासा पुलिस पूछताछ में आरोपियों ने ही किया है। शिलांग एसपी विवेक सियेम ने बताया था कि तीन आरोपी विशाल चौहान, आकाश राजपूत और आनंद कुर्मी 19 मई को ही शिलांग पहुंच गए थे। राजा की हत्या के बाद सोनम 25 मई को इंदौर पहुंची। यहां वह 7 जून तक रही। इसके बाद राज के साथ ही गाजीपुर गई थी। शिलांग पुलिस ने खुलासा किया कि आरोपियों ने एक महिला की भी हत्या की प्लानिंग की थी। राजा की हत्या के बाद उस महिला को मारकर वहीं स्कूटी के साथ जलाने या नदी में बहाने की योजना बनाई गई थी, ताकि वे दिखा सकें कि सोनम भी मार दी गई है। यह भी पता चला है कि हत्या के लिए राज ने जो प्लानिंग की थी, उसमें इंदौर से आरोपियों को मोबाइल और 50 हजार रुपए के साथ सोनम के लिए काले रंग का बुर्का भी दिया था। यह बुर्का विशाल उसके लिए शिलांग ले गया था। एक्टिवा छोड़ने के बाद सोनम इसी बुर्के में टैक्सी में बैठकर सिलीगुड़ी भागी थी।

बहनें बन गईं सीरियल किलर

रेणुका शिंदे और सीमा गावित को 1990 से 1996 के बीच कोल्हापुर जिले और उसके आसपास के इलाके में 13 बच्चों का अपहरण करने और उनमें से 9 की हत्या करने के लिए दोषी ठहराया गया था। बताया जाता है कि बच्चों के अपहरण और हत्या में दोनों की मां अंजनाबाई भी शामिल थी। हालांकि, मुकदमा शुरू होने से पहले ही साल 1997 में मां की मौत हो गई थी। हालांकि, यह कहानी इतनी भी सीधी नहीं थी। भीड़भाड़ वाले इलाकों में चोरी, चेन स्नेचिंग, पर्स छीनने की घटनाओं को अंजाम देने वाली रेणुका और सीमा देखते ही देखते सीरियल किलर बन गईं। दोनों बहनें कथित तौर पर कई वर्षों तक अपनी मां के साथ मिलकर मासूम बच्चों की किडनैपिंग कर उनसे अपराध करवाती थीं और मकसद पूरा हो जाने पर उनकी बेरहमी से हत्या कर देती थीं। मां-बेटियों की इस तिकड़ी ने 1990 से 1996 के बीच 35 से ज्यादा बच्चों को किडनैप किया। इनमें ज्यादातर नवजात या 12 साल से कम उम्र के बच्चे थे। इन लोगों के खिलाफ 100 से ज्यादा केस दर्ज हुए थे।

पकड़े जाने तक तीनों महिलाएं पुख्ता तौर पर 15 बच्चों की किडनैपिंग और 9 बच्चों की हत्या को अंजाम दे चुकी थीं। मां अंजनाबाई गावित की पकड़े जाने के एक साल बाद ही मौत हो गई। उनके पकड़े जाने के बाद एक

बड़ा खुलासा यह हुआ कि तीनों बच्चों के अपहरण के बाद अपना राज न खुल जाए, इस डर से उनकी हत्या कर देती थीं। एक मौके पर तो तीनों ने 18 महीने के बच्चे की बस स्टैंड पर लोहे की रॉड पर सिर पटक-पटककर हत्या कर दी थी। इतना ही नहीं इसके बाद तीनों ने वड़ा पाव खाकर पार्टी की। एक और चौंकाने वाले घटनाक्रम में तीनों ने ढाई साल की बच्ची को मारकर उसका शव बैग में भरा। इसके बाद तीनों बैग लेकर सिनेमा हॉल पहुंचीं और पूरी फिल्म देखी। लौटते समय उन्होंने बच्ची का शव रास्ते में फेंक दिया। पकड़े जाने के बाद दोनों ने बच्चों के शरीर पर डिजाइनर घाव बनाने की बात भी कबूली। पकड़े जाने के बाद दोनों बहनों को साल 2001 में कोर्ट ने फांसी की सजा सुनाई थी। दोनों ने मामले में राष्ट्रपति के पास दया याचिका लगाई थी। हालांकि, राष्ट्रपति ने इसे खारिज कर दिया। बाद में दोनों महिलाएं सजा कम कराने के लिए बॉम्बे हाईकोर्ट पहुंची थीं, जहां उनकी फांसी की सजा को उम्रकैद में बदल दिया गया।

6 लोगों को मार डाला

केरल के कोझिकोड़ इलाके में एक जगह है कूड़थई। यहां रहने वाला थॉमस परिवार क्षेत्र के काफी संपन्न परिवारों में से था। 2002 में इस परिवार के रॉय थॉमस की शादी जॉली जोसेफ नाम की महिला से की गई थी। यूं तो जॉली घरेलू कामों में अच्छी थी, लेकिन पहले शादी के लिए पढ़ाई को लेकर बोले गए झूठ और फिर उन फर्जी डिग्रियों और नौकरी के लिए और झूठों के मायाजाल ने जॉली को चौतरफा घेरना शुरू कर दिया। इन झूठों को छिपाने के लिए ही उसने एक-एक करके सवाल पूछने वाले परिवारवालों को मारना शुरू कर दिया। यहीं से शुरू हुआ था मौतों का एक ऐसा खेल, जो अगले 14 साल तक चला। इस दौरान परिवार और इससे जुड़े 6 लोगों की हत्या हुई। हत्या के लिए कोई चाकू या बंदूक नहीं, बल्कि साइनाइड का इस्तेमाल हुआ, जो कि सबसे खतरनाक जहर का काम करता है। मर्डर को छिपाने के लिए जॉली को ज्यादा मेहनत भी नहीं करनी पड़ी। उसने सभी को विश्वास में लेते हुए इन मौतों को प्राकृतिक बताते हुए उनका अंतिम संस्कार कराना भी जारी रखा। हालांकि, घटनाक्रम कुछ ऐसा हुआ कि एक के बाद एक जॉली जोसेफ के झूठ की परतें खुलने लगीं और फिर खुलासा हुआ उसके द्वारा की गई हत्याओं का। जॉली जोसेफ पर जिन-जिन लोगों की हत्या करने का आरोप तय हुआ, उनमें सास अनम्मा (2002), ससुर टॉम थॉमस (2008), पति रॉय थॉमस (2011), सास के भाई मैथ्यू मंजाड़ियल (2014), पति के चचेरे भाई साजू थॉमस की दो साल की बेटी (2014) और साजू की पत्नी सिली सरखरियास (2016) की मौत का मामला शामिल है। इन सभी हत्याओं में एक चीज कॉमन थी। सभी हत्याओं में सायनाइड का इस्तेमाल किया गया था।

शादी के 15 दिन बाद महिला ने कर दी पति की हत्या

राजा रघुवंशी हनीमून मर्डर केस ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया है। ऐसे ही एक झकझोर देने वाली घटना महाराष्ट्र से सामने आई है। महाराष्ट्र में एक महिला ने अपने पति की कुल्हाड़ी से हत्या कर दी, जब वह सो रहा था। यह घटना शादी के महज तीन हफ्ते बाद हुई है। पुलिस अधिकारियों ने इस घटना की जानकारी देते हुए बताया कि यह घटना 10 जून की रात को हुई, जब नवविवाहित जोड़े के बीच झगड़ा हुआ था। पुलिस के मुताबिक, इस कपल की शादी 23 मई को महाराष्ट्र के सांगली जिले में हुई थी। 10 जून की रात दोनों के बीच जमकर झगड़ा हुआ, जिसके बाद पीड़ित अनिल लोखंडे आधी रात के आसपास सोने चला गया। अधिकारियों ने बताया कि गुस्से में आकर महिला राधिका लोखंडे ने कुल्हाड़ी उठाई और अपने पति के सिर पर वार कर दिया। उसकी मौके पर ही मौत हो गई। अधिकारियों ने आगे बताया कि पुलिस ने राधिका को गिरफ्तार कर लिया और उसे दो दिन की पुलिस हिरासत में भेज दिया। उसके खिलाफ बीएनएस (हत्या) की धारा 103 (1) के तहत मामला दर्ज किया गया है। शुरुआती जांच में हत्या के पीछे पारिवारिक कलह का संकेत सामने आया है। हालांकि, अधिकारी आगे की जांच कर रहे हैं।

जहर देकर प्रेमी को मार डाला

भारत के सबसे चर्चित हत्याकांड के हालिया मामलों में शेरोन राज हत्याकांड का नाम शामिल है। दरअसल, यहां तिरुवनंतपुरम में जिला अदालत ने एक 24 वर्षीय युवती को अपने बॉयफ्रेंड की हत्या के मामले में फांसी की सजा सुनाई। युवती ने अक्टूबर 2022 में अपने बॉयफ्रेंड शेरोन राज को आयुर्वेदिक टॉनिक में जहर मिलाकर दिया था, जिसे पीकर उसकी मौत हो गई थी। दरअसल, युवती ग्रीष्मा की शादी कहीं और तय हो गई थी। इसलिए उसने प्रेमी से पीछा छुड़ाने के लिए उसकी जान ले ली। उसके चाचा निर्मला कुमारण नायर को हत्या में साथ देने और सबूत मिटाने का दोषी पाया गया, उसे 3 साल की सजा सुनाई गई। जबकि युवती की मां को सबूतों के अभाव में बरी कर दिया गया। इस मामले में अभियोजन पक्ष की तरफ से दिए गए सबूतों और गवाहों ने मामले की परतें खोलकर रख दीं। बताया गया कि ग्रीष्मा की शादी नागरकोइल के रहने वाले आर्मी के एक जवान से तय हो गई थी। इस वजह से वह अपने प्रेमी शेरोन राज को रिश्ता तोड़ने के लिए कह रही थी, लेकिन शेरोन रिश्ता खत्म नहीं करना चाहता था।

14 अक्टूबर 2022 को ग्रीष्मा ने शेरोन राज को कन्याकुमारी के रामवर्मनचिराई स्थित अपने घर बुलाया। वहां ग्रीष्मा ने शेरोन को आयुर्वेदिक टॉनिक में पैराक्वाट (खतरनाक हर्बीसाइड) मिलाकर जहर दे दिया। जैसे ही शेरोन ग्रीष्मा के घर से निकला तो उसकी तबीयत बिगड़ने लगी और वो लगातार उल्टी करने लगा। घर वालों से उसे तुरंत हॉस्पिटल में भर्ती करवाया। 23 साल के शेरोन की 11 दिन बाद 25 अक्टूबर को अस्पताल में मौत हो गई। इस घटना में चौंकाने वाला खुलासा हुआ। इसके मुताबिक, ग्रीष्मा ने पहले भी कई बार शेरोन को मारने की कोशिश की थी। ग्रीष्मा ने शेरोन को जूस में पैरासिटामॉल की गोलियां मिलाकर दीं। शेरोन ने जूस पिया तो उसे कड़वा लगा और उसने थूक दिया। जिससे इसका असर नहीं हुआ था।

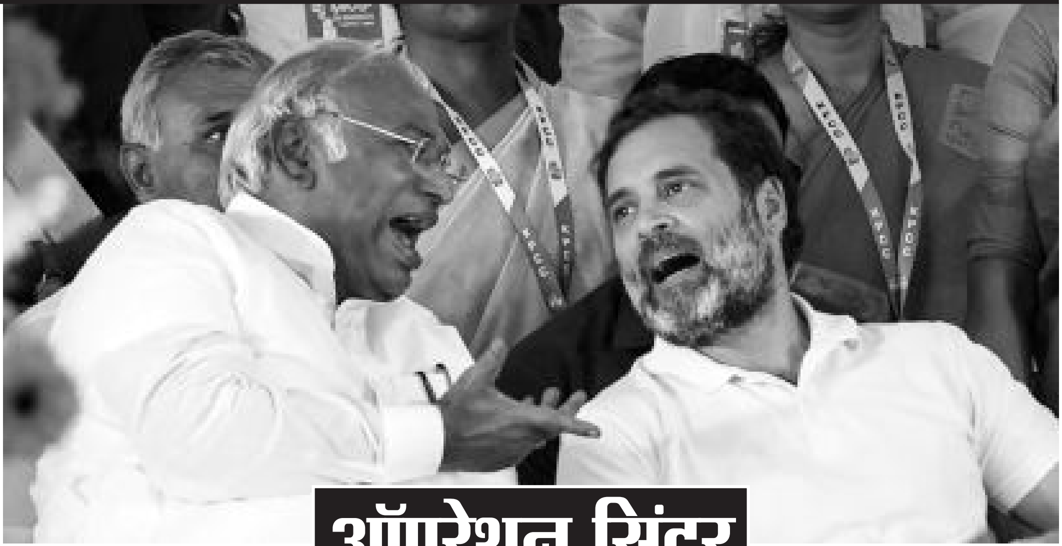

> ऑपरेशन सिंदूर पर शुरू हुई राजनीति गहरी होती जा रही है। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और ममता बनर्जी खुलकर सामने हैं, जबकि भाजपा की तरफ से रास्ता दिखाने के बावजूद सतर्कता बरतने की कोशिश हो रही है। अगला पड़ाव संसद है, जहां विपक्ष चाहता है कि बिहार चुनाव से पहले बहस हो, और पूरा देश भी देखे। भाजपा और विपक्ष के बीच सड़क पर शुरू हुई ऑपरेशन सिंदूर पर राजनीति अब संसद पहुंचने वाली है।

ऑपरेशन सिंदूर पर राजनीति...

ऑपरेशन सिंदूर पर राजनीति तो बहुत पहले ही शुरू हो चुकी थी, अब उसके नए-नए रंग दिखाई दे रहे हैं। करीब-करीब वैसे ही जैसे उरी हमले के बाद हुई सर्जिकल स्ट्राइक को लेकर हुआ था, और 2019 के आम चुनाव से पहले पुलवामा हमले के बाद बालाकोट एयरस्ट्राइक पर, और वही रवायत नए तरीके से बिहार चुनाव से पहले नजर आ रही है। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी तो खुलकर खेलने लगे हैं, लेकिन भाजपा में अभी वैसी आक्रामकता नहीं देखने को मिली है जैसी पुलवामा हमले के बाद देखी गई थी। विपक्ष को कठघरे में खड़ा करने की कोशिश तो शुरू से ही है, लेकिन डर ये है कि कहीं लेने के देने न पड़ जाए। अयोध्या आंदोलन के जरिये केंद्र की सत्ता तक पहुंच जाने वाली भाजपा को राम मंदिर उद्घाटन के बाद अयोध्या की हार से बहुत बड़ा सबक मिला है। और, यही वजह है कि ऑपरेशन सिंदूर से पहले ही भाजपा जाति जनगणना के लिए भी तैयार हो गई है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पश्चिम बंगाल दौरे के कुछ ही देर बाद ममता बनर्जी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाकर खूब खरी-खोटी सुनाई थी और टेलीप्रॉम्पटर के साथ बहस करने, और तत्काल प्रभाव से विधानसभा का चुनाव तक करा लेने की चुनौती दी थी। भोपाल पहुंचे राहुल गांधी के भाषण में भी वही तेवर और अंदाज नजर आया। राहुल गांधी को गुस्सा तो मप्र के कांग्रेस नेताओं पर भी था, लेकिन फूटा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ। सीजफायर के प्रसंग में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का जिक्र करते हुए राहुल गांधी ने कहा, ट्रंप का एक फोन आया और नरेंद्रजी तुरंत सरेंडर हो गए... इतिहास गवाह है यही भाजपा-आरएसएस का कैरेक्टर है... ये हमेशा झुकते हैं।

और प्रसंग को 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध से जोड़कर राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री मोदी की पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से तुलना करते हुए कहा, आपको वो समय याद होगा जब कोई फोन नहीं आया था, बल्कि सेवंथ फ्लीट आई थी, लेकिन इंदिरा जी ने साफ-साफ बोल दिया, मुझे जो करना है, मैं करूंगी। फिर संघ और सावरकर से आजादी की कड़ियों को जोड़ते हुए बोले, यही फर्क है... इनका चरित्र ऐसा है... आजादी के समय से इनकी सरेंडर वाली चिट्ठी लिखने की आदत रही है... जरा-सा दबाव पड़ता है, तो ये लोग सरेंडर कर देते हैं... कांग्रेस पार्टी सरेंडर नहीं करती... गांधीजी, नेहरूजी, सरदार पटेल जैसे लोग सरेंडर करने वाले नहीं, बल्कि सुपरपावर से लड़ने वाले लोग थे।

संवैधानिक संस्थाओं के प्रति सम्मान घटा

देश में संविधान और संवैधानिक संस्थाओं के प्रति सम्मान घटा है। दुख की बात है कि कभी-कभी संवैधानिक संस्थाएं भी अपनी-अपनी अस्मिता के लिए झगड़ती दिखती हैं। राजनीति अपनी संस्कृति से दूर होती है, तो ऐसा ही होता है। दलतंत्र को संयम और अनुशासन में रखने का काम सामाजिक नवजागरण से ही संभव है। आपातकाल के दौरान चले आंदोलन ने संवैधानिक संस्थाओं की गरिमा को बहाल किया। अपने विचार के पक्ष में समर्थन जुटाना लोकतांत्रिक अधिकार है, लेकिन वोट के लिए किसी भी सीमा तक जाना चिंताजनक है। राष्ट्रजीवन के आदर्शों एवं निहित स्वार्थी मूल्यों में टकराव स्वाभाविक है। सजग राष्ट्रभक्त इतिहास से सीख लेते हैं। राष्ट्रहित में समाज को जागरूक करते हैं। जो समाज ऐसा नहीं करते, वे जड़ हो जाते हैं और जो ऐसा करते हैं वे इतिहास के मार्गनिर्माता कहे जाते हैं। राष्ट्रजीवन के अनेक मुद्दे जनअभियान से ही हल किए जा सकते हैं। दलतंत्र से ऐसी समस्याओं के समाधान की अपेक्षा नहीं की जा सकती। सभी दलों को मिलकर जातिवाद, संप्रदायवाद आदि के विरुद्ध अभियान चलाने की आवश्यकता है, लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है। जिन समस्याओं का समाधान राजनीति नहीं कर सकती, उनका सजग और एकजुट समाज कर सकता है। बशर्ते राजनीतिक दल समाज को सजग करें। समाज को जागरूक करने और उसमें उसके कर्तव्य के निर्वहन का भाव जगाने का अभियान चलाकर हर तरह की समस्याओं का आसानी से समाधान संभव है, मगर आज की राजनीति सामाजिक जागरूकता लाने का कोई ठोस जतन नहीं करती।

पिछले हफ्ते पश्चिम बंगाल के अलीपुरद्वार में प्रधानमंत्री मोदी ने केंद्र सरकार और भाजपा की उपलब्धियों के बीच ऑपरेशन सिंदूर का भी जोरशोर से जिक्र किया, और ममता बनर्जी की सरकार में भ्रष्टाचार पर हमला भी बोला। पलटवार में ममता बनर्जी ने ऑपरेशन सिंदूर की तर्ज पर ऑपरेशन बंगाल चलाए जाने की बात की और बोलीं- प्रधानमंत्री मोदी ऐसे बात कर रहे हैं, जैसे हर महिला के पति हों... वो अपनी पत्नी को सिंदूर क्यों नहीं देते? लेकिन, लगे हाथ ममता बनर्जी ने एक छोटा सा डिस्क्लेमर भी दे दिया, मैं इस संबंध में बात नहीं करना चाहती, लेकिन आपने मुझे बोलने के लिए मजबूर कर दिया।

मोदी के बाद बंगाल पहुंचे केंद्रीय मंत्री अमित शाह ने भी पहलगाम अटैक और ऑपरेशन सिंदूर की तरफ ध्यान खींचते हुए लोगों से कहा, जब भारतीय सेना ने हमले का बदला लिया, तो ममता बनर्जी और उनके नेताओं ने फर्जी टिप्पणियां कर ऑपरेशन सिंदूर का अपमान किया। उन्होंने अपील की, बंगाल की जनता को ममता बनर्जी को सिंदूर की ताकत दिखानी चाहिए। सवाल ये है कि क्या ऑपरेशन सिंदूर पर राजनीति के लिए राहुल गांधी और ममता बनर्जी जैसे नेता ही जिम्मेदार हैं, क्या भाजपा खुद विपक्षी नेताओं को राजनीति की ऐसी राह नहीं दिखा रही है। पहलगाम आतंकी हमले के बाद प्रधानमंत्री मोदी सीधे बिहार पहुंचते हैं, आतंकवादियों को कल्पना से भी बड़ी सजा देने और मिट्टी में मिला देने की घोषणा करते हैं। जब बिहार में चुनाव होने वाले हों, तो सवाल क्यों नहीं उठेंगे? जब विपक्ष सवाल उठाता है, तो अगला दौरा नए तरीके से प्लान किया जाता है। दोबारा सीधे बिहार जाने से पहले प्रधानमंत्री मोदी का दौरा राजस्थान, गुजरात और बंगाल में होता है, जहां केंद्र की भाजपा सरकार की तमाम उपलब्धियों के बीच ऑपरेशन सिंदूर का जोर देकर जिक्र किया जाता है।

भाजपा की तरफ से ये कोशिश जरूर होती है कि विपक्ष को खुली छूट न मिले, और इसके लिए सर्वदलीय बैठकें बुलाई जाती हैं, सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल विदेश दौरे पर भेजे जाते हैं, विपक्ष थोड़ी नाराजगी के बाद मान जाता है, और शिद्दत से शामिल भी होता है। विपक्ष की तरफ से जल्दी ही साफ भी कर दिया जाता है कि वो पाकिस्तान के खिलाफ सरकार का साथ देगा, लेकिन भाजपा को सेना के शौर्य का क्रेडिट नहीं लेने देगा। भाजपा विजय शाह जैसे नेताओं से भी परेशान तो होती है, लेकिन कर्नल सोफिया कुरैशी पर टिप्पणी से मचे बवाल के बावजूद कार्रवाई करने से परहेज करती है।

राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी चुनौतियों के इस संवेदनशील समय में भी दलतंत्र के बीच राष्ट्रीय प्रश्नों पर एकता नहीं है। आरोप-प्रत्यारोप जारी हैं। राजनीति के माध्यम से समाज को जगाकर राष्ट्र भाव भरने का काम प्राय: बंद है। राजनीति का उद्देश्य वोटबैंक जुटाना ही दिखाई पड़ रहा है। अजीब स्थिति है। आमजनों में राष्ट्रभक्ति का ज्वार है, लेकिन दलतंत्र में राष्ट्रीय महत्व के प्रश्नों पर भी सहमति नहीं है। यह तब है जब भारत के सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल पाकिस्तान की असलियत बताने के लिए दुनिया के प्रमुख देश जा रहे हैं। इस पर भी प्रश्न उठ रहे हैं। इससे वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य निराशा पैदा करने का काम कर रहा है। याद रहे कि राजनीति ही सारी समस्याओं का समाधान नहीं होती। समय-समय पर सामाजिक पुनर्जागरण भी अनिवार्य होते हैं। सचेत राष्ट्रभक्त शाश्वत मूल्यों और आदर्शों के लिए जागरूकता पैदा करते रहे हैं। भारत की संस्कृति और राष्ट्रभाव का विकास इसी निरंतरता में हुआ है।

वस्तुत: कोई भी समाज व्यवस्था स्वयं पूर्ण नहीं होती और न ही राजनीति। संस्कृति राष्ट्रभाव का संवर्धन करती है और संविधान राजव्यवस्था का मार्गदर्शी होता है। विश्व के सभी समाजों में अंतर्विरोध रहे हैं और आज भी हैं। यूरोपीय समाज में एक समय घोर अंधकार था। अंधविश्वास जोर पर था। सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने 13वीं सदी से पुनर्जागरण का काम लंबे समय तक जारी रखा। पुनर्जागरण से यूरोपीय समाज और दृष्टिकोण में आधारभूत परिवर्तन आए थे। भारत का स्वाधीनता संग्राम अपने ढंग का दुनिया का सबसे बड़ा राष्ट्रीय आंदोलन था। यह संघर्ष लंबा चला था। सत्ता परिवर्तन ही इस आंदोलन का लक्ष्य नहीं था। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान लाखों लोगों का उत्पीड़न हुआ था। लेखक-विचारक और सामाजिक कार्यकर्ता उत्पीड़ित किए गए। तब सत्ता प्राप्ति की प्रबल आशा नहीं थी, लेकिन आंदोलन राष्ट्रीय स्वाभिमान, स्वदेशी और स्वराष्ट्र भाव से जुड़ा था।

● विपिन कंधारी

अपने ही नेताओं की आलोचना

राजनीतिक क्षेत्र में मूल्यों का अवमूल्यन हुआ है, लोकहित की तुलना में निजी एवं दलहित सर्वोपरि हो गया है। केवल वोट हितैषी राजनीति से सामाजिक परिवर्तन का काम सही तरह संभव नहीं है। सामाजिक जागरण का काम सतत प्रवाही होना चाहिए और यह काम राजनीतिक दलों को करना चाहिए। यदि जन जागरण का काम रुकता है तो दुर्गति शुरू हो जाती है। और लोकतंत्र की परिभाषा-वोट द्वारा, वोट के लिए, वोट जुटाने का उद्योग बन जाती है। आमतौर पर अपने ही नेता की आलोचना गुटबाजी, उसके बढ़ते कद या फिर नेतृत्व की उससे नाराजगी के चलते की जाती है। सलमान खुर्शीद कांग्रेस के ऐसे नेता नहीं हैं, लेकिन उन्हें भी नहीं बख्शा गया। अपने देश में दूसरे दलों और उनके नेताओं पर सही-गलत आरोप लगाने में कोई समस्या नहीं होती, लेकिन इसका भी एक समय होता है। सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल में शामिल भाजपा सांसद निशिकांत दुबे विश्व में भारत की बात कहने से ज्यादा जोर एक्स पोस्ट के जरिये कांग्रेस पर हमला करने में दे रहे हैं। हैरानी है कि सरकार और भाजपा की ओर से कोई उनसे यह क्यों नहीं कह रहा कि दुबे जी, जरा थम जाएं, देश लौटकर कांग्रेस का कच्चा-चिट्ठा खोलिएगा और अभी उस पर ध्यान दें, जिसके लिए विदेश गए हैं। हर राजनीतिक दल और नेता के अपने-अपने राजनीतिक हित होते हैं और वे अपने वोटबैंक की अतिरिक्त चिंता करते हैं। इसमें हर्ज नहीं, लेकिन कभी-कभी ऐसे अवसर आते हैं, जब देश हित को ही सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए। इसका परिचय सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडलों में शामिल कई विपक्षी नेता शानदार तरीके से दे रहे हैं।

थरूर-कांग्रेस के रिश्तों में दरार

कांग्रेस पार्टी ने एक समय शशि थरूर को वैश्विक कूटनीति में सर्वोच्च पद दिलाने की कोशिश की थी। अब कांग्रेस केंद्र सरकार द्वारा ऑपरेशन सिंदूर के तहत दुनिया की राजधानियों का दौरा करने वाले प्रतिनिधिमंडल में उन्हें शामिल करने से निराश हुई। लेकिन शशि थरूर जहां गए वहां भारत का मान बढ़ाकर आए। आज कांग्रेस भले ही उन्हें अछूत की तरह देख रही है, लेकिन उन्होंने भारतीयों के दिल में अपनी जगह बना ली है।

कांग्रेस सांसद शशि थरूर द्वारा भारत की 2016 की सर्जिकल स्ट्राइक को पहली करार देने पर कांग्रेस के भीतर ही तीखी आलोचना हो रही है, क्योंकि यह पार्टी के उस रुख के खिलाफ है कि ऐसी स्ट्राइक यूपीए के समय में भी हुई थीं। हालांकि, उनके निर्वाचन क्षेत्र तिरुवनंतपुरम में इस बयान ने अलग ही तरह की चर्चा को जन्म दिया है। मतदाता और स्थानीय कांग्रेस नेता थरूर की गतिविधियों को बारीकी से देख रहे हैं, कुछ लोग उनकी व्यक्तिगत लोकप्रियता की सराहना करते हैं, तो कुछ इसे उनके राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं और राजनीतिक बदलाव का संकेत मान रहे हैं।

पनामा में पिछले सप्ताह दिए गए थरूर के बयान की कांग्रेस नेता उदित राज ने कड़ी आलोचना की। उन्होंने आरोप लगाया कि थरूर पार्टी के स्वर्णिम इतिहास को नीचा दिखा रहे हैं और उकसाने वाले अंदाज में कहा कि उन्हें भाजपा का सुपर प्रवक्ता बन जाना चाहिए। जहां थरूर कांग्रेस और मोदी सरकार की राजनीतिक कूटनीति पर अपनी राय से हलचल मचाते रहते हैं, वहीं उनके तिरुवनंतपुरम लोकसभा क्षेत्र के मतदाता (जहां से वह लगातार चार बार जीत चुके हैं) अब भी उनकी स्वतंत्र आवाज को पसंद करते हैं। लेकिन स्थानीय कांग्रेस इकाई में कुछ नेता सतर्क हैं और उन्हें पार्टी लाइन से अलग बोलने पर चिंता है। एक स्थानीय कांग्रेस पदाधिकारी ने कहा कि थरूर द्वारा मोदी की लगातार तारीफ ने जनता के बीच पार्टी की स्थिति को मुश्किल में डाल दिया है। वह लगातार मोदी की तारीफ नहीं कर सकते। इससे हमें यहां लोगों के सवालों का सामना करना पड़ता है कि हमारे नेता भाजपा की तारीफ क्यों कर रहे हैं।

इस पदाधिकारी ने यह भी जोड़ा कि पार्टी ने अपने सदस्यों को थरूर के खिलाफ सार्वजनिक रूप से न बोलने का निर्देश दिया है, लेकिन थरूर को भी सोच-समझकर बोलना चाहिए और किसी भी असहमति को पार्टी के अंदर उठाना चाहिए। पिछले कुछ हफ्तों में पार्टी की आधिकारिक राय से सार्वजनिक रूप से अलग बोलने के कारण थरूर का कांग्रेस पार्टी से रिश्ता थोड़ा खट्टा हो गया है। उन्होंने कई बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ की है। हाल ही में पहलगाम आतंकी हमले के बाद की गई सैन्य कार्रवाई ऑपरेशन सिंदूर को उन्होंने अच्छा बताया। हालांकि, कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने तुरंत स्पष्ट कर दिया कि थरूर के बयान पार्टी की राय को नहीं दर्शाते।

बाद में रमेश ने यह भी आरोप लगाया कि पाकिस्तान के साथ संघर्ष पर भारत की स्थिति समझाने के लिए थरूर को ऑल पार्टी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने के लिए चुनकर केंद्र सरकार ने सस्ती राजनीति की है, जबकि कांग्रेस ने चार सांसदों के नाम दिए थे, और केंद्र ने थरूर को ही चुना जबकि उनका नाम सूची में नहीं था। इससे पहले भी, अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से 2 दिन की मुलाकात को लेकर थरूर पार्टी नेताओं की आलोचना का शिकार हो चुके हैं। उन्होंने कहा था कि यह भारत के लिए अच्छा है, जबकि उनके सहयोगी अमेरिका से भारतीयों की वापसी को लेकर सरकार पर हमलावर थे। हालांकि, कुछ स्थानीय नाराजगी उनके लंबे समय तक क्षेत्र में अनुपस्थित रहने को लेकर है, लेकिन ऊपर बताए गए पदाधिकारी ने यह माना कि थरूर अभी भी जीतते हैं क्योंकि मतदाता अंततः चाहते हैं कि कांग्रेस सत्ता में बनी रहे।

थरूर 2009 से तिरुवनंतपुरम लोकसभा सीट से सांसद हैं, जो सात विधानसभा क्षेत्रों में फैली हुई है, लेकिन हाल के चुनावी रुझान उनके समर्थन आधार में स्पष्ट गिरावट दिखाते हैं। 2009 और 2019 में उनकी जीत का अंतर करीब एक लाख था, लेकिन 2014 में और फिर हाल में 2024 में यह गिरकर सिर्फ 16,077 वोट रह गया, जब उन्होंने भाजपा के राजीव चंद्रशेखर को हराया। तिरुवनंतपुरम लोकसभा क्षेत्र के तीन विधानसभा क्षेत्रों- कोवलम, नेय्याट्टिनकारा (जहां थरूर को 15,000 से ज्यादा वोटों से बढ़त मिली) और तिरुवनंतपुरम विधानसभा क्षेत्र (जहां उन्हें 4,000 से ज्यादा वोटों से बढ़त मिली) के स्थानीय कांग्रेस कार्यकर्ताओं और वोटरों ने थरूर के गैर-पक्षपाती विचारों की सराहना की, लेकिन यह भी कहा कि वे अक्सर अपने क्षेत्र से गायब रहते हैं और कांग्रेस के अंदर गुटबाजी भी है। कोवलम के पारंपरिक कांग्रेस गढ़ में रहने वाले 51 साल के स्टेनली को लगता है कि थरूर सच बोल रहे हैं और उनके ज्ञान और शिक्षा की वजह से ही वे ऐसे बयान दे रहे हैं।

स्टेनली का मानना है कि पार्टी थरूर को

कांग्रेस में शशि थरूर- अविश्वास की गाथा

2006 में संयुक्त राष्ट्र महासचिव की दौड़ हारने के बाद, शशि थरूर ने भारत में ज्यादा समय बिताना शुरू किया और कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गए। 2009 के आम चुनावों में केरल के तिरुवनंतपुरम से लोकसभा चुनाव जीतने के बाद कांग्रेस ने उन्हें विदेश राज्य मंत्री का पद दिया। थरूर तब से लगातार चार बार यह सीट जीतते आए हैं। 2015 में थरूर ने दावा किया था कि जब वे संयुक्त राष्ट्र की नौकरी के बाद अपने विकल्पों पर विचार कर रहे थे, तब उन्हें भाजपा और वामपंथी पार्टियों की तरफ से भी ऑफर मिला था। लेकिन उन्होंने कांग्रेस को इसलिए चुना क्योंकि जैसा कि उन्होंने 2009 में कहा था, आर्थिक रूप से मेरा वामपंथी विचारधारा से कोई मेल नहीं है। जो लोग सालों से मेरा लेखन पढ़ते आए हैं, वे जानते हैं कि मेरा उस सांप्रदायिकता से भी कोई मेल नहीं जो दुर्भाग्यवश भारतीय जनता पार्टी से जुड़े लोगों द्वारा प्रोत्साहित की गई और इसी वजह से कांग्रेस पार्टी मेरे लिए सही विकल्प है। फिर भी, पार्टी के कुछ नेताओं की नजर में थरूर की कांग्रेस के प्रति निष्ठा शुरू से ही संदिग्ध रही है। 2014 के आम चुनावों में कांग्रेस की हार के कुछ दिन बाद नरेंद्र मोदी की तारीफ में दिए गए उनके बयान ने बीते एक दशक में कई ऐसे बयानों की शुरुआत की, जिससे यह धारणा और मजबूत हुई।

पर्याप्त पहचान नहीं दे रही, इसलिए वह असहमति जता रहे हैं। वे इसे पार्टी के भीतर चल रही गुटबाजी का एक छोटा हिस्सा मानते हैं। विझिंजम की ही निवासी 44 साल की शुभा वी ने भी कहा कि थरूर की अच्छी छवि और प्रतिष्ठा है, जिससे लोग मानते हैं कि वह सही हो सकते हैं। कोवलम के विझिंजम इलाके के 50 वर्षीय मछुआरे अबिलिस जॉर्ज को भी लगता है कि चल रहा विवाद सिर्फ कांग्रेस के अंदरूनी झगड़े का नतीजा है। उन्होंने कहा, कांग्रेस बुरी तरह बंटी हुई है। उनके पास किसी बात पर एक राय नहीं है। इसमें थरूर की गलती नहीं है। हालांकि, कोवलम के 42 वर्षीय कांग्रेस समर्थक एंटनी एस, जो 2024 सहित पिछले चुनावों में थरूर के लिए प्रचार कर चुके हैं, ने उन्हें दोबारा वोट देने पर अफसोस जताया। उन्होंने कहा, उन्हें फिर से चुनना गलती थी। उन्होंने यहां कुछ नहीं किया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और राहुल गांधी को जिताने के लिए थरूर को वोट दिया, लेकिन थरूर का भाजपा की तारीफ करना उन्हें निराश करता है। उन्होंने जोर दिया कि थरूर को मिले वोट ज्यादातर पार्टी के वोट हैं और वह बिना पार्टी के नहीं जीत सकते।

नेय्याट्टिनकारा में 54 वर्षीय किराना दुकानदार नंदकुमार ने थरूर को एक अच्छे इंसान और वैश्विक नागरिक के रूप में सराहा, लेकिन उन्हें अपने वोटरों का ध्यान रखने की सलाह दी। ऐसा लग रहा है कि उन्हें भाजपा में ज्यादा ताकत और पद की उम्मीद है। लेकिन उन्हें पार्टी की नीतियों के साथ रहना चाहिए। कांग्रेस के बिना वे नहीं जीत सकते, नंदकुमार ने कहा। उन्होंने कहा कि थरूर को मिलने वाले वोट काफी घट गए हैं क्योंकि सांसद के रूप में उनका प्रदर्शन ठीक नहीं रहा। उसी इलाके के 53 वर्षीय ऑटो चालक सुधीर एम को लगता है कि थरूर के साथ अन्याय हो रहा है। ऐसा लग रहा है कि कांग्रेस उन्हें बाहर कर रही है। वह तो बस सच बोल रहे हैं। नेय्याट्टिनकारा के ही 74 वर्षीय सोमशेखरन नायर ने कहा कि थरूर ने कभी भी प्रधानमंत्री मोदी की अंधी तारीफ नहीं की, वह सिर्फ अन्य नेताओं के अच्छे कामों को स्वीकार कर रहे हैं। नायर ने यह भी कहा कि ऐसा लगता है कि थरूर भाजपा में जाना चाहते हैं। उन्होंने कहा, लगता है कि वे कांग्रेस में अपने पद से संतुष्ट नहीं हैं। लेकिन इसे खुलकर दिखाना सही नहीं है।

39 वर्षीय श्यामजीत एम और 24 वर्षीय सुधिन गोकुल एस जैसे युवा वोटर थरूर को एक भले और राजनीतिक सीमाओं से परे सोचने वाले बुद्धिजीवी के रूप में देखते हैं, जबकि कांग्रेस की प्रतिक्रिया उन्हें राजनीतिक लगती है। गोकुल ने कहा कि 2024 में थरूर के कुछ वोट चंद्रशेखर की ओर शिफ्ट हो गए, क्योंकि लोगों ने उन्हें एक बराबर का विकल्प माना।

तिरुवनंतपुरम के बालारामापुरम के निवासी शाजी एच ने कहा कि भले ही थरूर एक अच्छे सांसद हैं, लेकिन इस क्षेत्र से जीतने के लिए कांग्रेस का समर्थन जरूरी है। उन्होंने भी कहा कि थरूर की हाल की गतिविधियों से ऐसा लगता है कि वे भाजपा में दिलचस्पी ले रहे हैं। उन्होंने कहा, यहां उनका व्यक्तिगत समर्थन घट रहा है। अगर वे भाजपा में गए, तो वे नहीं जीत पाएंगे। हालांकि जनता की प्रतिक्रिया मिली-जुली रही, लेकिन स्थानीय कांग्रेस पदाधिकारी इस बात से काफी हद तक सहमत हैं कि थरूर की जीत उनकी छवि की वजह से नहीं, बल्कि पार्टी के प्रभाव के कारण हुई है। विझिंजम और नेय्याट्टिनकारा के एक-एक कांग्रेस पदाधिकारी ने कहा कि भले ही थरूर की अंतरराष्ट्रीय पहचान मददगार रही, लेकिन वोट राहुल गांधी और कांग्रेस के लिए आए। कोवलम में भी पदाधिकारियों का मानना है कि थरूर की जीत पार्टी पर निर्भर रही है। कोवलम के मोक्कोला इलाके के एक पदाधिकारी ने कहा कि थरूर, अपने क्षेत्र में न रहने के बावजूद, इसलिए जीत पाए क्योंकि तटीय समुदाय का कांग्रेस को समर्थन है, और यह धारणा कि थरूर की जीत सिर्फ उनके वोटों की वजह से हुई, गलत है। उन्होंने कहा, पहले कार्यकाल में उन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया था। लेकिन अब कांग्रेस कार्यकर्ताओं से दूरी बन गई है। यहां लोग पार्टी के चिन्ह को वोट देते हैं, न कि उन्हें। उक्त नेता ने कहा कि भाजपा की लगातार तारीफ करना थरूर की बड़ी गलती है। यहां के कांग्रेस पदाधिकारियों ने उनकी जीत के लिए मेहनत की। वह तो बस तालियां बटोरने के लिए पार्टी से बाहर जाकर एकल अभिनय कर रहे हैं। ऐसा लग रहा है कि वह दिखाना चाहते हैं कि वह पार्टी के बिना भी बहुत कुछ कर सकते हैं, लेकिन यह सच नहीं है। थरूर अब एक ऐसे विवाद में घिरे हैं जिसमें कूटनीतिक रंग भी हैं। वहीं कांग्रेस पार्टी जिसने कभी उन्हें वैश्विक राजनय के सर्वोच्च पद के लिए आगे बढ़ाया था, अब केंद्र सरकार द्वारा उन्हें ऑपरेशन सिंदूर के तहत विभिन्न देशों की राजधानियों में गई बहुदलीय प्रतिनिधिमंडल का नेता बनाए जाने पर उदासीन है। विदेशों में थरूर के बयानों से कांग्रेस नेतृत्व इतना नाराज हुआ कि उसने पार्टी नेता उदित राज के बयान का समर्थन कर दिया, जिसमें उन्होंने कहा था कि थरूर को भाजपा का प्रवक्ता बन जाना चाहिए। उदित राज विवादास्पद बयानों के लिए जाने जाते हैं। थरूर ने पलटवार करते हुए अपने आलोचकों को कट्टरपंथी और ट्रोल बताया।

● इन्द्र कुमार

शशि थरूर की टिप्पणी... कांग्रेस द्वारा तथ्य-जांच

असल में, कांग्रेस हाईकमान के करीबी पार्टी के एक वर्ग को इस बात से नाराजगी थी कि थरूर ने ऑपरेशन सिंदूर पर केंद्र सरकार के निमंत्रण को स्वीकार कर लिया और एक बहुदलीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया, वो भी पार्टी नेतृत्व की अनुमति लिए बिना। यात्रा के दौरान उनके सार्वजनिक बयानों ने इस नाराजगी को और बढ़ा दिया। 29 मई को पनामा में भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए थरूर ने कहा कि 2016 में पहली बार भारत ने भारत-पाकिस्तान के बीच नियंत्रण रेखा (एलओसी) पार की और आतंकवादियों के अड्डे पर सर्जिकल स्ट्राइक की। उन्होंने आगे कहा, यहां तक कि कारगिल युद्ध के दौरान भी हमने एलओसी पार नहीं की थी; लेकिन उरी में हमने किया। फिर पुलवामा हमला हुआ। इस बार हमने न केवल एलओसी पार की, बल्कि अंतरराष्ट्रीय सीमा भी पार कर बालाकोट में आतंकियों के मुख्यालय पर हमला किया। और मैं आपसे कहना चाहता हूं कि यही अब नया सामान्य (न्यू नॉर्मल) है। प्रधानमंत्री ने स्पष्ट कर दिया है कि ऑपरेशन सिंदूर जरूरी था क्योंकि इन आतंकियों ने 26 महिलाओं की मांग का सिंदूर मिटा दिया।

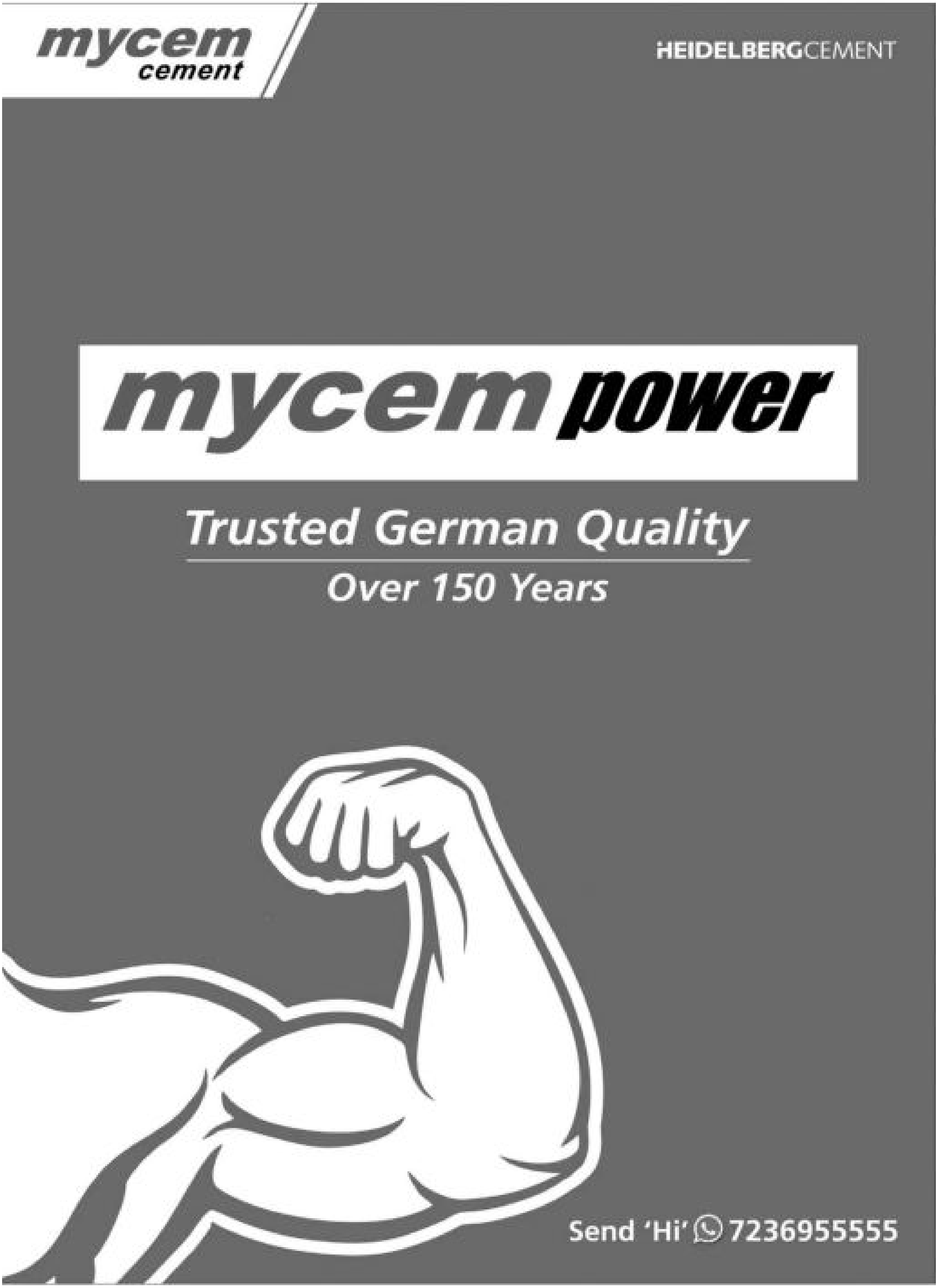
mycem
cement
HEIDELBERGCEMENT
mycem power
Trusted German Quality
Over 150 Years
Send 'Hi' 7236955555

नक्सली विचारधारा का खात्मा भी जरूरी

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने 21 मई को एक्स पर घोषणा की कि नक्सलवाद के खिलाफ कई दशकों से जारी जंग में एक बड़ी जीत हासिल की गई है। 30 वर्षों में पहली बार महासचिव पद के एक नक्सल नेता नंबाला केशव राव उर्फ बासवराजू को निश्चेष्ट कर दिया गया है। ऑपरेशन ब्लैक फॉरेस्ट के बाद से 54 नक्सलियों को गिरफ्तार किया गया; वहीं 84 ने आत्मसमर्पण किया। इससे यही संकेत मिला कि वामपंथी उग्रवाद अंततः ढलान पर है। सरकार का रुख बिलकुल स्पष्ट है-हिंसा का रास्ता पकड़ने वालों के साथ पूरी सख्ती बरती जाएगी; हथियार डालने वालों और मुख्यधारा में शामिल होने वालों को एक मौका दिया जाएगा।

वामपंथी उग्रवाद के खात्मे की अंतिम तारीख तय कर दी गई है 31 मार्च 2026। इसलिए लहर पलट गई है। 2010 में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने जिसे भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ी चुनौती कहा था वह नक्सलवाद अब खत्म होता दिख रहा है। करीब 15 साल पहले नक्सलियों ने नेपाल में पशुपति से लेकर भारत के आंध्र प्रदेश में तिरुपति तक एक लाल गलियारा बनाने का नारा उछाला था। 2013 में विभिन्न राज्यों के करीब 126 जिलों में वामपंथी उग्रवाद से संबंधित हिंसा की खबरें आ रही थीं; मार्च 2025 तक ऐसे जिलों की संख्या घटकर 18 हो गई, केवल छह जिलों को सबसे ज्यादा प्रभावित घोषित किया गया।

सरकार ने मजबूत राजनीतिक संकल्प के साथ यह दिखा दिया कि वह लोकतांत्रिक रास्ते को खारिज करके बंदूक के जोर पर सत्ता हासिल करने के विचार में भरोसा करने वाले कट्टर माओवादियों से सहानुभूति रखने वाले मानवाधिकारवादियों के प्रचार के आगे हार नहीं मानेगी। एक दशक से सरकार जिस बहुआयामी रणनीति पर चल रही है वह काफी कारगर साबित हुई है। जमीनी कामयाबी समाधान नामक रणनीति पर निरंतर अमल करने से हासिल हुई है। इस रणनीति के तहत गृह मंत्रालय 2017 से एक विस्तृत कार्रवाई कर रहा है जिसके तहत सुरक्षा संबंधी उपायों के साथ-साथ विकास के कदम भी उठाए जा रहे हैं और इस प्रक्रिया के कामकाज के संकेतकों के जरिए प्रगति पर नजर रखी जाती रही है। एक पूर्व सैनिक का कहना है कि 2010 में जब मैं सीआरपीएफ में तैनात था, मुझे ऑपरेशन ग्रीन हंट के तहत वामपंथी उग्रवाद से भारत की लंबी लड़ाई की जटिलताओं को समझने का मौका मिला था। इस मसले की गंभीरता का अंदाजा दंतेवाड़ा में सीआरपीएफ की गश्ती टोली की नक्सलियों द्वारा घेराबंदी में एक साथ 76 सुरक्षाबलों के मारे जाने की घटना से लगता है। इस घटना ने उनकी रणनीतिक योजना, तालमेल, उनके हथियारों की विविधता को उजागर कर दिया था। इस तरह के हमलों के कारण केंद्रीय सुरक्षाबलों ने बचाव की मुद्रा अपना ली थी।

दिल-ओ-दिमाग जीतने की जंग

हालांकि बहुत कुछ हासिल किया जा चुका है और नक्सलवाद को खत्म करने की जो अंतिम तारीख (31 मार्च 2026) गृहमंत्री ने तय की है वह लक्ष्य पूरा होता दिख रहा है लेकिन हम ढील नहीं बरत सकते। हमें हथियार घुमाते कट्टर नक्सलियों पर दबाव बनाए रखना है। वे जबरन वसूली और सुरक्षा देने के नाम पर जो उगाही करते हैं उनके वित्तीय नेटवर्क को तोड़ना है। नक्सलवाद की समस्या केवल सुरक्षा से जुड़ी नहीं है बल्कि उसका संबंध विकास और शासन व्यवस्था से भी है। जबकि सुरक्षाबल बागियों के ऑपरेशन से जुड़े ढांचे को ध्वस्त करने में जुटे हैं, जब तक व्यवस्थागत मसलों का निपटारा नहीं होता तब तक उनके फिर से एकजुट होने का खतरा बना रहेगा। वामपंथी उग्रवाद से सबसे ज्यादा प्रभावित इलाकों का इतिहास बताता है कि उनमें विकास की भारी कमी रही है। वामपंथी विचारधारा को उपजाऊ जमीन न मिले इसके लिए अगले चरण में जनता केंद्रित शासन, भूमि अधिकार, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और आर्थिक बेहतरी पर जोर देने की जरूरत होगी। सुरक्षा संबंधी ऑपरेशन के साथ विकास की एक मजबूत रणनीति भी जरूरी है, जो उग्रवाद के मूल कारणों का इलाज करती हो।

बीजापुर और दंतेवाड़ा में जमीनी स्थितियां इतनी गंभीर हो गई थीं कि घेराबंदी या गोलीबारी के खतरों को कम करने के लिए आरओपी टुकड़ियों को तैनात किया जाने लगा था। इलाके में बारूदी सुरंगें बिछी होती थीं, और आईईडी के विस्फोटों का खतरा बना रहता था, सैनिकों की आवाजाही के दौरान अचानक उन पर गोलीबारी हुआ करती थी। इसका नतीजा यह हुआ कि सुरक्षाबलों ने काफी रक्षात्मक रुख अपना लिया और नक्सल विरोधी ऑपरेशन करने की जगह वे अपने शिविरों में सीमित हो गए। इससे न केवल उनका मनोबल गिरा बल्कि उनमें जनजातीय लोगों का भरोसा भी हिल गया। इसके कारण नक्सलियों की गतिविधियों की खुफिया सूचनाएं भी सूख गईं। जनजातीय लोग नक्सलियों और सुरक्षाबलों में से एक को चुनने पर मजबूर हो गए, क्योंकि शासन उन्हें सुरक्षा या मजबूत विकल्प नहीं दे पा रहा था। नक्सल कार्यकर्ता जनजातीय लोगों को यह विश्वास दिलाने में सफल हो गए कि वे जल, जंगल और जमीन पर उनके अधिकारों के लिए लड़ रहे हैं। इस सबका कुल नतीजा यह हुआ कि बीजापुर और दंतेवाड़ा जैसे इलाकों में नक्सलियों का ही आदेश चल रहा था। वे सरकारी महकमों को सड़क निर्माण, दूरसंचार नेटवर्क के विस्तार, अंदरूनी इलाकों में बिजली पहुंचाने जैसे विकास के काम भी नहीं करने दे रहे थे ताकि उन मुक्त इलाकों पर उनकी पकड़ कायम रहे। नक्सलवाद को नष्ट करने में कामयाबी के लिए विकास और सुरक्षा संबंधी रणनीतियों को श्रेय दिया जा सकता है। सरकार के विकास केंद्रित कदमों ने राज्य की जनता के भरोसे को बहाल करने में बड़ी भूमिका निभाई है। पिछले दशक में सड़कों के जाल और दूरसंचार नेटवर्क में भारी सुधार हुआ है। सीएपीएफ ने नागरिक कार्रवाई के जो कार्यक्रम चलाए उन्होंने स्थानीय लोगों का दिल-दिमाग जीता, रोशनी योजना ने आदिवासी युवकों को हुनरमंद बनाया और रोजगार दिलाए।

● रायपुर से टीपी सिंह

अकेले या साथ-साथ?

बृहन्मुंबई महानगर पालिका (बीएमसी) चुनाव से पहले महाराष्ट्र की राजनीति में बड़ा ट्विस्ट आ सकता है। महायुति और महाविकास अघाड़ी के समीकरण में उलटफेर होने की संभावना भी बन रही है।

मुलाकातों और पर्दे के पीछे जारी बातचीत से यह उम्मीद जताई जा रही है कि महाराष्ट्र निकाय चुनाव से पहले रूठे फिर मानेंगे और खून के रिश्ते फिर से करीब आएंगे। बताया जा रहा है कि एनसीपी नेता अजित पवार फिर से चाचा शरद पवार के साथ आ सकते हैं। 20 साल पहले चाचा बाल ठाकरे के पुत्रमोह से दुखी होकर मनसे पार्टी बनाने वाले राज ठाकरे भी चचेरे भाई उद्धव के साथ गठबंधन के लिए तैयार हैं। सूत्रों के अनुसार, राज ठाकरे ने अपने विकल्प खुले रखे हैं और वह एकनाथ शिंदे के संपर्क में भी हैं। उन्होंने अपने कार्यकर्ताओं को चुप रहने की सलाह दी है।

महाविकास अघाड़ी (एमवीए) इस साल के अंत में होने वाले बीएमसी चुनावों में सबको चौंका सकता है। तीनों सहयोगी दल, कांग्रेस, शिवसेना यूबीटी और एनसीपी (एसपी) अकेले चुनाव लड़ सकते हैं, लेकिन अभी तक कोई भी इसे आधिकारिक तौर पर नहीं बता रहा है। एमवीए के नेता (कुछ ऑन रिकॉर्ड, कुछ ऑफ रिकॉर्ड) कह रहे हैं कि वह एक-दूसरे की ताकत का आंकलन करेंगे और फिर फैसला करेंगे, लेकिन गठबंधन के नेताओं के बयान से जो समझ में आया, वह यह था कि मुंबई, पुणे, नागपुर और ठाणे जैसी हाई प्रोफाइल सीटों पर हर पार्टी अकेले चुनाव लड़ सकती है। वरिष्ठ कांग्रेस नेता बालासाहेब थोराट सतर्क थे। उन्होंने कहा कि एमवीए मिलकर तय करेगी कि आगे कैसे बढ़ना है। समान विचारधारा वाली पार्टियों को एक साथ रहना चाहिए और आगामी चुनावों के लिए, एमवीए के रूप में, हमारे नेता बैठकर चर्चा करेंगे कि इसे कैसे आगे बढ़ाया जाए।

हालांकि, मुंबई में अन्य कांग्रेस नेताओं का कहना है कि वह आखिरी फैसला स्थानीय नेताओं और कार्यकर्ताओं पर छोड़ सकते हैं। कांग्रेस प्रवक्ता अतुल लोंधे ने कहा, हमारी लाइन बहुत स्पष्ट है। हमने इसे अपने स्थानीय स्तर के नेताओं पर छोड़ दिया है, जहां भी वह अकेले जाने का फैसला करेंगे, हम अकेले ही लड़ेंगे। यह स्थानीय स्तर के नेतृत्व पर निर्भर करता है। कांग्रेस के एक अन्य नेता ने कहा, हम अकेले ही लड़ेंगे, जहां हम मजबूत हैं, जैसे मुंबई, नागपुर और जहां भी हमें लगेगा कि हमें अपने प्रयासों को संयोजित करने की जरूरत है जैसे कोल्हापुर, सांगली, पुणे, हम ऐसा करेंगे। इसलिए एमवीए बरकरार है। हालांकि, हर एक निगम, जिला परिषद, नगर पंचायत का व्यक्तिगत रूप से मूल्यांकन किया जाएगा। यह ऐसे समय में आया है जब कांग्रेस की गठबंधन सहयोगी शिवसेना यूबीटी ने महाराष्ट्र के व्यापक हित में राज ठाकरे और उनकी एमएनएस को संकेत भेजे हैं।

शिवसेना यूबीटी नेताओं ने यह भी कहा है कि वह बीएमसी चुनावों में अकेले जा सकते हैं। मुंबई की पूर्व मेयर किशोरी पेडनेकर कहती हैं कि उन्होंने यह फैसला पार्टी प्रमुख उद्धव ठाकरे पर छोड़ दिया है। उन्होंने कहा, चाहे अघाड़ी के रूप में जाना हो या राज ठाकरे के साथ या अकेले, वही आखिरी फैसला लेंगे। बतौर कार्यकर्ता हम अपनी जमीन तैयार कर रहे हैं। जो कुछ हो रहा है उससे हम नाराज हैं और अब वक्त आ गया है कि चुनाव कराए जाएं। हम किसी भी चीज के लिए तैयार हैं। राजनीतिक विश्लेषक हेमंत देसाई ने कहा कि ऐसा लगता है कि एमवीए अलग-अलग लड़ेगी, खासकर बड़ी सीटों पर। फिलहाल, ऐसा नहीं लगता कि एमवीए साथ मिलकर लड़ने की तैयारी कर रहा है। अलग-अलग इलाकों में उनकी ताकत अलग-अलग है। खासतौर पर मुंबई में, सेना यूबीटी मुस्लिम वोट पाने में सक्षम है, जैसा कि पहले विधानसभा और लोकसभा में देखा गया है। इसलिए उन्हें कांग्रेस की जरूरत नहीं है और विदर्भ में, कांग्रेस मजबूत है। इसलिए उनके लिए साथ मिलकर लड़ना समझदारी नहीं है। इसके अलावा, सीट बंटवारे में भी मुद्दे सामने आएंगे, खासतौर पर कांग्रेस और सेना यूबीटी के बीच।

एमवीए के बाहर भी गठबंधन हो सकता है। एक तरफ, शिवसेना यूबीटी और एमएनएस मराठी मानुष के मुद्दे का हवाला देते हुए साथ जाने का फैसला कर सकते हैं, वहीं दूसरी तरफ शरद पवार-अजित पवार की लगातार बैठकें (1 जून को वसंतदादा शुगर इंस्टीट्यूट में हुई सबसे ताजा मुलाकात) संभावित सुलह की अटकलों को जन्म दे रही है। कांग्रेस के एक नेता ने चेतावनी देते हुए कहा, ये चुनाव स्थानीय मुद्दों पर लड़े जाएंगे और यही वजह है कि समीकरण बिल्कुल अलग हैं। इसके अलावा, अगर मुंबई की बात करें तो शिवसेना मजबूत है। पहले, उनके साथ सीट शेयरिंग को लेकर हमारा अनुभव अच्छा नहीं रहा। इसलिए, यह अभी भी एक मुद्दा हो सकता है। मेरी राय में, अगर हम शिवसेना यूबीटी के साथ जाते हैं, तो वोट ट्रांसफर नहीं होने पर हम दोनों को नुकसान हो सकता है। इसके अलावा, बीएमसी चुनावों में, हमारे चुनावी मुद्दे भी अलग हैं। एमवीए का चुनाव के बाद गठबंधन भी संभव है। स्थानीय निकाय चुनावों में अकेले जाने की भाजपा की तैयारी को लेकर महायुति के भीतर भी सुगबुगाहट है, लेकिन मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने खुद कहा है कि गठबंधन ज्यादातर जगहों पर साथ रहेगा, जबकि कुछ सीटों पर दोस्ताना मुकाबला हो सकता है।

● बिन्दु माथुर

भाजपा की एक चाल से बदला माहौल

पिछले पांच साल में मुंबई में राजनीतिक उलटफेर हुए और नई पार्टियों के साथ नए गठबंधन का दौर शुरू हुआ। विधानसभा चुनाव में महायुति की प्रचंड जीत के बाद कांग्रेस, एनसीपी (शरद पवार) और शिवसेना (यूबीटी) बैकफुट पर चली गई। महाविकास अघाड़ी में कानाफूसी शुरू हो गई। एकनाथ शिंदे और अजित पवार बड़े गेमचेंजर बनकर उभरे। भाजपा पहले से ज्यादा पावरफुल हो गई। राज ठाकरे एक बार फिर अपनी पार्टी के अस्तित्व से जूझते नजर आए। विधानसभा चुनाव जीतते ही भाजपा ने अजित पवार और एकनाथ शिंदे को झटका देते हुए एक बड़ा खेल कर दिया। देवेंद्र फडणवीस ने निकाय चुनाव और बीएमसी चुनाव में गठबंधन की जिम्मेदारी जिले के नेताओं को दे दी। उन्होंने तय कर दिया कि निकाय चुनाव भाजपा अकेले लड़ेगी। दूसरी ओर, महाविकास अघाड़ी में भी उद्धव सेना द्वारा कांग्रेस और शरद पवार से अलग हटकर बीएमसी चुनाव लड़ने के सुर उठने लगे। सांसद संजय राउत ने भी कहा था कि पार्टी कार्यकर्ताओं की मांग है कि शिवसेना को बीएमसी चुनाव अपने दम पर लड़ना चाहिए।

फिर सुलग रहा गुर्जर आंदोलन

राजस्थान में गुर्जर आंदोलन की धमक एक बार फिर से सुनाई देने लगी है। प्रदेश में साल 2006 से शुरू हुआ गुर्जर आरक्षण आंदोलन अब तक कई पड़ावों से गुजर चुका है। साल 2006 से लेकर अब तक सूबे में सत्तारुढ़ रही भाजपा और कांग्रेस दोनों ही पार्टियों को गुर्जर आंदोलनों से रूबरू होना पड़ा है। इस दौरान राजस्थान की राजनीति के कई चेहरे ऐसे रहे हैं जो सरकार में रहते हुए गुर्जर प्रतिनिधिमंडलों से वार्ता-दर-वार्ता करते रहे हैं। पिछले दो दशकों से राजस्थान के हर सत्तारूढ़ दल को गुर्जर आरक्षण आंदोलन का ताप झेलना पड़ा है। राजस्थान का करौली, दौसा, टोंक, सवाई माधोपुर, भरतपुर, बयाना, हिंडौन और गंगापुर साल 2006 से गुर्जर आरक्षण आंदोलन का गवाह रहा है। इस आंदोलन के पहले चार सालों में हुई हिंसा में ही कम से कम 75 लोगों की मौत हुई जबकि सैकड़ों लोग घायल हुए। पिछले 20 सालों में गुर्जर आंदोलन संघर्ष समिति ने 6 बड़े आंदोलन किए हैं, जिसमें तीन बार भारी हिंसा हुई है। इसमें सबसे हिंसक आंदोलन भरतपुर के पीलूपुरा में हुआ। जब गोलीबारी में कम से कम 37 लोगों की मौत हो गई।

गुर्जर आरक्षण आंदोलन के करीब दो दशक के समय में आंदोलनकारी गुर्जर समुदाय से बातचीत करने के लिए हर बार सरकार ने अधिकतर गुर्जर जनप्रतिनिधियों और मंत्रियों को ही आगे किया। यह बात दीगर है कि उनके आजू-बाजू में सरकार ने कई दिग्गज नेताओं और अधिकारियों को खड़ा रखा है। मौजूदा सरकार में यह जिम्मा गुर्जर समुदाय से आने वाले गृह राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेढम संभाले हुए हैं। भाजपा की वसुंधरा राजे के पहले कार्यकाल के समय (2003-08) में गुर्जर आंदोलन सबसे ज्यादा उफान पर आया था। उस समय राजे ने गुर्जर आरक्षण आंदोलन से निपटने के अपने विश्वस्त सिपाहसालार राजेंद्र राठौड़ की अगुवाई में पंचायती राज मंत्री गुर्जर नेता कालूलाल गुर्जर, दिगंबर सिंह और सांवरलाल जाट को आगे किया था। ये प्रतिनिधि मंडल पटरी पर डटे गुर्जरों से वार्ता करता रहा था।

इस दौरान गुर्जर आरक्षण आंदोलन में हुई गुर्जर समाज के कई लोगों की मौत के बाद भाजपा सत्ता से बेदखल हो गई और कांग्रेस राज आ गया। अशोक गहलोत ने दूसरी बार सूबे की कमान संभाली। 2008 से 2013 तक गहलोत के इस राज में भी गुर्जर आंदोलन की छाया पड़ती रही। गहलोत राज में गुर्जर समाज आंदोलन की मांग को लेकर फिर जब-जब रेलवे ट्रैक पर आया तब-तब तत्कालीन मुख्यमंत्री गहलोत ने पूर्वी राजस्थान की गुर्जर पट्टी के दिग्गज जाट नेता विश्वेंद्र सिंह को आगे किया। उनके साथ स्थानीय गुर्जर नेताओं को आगे रखा गया ताकि आंदोलन के ताप को कम किया जा सके। गहलोत ने राजस्थान की सत्ता के नेचर के अनुरूप 2013 में जनता ने फिर तख्ता पलट किया। वसुंधरा राजे का राज फिर लौटा। गुर्जर समुदाय फिर भी शांत नहीं हुआ और अपनी आवाज को बुलंद करने के लिए बार-बार उग्र होता रहा। इस बार भी राजे ने अपनी पुरानी टीम राजेंद्र राठौड़ और कालूलाल गुर्जर के साथ मुस्लिम समुदाय के कद्दावर नेता युनूस खान को उनके साथ जोड़ा। गुर्जर आरक्षण की अगुवाई करने वाले कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला के साथ सुलह की बात आगे बढ़ाई। फिर बैंसला को लोकसभा चुनाव में उतारकर गुर्जर समाज का गुस्सा शांत करने का प्रयास किया। यह अलग बात है कि बैंसला इतने बड़े आंदोलन की अगुवाई करने के बाद भी हार गए।

साल 2018 में गहलोत ने तीसरी बार राजस्थान की कमान संभाली। लेकिन गुर्जर आंदोलन तब भी ठंडा नहीं हुआ। बैंसला के तेवर उग्र होने लगे तो गहलोत ने इस बार अपने गुर्जर मंत्री अशोक चांदना को आगे किया। उनके साथ अपने विश्वसनीय आईएएस नीरज के पवन और आईपीएस सीबी शर्मा समेत स्थानीय गुर्जर नेताओं को आगे कर कर्नल बैंसला से बातचीत का सिलसिला बढ़ाया। इस पूरे समय में गुर्जर समाज की कुछ मांगे पूरी हुई कुछ अधूरी रही। मामला सरकार के साथ-साथ कोर्ट में भी चलता रहा। लेकिन वह अपने मुकाम पर नहीं पहुंच पाया। इस बीच बैंसला का निधन हो गया।

भजनलाल सरकार ने राजस्थान में अपनी परंपरा के अनुसार 2023 में फिर गहलोत को सत्ता से बाहर कर दिया और भाजपा को सरकार चलाने का मौका दिया। लेकिन इससे पहले भाजपा ने गुर्जर समाज से संतुलन साधते हुए बैंसला के बेटे विजय बैंसला को विधानसभा चुनाव में उतारकर गुर्जर समुदाय का रुख अपनी तरफ मोड़ने का प्रयास किया। भाजपा जरूर सत्ता में आ गई लेकिन विजय बैंसला चुनाव हार गए। सरकार का गठन होने के बाद भाजपा ने गुर्जर समुदाय के दूसरे नेता जवाहर सिंह बेढम को राज्यमंत्री बनाया। अब जब गुर्जर फिर ट्रेन पर कब्जा जमाने आए तो भजनलाल सरकार ने वार्ता के लिए बेढम को आगे किया है।

● **जयपुर से आर.के. बिन्नानी**

2015 में गुर्जर समुदाय को अति पिछड़ा वर्ग में शामिल किया

2008 के आंदोलन के बाद साल 2010 में कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला के नेतृत्व में एक बार फिर हिंसक आंदोलन हुआ, जब सवाई माधोपुर, बयाना और दौसा में 10 लोगों की मौत हो गई और दर्जनों लोग घायल भी हुए। गुर्जर आंदोलनकारियों ने रेल की पटरियों पर कब्जा किया और कई जिलों में कर्फ्यू लगाना पड़ा। साल 2013 में वसुंधरा राजे ने एक बार फिर सत्ता संभाली। उस समय हाईकोर्ट ने गुर्जर समुदाय को विशेष पिछड़ा वर्ग में शामिल करने का फैसला दिया। जिससे आंदोलनकारी नाराज थे। उसी साल राजे सरकार ने कई दौर की वार्ताओं के बाद गुर्जरों को 1 प्रतिशत आरक्षण अति पिछड़ा वर्ग श्रेणी में दिया। हालांकि आंदोलनकारी इससे संतुष्ट नहीं हुए। साल 2018 विधानसभा चुनाव से पहले दौसा, करौली, बयाना, जयपुर-बयाना रेल रूट पर जाम और आंशिक हिंसा हुई। आंदोलन अधिकतर शांतिपूर्ण रहा, लेकिन कई जगह पथराव, आगजनी और पुलिस की हल्की झड़पें हुईं। 2018 में एक बार गहलोत सत्ता में लौटे तो उन्होंने अगले साल ही इसे एमबीसी कोटे में आरक्षण का दायरा बढ़ाकर 5 फीसदी किया। हालांकि, गुर्जर समुदाय का कहना है कि उनकी मांगें पूरी तरह पूरी नहीं हुई हैं।

'जाति' से डगमगाता हिंदुत्व

कैसे उप्र में हिंदुत्व का जनाधार बना था? कैसे एक साथ दलितों और पिछड़ों को साध ले जाती है भाजपा? क्या यह सवाल उप्र के आगामी 2027 विधानसभा चुनाव में प्रासांगिक रह जाएंगे? 2024 में लोकसभा चुनाव के जातिगत समीकरण यह बताते हैं कि पिछड़ी जातियों में कुर्मी और कोयरी जो उप्र में यादव के बाद या कुछ हद तक उसके बराबर एक मजबूत जाति है। इन जातियों ने 61 प्रतिशत वोट एनडीए को दिया था जो इंडिया गठबंधन के मुकाबले 27 प्रतिशत ज्यादा है। वही गैर-जाटव के 29 प्रतिशत वोट भाजपा को मिले और 56 प्रतिशत वोट इंडिया गठबंधन के हाथ लगे। ये वे जातिगत समीकरण हैं जो उप्र में सरकार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

दलितों और पिछड़ों की लामबंदी अब भारतीय राजनीति के क्षेत्रीयकरण तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि इसका असर राष्ट्रीय राजनीति पर भी पड़ता है। जबकि 2014 से पहले खासकर उप्र में क्षेत्रीय दलों के उभार के कारण भारत में गठजोड़ की एक ऐसी राजनीति का विकास हुआ था जिसमें कोई भी राष्ट्रीय पार्टी पिछड़ी जातियों की क्षेत्रीय पार्टियों का सहयोग लिए बिना केंद्र में सरकार नहीं बना सकती थी। जाहिर है कि पिछड़ी राजनीति का यह अभूतपूर्व उभार हमें इस सवाल की ओर ले जाता है कि आखिर क्षेत्रीय या राज्य स्तर पर ऐसा क्या घटा था जिसके कारण चुनावी राजनीति का पूरा चरित्र ही बदल गया? जबकि राजनीतिक तौर पर उप्र पिछड़ों और दलित राजनीतिक चेतना को अभिव्यक्त करने वाले राजनीतिक दलों का मजबूत उदाहरण पेश करता रहा है।

सपा और बसपा दोनों न केवल राजनीतिक लामबंदी से पिछड़ों और दलितों की राजनीतिक चेतना को सत्ता का आकार दिया बल्कि सूबे के मुख्यमंत्री रहकर नए कीर्तिमान भी गढ़े। गौरतलब है कि दोनों पार्टियों की लामबंदी ने पिछड़ी और दलित जातियों को एक समरूप समूह मानती रही। जबकि इन जातियों के बीच सामाजिक और आर्थिक हैसियत को लेकर बढ़ते आपसी तनाव को इन दोनों क्षेत्रीय दलों ने कभी प्राथमिकता नहीं दी। इस बात को भी कभी राजनीतिक सुधार के आवरण में नहीं लाया गया कि रामजन्मभूमि आंदोलन के समय जिन समूहों ने नेतृत्व और कारसेवा की थी उनमें पिछड़ों और गैर जाटव की संख्या सबसे ज्यादा थी। जिन साध्वियों ने इस गोलबंदी में सबसे प्रमुख भूमिका निभाई, उनमें एक उमा भारती थी जो मप्र के लोधी समुदाय से आती थी। इस आंदोलन की सबसे जुझारू भूमिका निभाने वाले संगठन बजरंग दल की कमान संभालने वाले विनय कटियार कुर्मी जाति से आते थे।

साध्वी ऋतंभरा पंजाब के हलवाई समुदाय से आती थीं। उस समय के गोरखनाथ पीठ के महंत अवैधनाथ राजपूत होते हुए भी पिछड़ी जातियों में उनका प्रभाव ज्यादा था। यही वजह थी कि 1990 में हुए उप्र विधानसभा चुनाव में पूर्ण बहुमत भाजपा को मिला। कल्याण सिंह इस सरकार के अगुवा बने जो खुद पिछड़ी जतियों में लोधी समाज से आते थे। कल्याण सिंह के मुख्यमंत्री बनने के बाद मानों भारतीय राजनीति का केंद्र अयोध्या हो गया हो। यहीं से हिंदुत्व ने एक क्षेत्रीय आधार भी तैयार करना शुरू कर दिया था। इसका एक कारण यह भी था कि इन दोनों दलों (सपा और बसपा) ने क्षेत्रीय प्राथमिकताओं को नजरअंदाज करते हुए सत्ता की महत्वाकांक्षा को प्राथमिकता दी। मसलन, पार्टी ने उन नेताओं को स्वीकार करना शुरू कर दिया जिनका संबंध पार्टी की विचारधारा से कोई सरोकार नहीं था। खासकर बसपा, 2000 के दशक में पार्टी के पास जो एकमुश्त दलित वोट थे जिनके दम पर बसपा राजनीति की हुंकार भरती थी। उनके सशक्तिकरण का आंकलन भी जगजाहिर होता गया। 2007 की बसपा सरकार में बढ़ते ब्राह्मणों के वर्चस्व ने दलितों की समरूपता को बिखेर दिया। चमार समुदाय जो बसपा के पारंपरिक वोटर थे, इन्हें भी कभी-कभी बसपा से मिलने वाले संरक्षण और लाभ से वंचित किया जाने लगा। इन भूमिधारी जातियों से आए विधायकों द्वारा अपने ही समुदाय के लोगों को दिया गया संरक्षण इस हद तक प्रभावी होता गया कि चमार खेतिहर मजदूरों और बसपा के कार्यकर्ताओं के लिए ऊंची जातियों और ओबीसी किसानों द्वारा किए गए उत्पीड़न और शोषण की घटनाओं की रिपोर्ट करना भी कठिन हो गया था।

● **लखनऊ से मधु आलोक निगम**

अकेली पड़ी बसपा

ओबीसी कांशीराम बहुजन विचार के मजबूत आधार थे। 1995 के आसपास सोनेलाल पटेल, राम लखन वर्मा, जंग बहादुर पटेल और कुर्मी नेताओं के पार्टी छोड़ देने के बाद पिछले दशकों के दौरान अन्य पिछड़ी जातियां पाल, निषाद, राजभर, कोयरी, सैनी आदि को पार्टी में हाशिये पर रखा गया। और जब मायावती ने उप्र में सत्ता पर काबिज होने के लिए ब्राह्मणों के साथ गठबंधन किया। जिसकी कमियां 2009 से ही सामने आने लगी थीं। पार्टी ने इस पक्ष पर कभी भी विचार नहीं किया कि जाटव या चमारों के साथ अन्य दलित जातियां बसपा का साथ क्यों छोड़ती चली जा रही हैं? उच्च जातियों के प्रत्याशियों को पार्टी में अधिक सीटें देना और पिछड़े नेताओं को पार्टी मीटिंग में बोलने न देना। जिसका एक उदाहरण वर्तमान में भाजपा के सहयोगी संगठन की भूमिका निभा रहे ओमप्रकाश राजभर भी थे। यही कारण है कि बसपा आज उप्र में तीसरे नंबर की पार्टी बन चुकी है। सोहनलाल पटेल का अपना दल और ओमप्रकाश राजभर की भारतीय समाज पार्टी जिनकी जड़ें बसपा में थी, वह भाजपा का दामन थामकर सत्ता तक पहुंचने का आधार बने हुए हैं। इसी तरह चुनाव से कुछ ही महीने पहले बसपा से निष्काशित किए गए स्वामी प्रसाद मौर्य ने पूर्वी उप्र में बसपा के कोयरी वोटरों को हिंदुत्व के ध्वज के नीचे लाकर खड़ा कर दिया। बहुजन और सर्वजन के बिखरते मेल ने 2014 के लोकसभा चुनाव में और 2017 के विधानसभा चुनाव में पिछड़ों और दलितों को हिंदुत्व के राजनीतिक समीकरण के बीच लाकर खड़ा कर दिया। यह भी सच है कि 2014 में भाजपा के प्रति बढ़ते दलित वोटरों में ज्यादा संख्या शहराती, शिक्षित, मध्यवर्गीय और तकनीकी रूप से जानकार वर्ग जो मोबाइल में मीडिया के साथ जुड़ा हुआ ही समूह शामिल था।

PRISM®
CEMENT

प्रिज़्म® चैम्पियन प्लस

ज़िम्मेदारी मज़बूत और टिकाऊ निर्माण की.

- ज्यादा मज़बूती
- ज्यादा महीन कण
- ज्यादा वर्कबिलिटी
- बेहतरीन निर्माण कार्य
- इको–फ्रेन्डली
- कन्सिसटेंट क्वालिटी
- ज्यादा प्रारम्भिक ताक़त
- ज्यादा बचत

PRISM®
चैम्पियन प्लस
सीमेंट

दूर की सोच®

Toll free: 1800-572-1444 Email: cement.customerservice@prismjohnson.in

ऑपरेशन सिंदूर से बना बिहार में माहौल

अक्टूबर 2016 में जनता दल (यूनाइटेड) की राष्ट्रीय परिषद को संबोधित करते हुए बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सर्जिकल स्ट्राइक का राजनीतिकरण करने के लिए भारतीय जनता पार्टी की आलोचना की थी।

कुमार ने कहा, पूरा देश आपके (नरेंद्र मोदी) साथ खड़ा है क्योंकि आप प्रधानमंत्री हैं, लेकिन उन भाजपा नेताओं का क्या जिन्होंने बार-बार स्ट्राइक का इस्तेमाल राजनीति करने के लिए किया है? कुछ

महीने पहले, जब भाजपा 70वें स्वतंत्रता दिवस से पहले तिरंगा यात्रा का आयोजन कर रही थी, तब कुमार ने इस पर कटाक्ष किया था। उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने तिरंगे को कभी राष्ट्रीय ध्वज के रूप में मान्यता नहीं दी, वह तिरंगा यात्रा निकाल रहे हैं। तब से गांधी सेतु के नीचे बहुत पानी बह चुका है। जब भाजपा ने ऑपरेशन सिंदूर की सफलता का जश्न मनाने के लिए 10 दिनों तक पूरे बिहार में तिरंगा यात्रा निकाली, तो कुमार ने उन्हें चुपचाप देखा और शायद सावधानी और शंका से, ऑपरेशन ने भाजपा नेताओं के पैरों में जान डाल दी है। 2024 के लोकसभा चुनाव का झटका अब बीती बात हो गई है। प्रधानमंत्री मोदी ने फिर से अपना नाम लेना शुरू कर दिया है- मोदी का ठंडा दिमाग और उनकी नसों में गर्म सिंदूर, मोदी का सीना, वगैरह।

बिहार के मधुबनी में पहलगाम आतंकी हमले के बाद अपनी पहली सार्वजनिक रैली में प्रधानमंत्री मोदी ने अपराधियों को उनकी कल्पना से परे सजा देने की कसम खाई थी। यह कसम पूरी हुई। माना जा रहा है कि ऑपरेशन सिंदूर बिहार चुनावों को प्रभावित करेगा? राजनीतिक डिजिटल अभियान प्रबंधन कंपनी डिजाइनबॉक्स्ड ने पिछले महीने बिहार में एक सर्वेक्षण किया, जिसमें एनडीए के लिए अच्छी खबर है। लगभग 60 प्रतिशत उत्तरदाता मुख्यमंत्री पद पर कुमार के प्रदर्शन से या तो बहुत संतुष्ट थे या कुछ हद तक संतुष्ट थे। 60 प्रतिशत से अधिक लोगों ने कहा कि कुमार अगले पांच साल तक मुख्यमंत्री पद पर काम करने के लिए उपयुक्त हैं। 50 प्रतिशत से अधिक लोगों ने कहा कि एनडीए के अगला चुनाव जीतने की उम्मीद है।

एनडीए अत्यंत पिछड़े वर्गों (ईबीसी) के 68.72 प्रतिशत लोगों के लिए मतदान का विकल्प था, जो कुल आबादी का 36 प्रतिशत है। यह अन्य पिछड़े वर्गों (ओबीसी) के 39.63 प्रतिशत लोगों के लिए मतदान का विकल्प था, जो कुल आबादी का 27 प्रतिशत है। इंडिया ब्लॉक ईबीसी के 17.74 प्रतिशत और ओबीसी के 44.14 प्रतिशत लोगों के लिए मतदान का विकल्प था। बिहार की आबादी में 19.6 प्रतिशत हिस्सेदारी रखने वाली अनुसूचित जातियों (एससी) में से 48.23 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने एनडीए को वोट देने की बात की, जबकि 28.11 प्रतिशत ने इंडिया को वोट दिया। 56 प्रतिशत से अधिक मुसलमानों ने इंडिया ब्लॉक को और 28.47 प्रतिशत ने एनडीए को वोट देने की बात की। कुल मिलाकर, डिजाइनबॉक्स्ड सर्वेक्षण ने एनडीए के लिए स्पष्ट बढ़त का संकेत दिया। ध्यान रहे, यह ऑपरेशन सिंदूर से पहले का सर्वे है।

नीतीश कुमार के मुख्य प्रतिद्वंद्वी तेजस्वी यादव भी सर्वेक्षण से कुछ सकारात्मक निष्कर्ष निकाल सकते हैं। अगर कल चुनाव होते हैं, तो 46.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि वह एनडीए को वोट देंगे, जबकि 35.6 प्रतिशत ने इंडिया ब्लॉक का समर्थन किया, जबकि 13.8 प्रतिशत अनिश्चित थे। अगर तेजस्वी अनिश्चित लोगों को अपने पक्ष में कर लेते हैं, तो खेल शुरू हो जाएगा। 43.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं के लिए बेरोजगारी और पलायन आगामी चुनावों में सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे हैं- 2020 में तेजस्वी का मुख्य मुद्दा। उन्हें और भी खुशी इस बात से होगी कि सर्वे में पाया गया कि 63.76 प्रतिशत लोग चाहते हैं कि मौजूदा सरकार को बदला जाए। यह असंगत लगता है क्योंकि ज्यादातर उत्तरदाता कुमार के प्रदर्शन से संतुष्ट थे। हालांकि, डिजाइनबॉक्स्ड सर्वेक्षण में शामिल लोगों का दावा है कि यह कोई हैरानी की बात नहीं है। उनमें से एक ने मुझसे कहा, आप ऐसे कई उत्तरदाताओं से मिलते हैं जो नीतीश कुमार के साथ ठीक हैं, लेकिन फिर भी उनकी सरकार बदलना चाहते हैं। यह इसके विपरीत भी है। इसका मुख्य कारण लोगों की जाति है जो मुख्य निर्धारक बन जाती है। 2014-15 में 9 महीने के छोटे अंतराल को छोड़कर, कुमार 2005 से ही मुख्यमंत्री हैं। बदलाव की चाहत समझ में आती है। तेजस्वी इसका कितना फायदा उठा सकते हैं? क्या वे जातिगत गणित को हरा सकते हैं जो आज एनडीए के पक्ष में दिख रहा है? यह नवंबर में पता लगेगा।

● विनोद बक्सरी

पीके किसका बिगाड़ेंगे खेल

डिजाइनबॉक्स्ड सर्वे के अनुसार, पीके की जन सुराज पार्टी (जेएसपी) एक नॉन-स्टार्टर होगी। केवल 2.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने उन्हें मुख्यमंत्री के लिए पसंदीदा उम्मीदवार के रूप में चुना। लगभग 34 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पीके की पार्टी को वोट कटुआ कहा, जबकि 27.4 प्रतिशत ने इसे गंभीर दावेदार पाया। पहली नजर में पीके की पार्टी सत्ता विरोधी वोटों को बताती और तेजस्वी की संभावनाओं को भी नुकसान पहुंचाती है। लेकिन, पीके की वर्तमान राजनीति वैसी ही है जैसी 2005 और 2010 के चुनावों में कुमार की थी- आकांक्षापूर्ण, विकास-केंद्रित। उसके बाद कुमार ने अपना जादू खो दिया। तेजस्वी उस खाली जगह को भरना चाहते हैं, लेकिन उनके पास अपने पिता की जंगलराज वाली इमेज का बोझ है। इसलिए, पीके विकास पुरुष की जगह लेने के लिए बेहतर हैं। अगर बिहारी जाति के आधार पर वोट नहीं करते हैं, जिसे कई लोग इच्छाधारी सोच कहेंगे। जो भी हो, कुमार को हराना निश्चित रूप से पीके के हित में है। भाजपा के लिए 2025 बिहार में अपना खुद का मुख्यमंत्री बनाने के अपने लंबे समय से संजोए सपने को आखिरकार पूरा करने का एक शानदार मौका है। भाजपा उनका आभारी होगा अगर जब पीके वही दोहरा सकें जो चिराग ने 2020 में किया था, जेडी(यू) को बस इतना नुकसान पहुंचाना, लेकिन इस हद तक नहीं कि एनडीए बहुमत के आंकड़े से दूर रह जाए। हम सभी जानते हैं कि पूर्व चुनाव रणनीतिकार कम से कम किंगमेकर के रूप में उभरने की उम्मीद कर रहे होंगे।

खतरनाक साबित हो सकते हैं मुनीर

अपने सीने पर चार स्टार के तमगे चमकाने वाला कोई पाकिस्तानी सेनाध्यक्ष जो नहीं कर पाया वह क्या पांचवें स्टार का तमगा चमकाकर कर पाएगा? कोई सर्वशक्तिमान पाकिस्तानी सेनाध्यक्ष फील्ड मार्शल बनकर अलग क्या कर लेगा, जो वह महज जनरल के रूप में नहीं कर पाया? इस सवाल का यह जवाब तो दिया ही जा सकता है कि वह कुछ तो ज्यादा कर ही लेगा। अपनी वर्दी के कॉलर, अपनी कैप, कार और चाहे तो अपने सिंहासन, मुख्य युद्धक टैंक को कुछ और तरह के निशान से सुशोभित कर लेगा। बहरहाल, यह सवाल उसके भी दिमाग को जरूर परेशान कर रहा होगा। वह जानता है कि वह यह पांचवां स्टार नहीं हासिल कर सकता, और हासिल कर भी ले तो बहुत कुछ कर नहीं सकता। तो क्या भारतीय सेना को परेशान होना चाहिए? इसका छोटा-सा जवाब यह है कि भारत को पाकिस्तानी फौज से हमेशा सावधान रहना चाहिए, और वह रहते भी हैं। अब सिस्टम के अंदर से या बाहर से यह जो विचित्र किस्म का प्रमोशन दिया गया है (यह इससे तय होगा कि आप इस व्यवस्था में शहबाज शरीफ को कहां रखते हैं) उसने इस चिंता या सावधानी को थोड़ा बढ़ाया है।

चिंता यह है कि इस पांचवें स्टार के साथ वे क्या करेंगे? पाकिस्तान और इस उपमहादेश के पूरे इतिहास में किसी को पांचवें स्टार से सम्मानित करने की यह दूसरी घटना है। (पांच स्टार वाले हमारे करिअप्पा, मानेकशॉ और अर्जन सिंह को रस्मी बेटन से सम्मानित किया गया था)। आधुनिक सेनाओं में पांचवें स्टार से सम्मानित करने के उदाहरण दुर्लभ हो गए हैं। किसी महत्वपूर्ण देश का उदाहरण देना हो तो इजिप्ट के अब्देल फत्तह अल-सीसी का दिया जा सकता है। यहां तक कि ताकतवर अमेरिकियों ने इस ऊंची उपाधि को मार्शल, मैकआर्थर, आइजनआवर और ब्रैडले जैसे नामों में दफन कर दिया है। तो, पाकिस्तानी सेनाध्यक्ष इस उपाधि का कुछ-न-कुछ तो जरूर करना चाहेंगे। ईदी अमीन के तौर-तरीके में से कोई उदाहरण और कनक्वरर ऑफ दि ब्रिटिश एंपायर जैसा कोई नाम पेश करके देखें, लेकिन नहीं, यह कोई मजाक का वक्त नहीं है। असैनिक सरकार का तख्तापलट कर खुद सत्ता हथिया लेना पाकिस्तान में अब काफी उबाऊ हो गया है। उन्हें यह सब करने की जरूरत नहीं है। हमारा राजनीतिक-रणनीतिक विश्लेषण अब इस मुख्य मुद्दे पर केंद्रित होना चाहिए कि फील्ड मार्शल आसिम मुनीर जनरल आसिम मुनीर से कितने भिन्न होंगे? जनरल के इरादे का संकेत हमें 16 अप्रैल को प्रवासी पाकिस्तानियों की सभा में उनके भाषण से मिल गया था और वे क्या कर सकते थे यह 22 अप्रैल को पहलगाम में जो हुआ उससे साफ हो गया। उस भाषण में उन्होंने जो एक और वादा किया था उसे पूरा करना बाकी है, वह वादा है पाकिस्तान को एक हार्ड स्टेट, सख्त मुल्क बनाने का।

प्रोपगंडा के लिए जीत के जश्न मनाना अलग बात है, उन्हें मालूम है कि उनकी फौज को भारी झटका लगा है। फिर भी, भारतीय विमानों को मार गिराने के अपुष्ट दावे लोगों को कुछ समय के लिए ही खुश कर सकते हैं। ध्वस्त हुए हवाई अड्डों (सभी सिंधु नदी के पूरब में स्थित), और जैश-लश्कर के मलबे में तब्दील बड़े-बड़े ठिकानों की तस्वीरें ही छाई रहेंगी। वे अपनी छाती चाहे जितनी ठोक लें, पांचवें स्टार की चमक जमीनी हकीकत को फीकी नहीं कर पाएगी। इसलिए वे सुधार करने के लिए कुछ-न-कुछ तो करना चाहेंगे ही। वास्तव में, उनके लिए यह जरूरी भी होगा। ये भी कहा जा सकता है कि वे हमारी कल्पना से पहले ही ऐसा कुछ कर डालेंगे। जिसे पाकिस्तानी फौज की सात साल पर उभरने वाली खुजली कहा जाता था। उसके तहत अतीत में जो बड़े आतंकवादी हमले और उनके जो भारतीय जवाब होते थे वे उनमें इतनी खौफ पैदा करते थे कि सात साल तक थोड़ी शांति रहती थी। लेकिन इस बार ऐसा नहीं होगा, क्योंकि मुनीर को वह हासिल नहीं हुआ है। वे कब कार्रवाई करेंगे, क्या करेंगे, इन सबके बारे में अटकलें ही लगा सकते हैं, पक्के तौर पर कुछ कह नहीं सकते। पक्के तौर पर हम एक ही बात कह सकते हैं। अगर आप अगले छह-सात साल के बारे में सोच रहे हों, तो हम यह निश्चित कह सकते हैं कि मुनीर कहां रहेंगे। पाकिस्तान की सियासत, संस्कृति और इतिहास बताता है कि वह किसी अच्छी स्थिति में नहीं रहेंगे। लेकिन पहले हम यह देखें कि जब वे चार स्टार वाले थे तभी कितनी जबरदस्त ताकत हासिल कर चुके थे। जिस असैनिक सरकार के निर्वाचन में उनकी मिलीभगत थी वह सरकार पहले ही उनके आगे दंडवत थी। अपने सिपाहसालार (पांचवां स्टार दिए जाने से पहले इस सरकार के अगुवा मुनीर को यही कहा करते थे) के सामने छोटे शरीफ, शाहबाज की चापलूसी भरी बोली और मुद्राओं से क्या एक वजीरे आजम का कोई रुतबा झलकता है? सो, आप उन्हें प्रशंसक, दरबारी, जो चाहे कह सकते हैं। मुनीर तमाम अहम मसलों पर बोलते रहे हैं, मुल्क को एक ट्रिलियन डॉलर वाली अर्थव्यवस्था (फिलहाल जो महज 410 अरब वाली है) बनाने तक के वादे करते रहे हैं।

● **ऋतेन्द्र माथुर**

आखिर क्या हश्र हो मुनीर का

अब फील्ड मार्शल की कुर्सी के नजरिए से देखिए। अगर वे आगे के सात वर्षों पर नजर डालें तो यही उम्मीद कर सकते हैं कि म्यूचुअल फंड के साथ दी जाने वाली यह वैधानिक चेतावनी उन पर भी लागू होगी कि पिछले प्रदर्शन को भावी प्रदर्शन की गारंटी न मानें। पिछला प्रदर्शन तो उनसे यही कहेगा कि सियासी अरमान रखने वाले हरेक महान सेनाध्यक्ष का बुरा हश्र ही हुआ- हार की शर्म झेलनी पड़ी, मुकदमों का सामना करना पड़ा, देश से निकाले गए, चार में से तीन तो मार डाले गए। अय्यूब, याहया, जिया, मुशर्रफ, चारों एक लाइन में खड़े दिखते हैं। विस्तार से देखें तो जुल्फीकार अली भुट्टो तानशाह बने और उनका भी यही हश्र हुआ। मुनीर के दो पूर्ववर्ती, कमर जावेद पाहवा और रहील शरीफ वर्दी में होते हुए चाहे जितने भी ताकतवर रहे हों, समझदार रहे और ओझल हो गए। मुनीर आज जितने ताकतवर हैं उतना ताकतवर कोई पाकिस्तानी सेनाध्यक्ष यह खुशनुमा ख्याल नहीं पालते कि वह गोल्फ खेलते हुए रिटायरमेंट वाली जिंदगी जिएंगे। यह विकल्प खारिज होने के बाद मुनीर के लिए वह करना बच जाता है, जो उनके भीतर का धर्मगुरु अल्लाह की ओर से दिया गया अवसर मानता है।

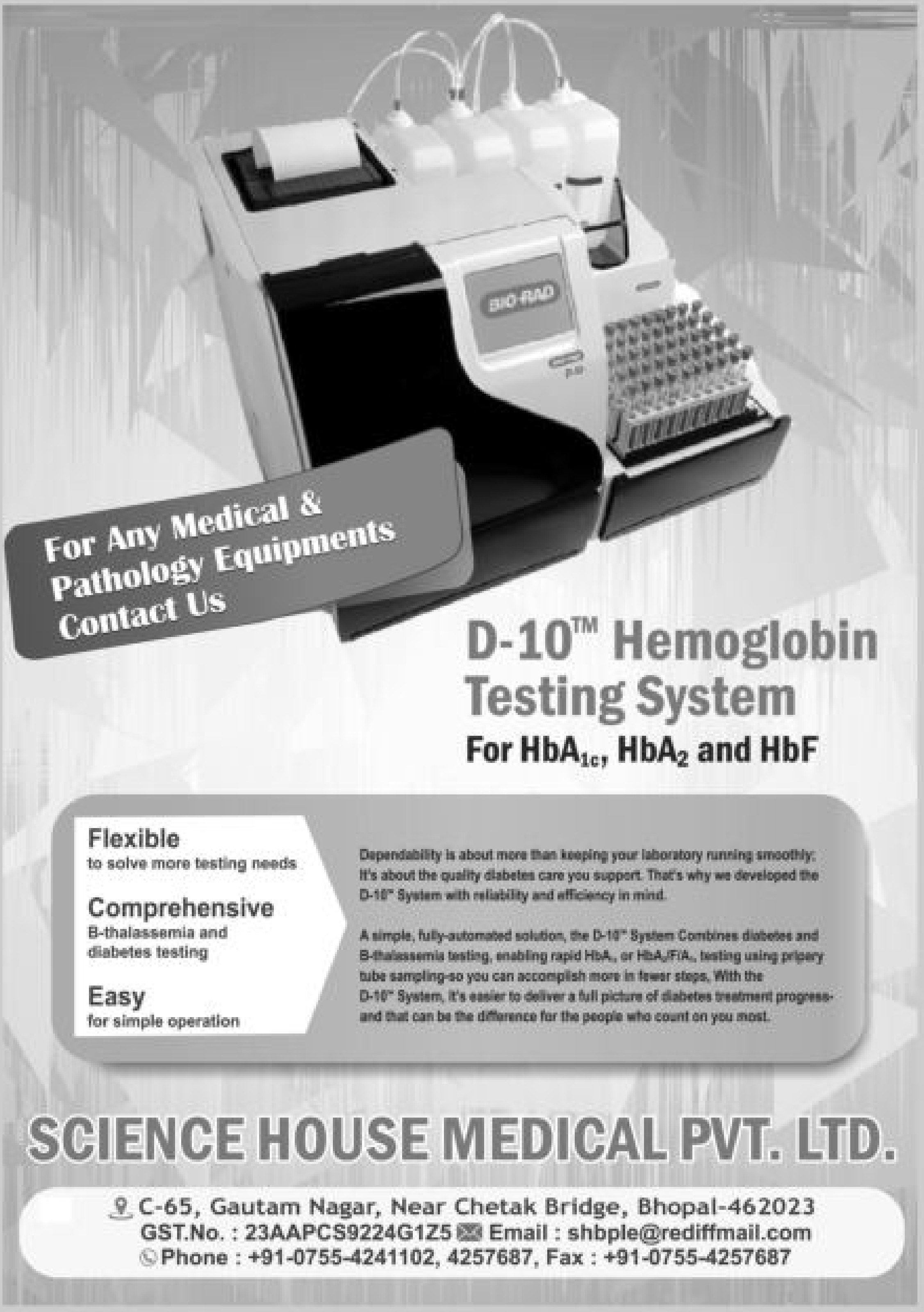

For Any Medical & Pathology Equipments Contact Us
D-10™ Hemoglobin Testing System
For HbA_{1c}, HbA_2 and HbF
Flexible
to solve more testing needs
Comprehensive
B-thalassemia and diabetes testing
Easy
for simple operation
Dependability is about more than keeping your laboratory running smoothly; It's about the quality diabetes care you support. That's why we developed the D-10™ System with reliability and efficiency in mind.
A simple, fully-automated solution, the D-10™ System Combines diabetes and B-thalassemia testing, enabling rapid HbA or HbA/F/A testing using pripary tube sampling-so you can accomplish more in fewer steps. With the D-10™ System, it's easier to deliver a full picture of diabetes treatment progress-and that can be the difference for the people who count on you most.
SCIENCE HOUSE MEDICAL PVT. LTD.
C-65, Gautam Nagar, Near Chetak Bridge, Bhopal-462023
GST.No. : 23AAPCS9224G1Z5 Email : shbple@rediffmail.com
Phone : +91-0755-4241102, 4257687, Fax : +91-0755-4257687

11 महीने में ही अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उद्योगपति एलन मस्क की दोस्ती टूट गई है। दोस्ती टूटने के बाद ट्रंप और मस्क एक-दूसरे के खिलाफ खुलकर हमला कर रहे हैं। इसका असर अमेरिका की सियासत और उद्योग पर भी देखा जा रहा है। जहां मस्क की कंपनी टेस्ला का शेयर 14 प्रतिशत तक गिर गया है। वहीं मस्क भी ट्रंप को सबक सिखाने के प्लान पर काम कर रहे हैं। व्हाइट हाउस द्वारा प्रस्तावित 4 ट्रिलियन डॉलर के खर्च और कर बिल को लेकर मस्क की तीखी आलोचना के बाद ट्रंप ने उनके साथ अपने संबंधों को लेकर सार्वजनिक रूप से संदेह जताया। ट्रंप ने कहा, एलन और मेरे बीच बहुत अच्छे संबंध थे, लेकिन मुझे नहीं पता कि हम आगे भी ऐसे ही रहेंगे या नहीं। मैं हैरान हूं।

दरअसल, मस्क ने हाल ही में इस भारी-भरकम खर्च बिल को घृणास्पद बताते हुए इसका कड़ा विरोध किया और आरोप लगाया कि यह अमेरिका को दिवालिया बना सकता है। उन्होंने कहा कि बिल को इतनी तेजी से पारित किया गया कि कांग्रेस के अधिकांश सदस्यों को इसे पढ़ने का भी समय नहीं मिला। मस्क ने सोशल मीडिया पर लिखा, यह झूठ है कि मुझे यह बिल दिखाया गया था। इसे रात के अंधेरे में चुपचाप पास किया गया। डोनाल्ड ट्रंप, जो खुद को इस बिल का रचयिता नहीं मानते लेकिन इसके प्रभावों की आलोचना का सामना कर रहे हैं, ने मस्क के रुख पर नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि मस्क को बिल के हर पहलू की जानकारी थी, खासकर इलेक्ट्रिक वाहनों से जुड़ी नीतियों को लेकर, और उन्हें उस वक्त तक कोई समस्या नहीं थी जब तक वे व्हाइट हाउस से जुड़े हुए थे। ट्रंप ने कहा, मैं एलन से बहुत निराश हूं। मैंने उनकी बहुत मदद की। एलन मस्क हाल ही में सरकारी खर्चों की समीक्षा और अनावश्यक खर्चों में कटौती के उद्देश्य से बनाए गए डिपार्टमेंट ऑफ गवर्नमेंट एफिशिएंसी में 129 दिनों तक विशेष सलाहकार के रूप में कार्यरत थे। वहां से हटने के कुछ ही दिन बाद उन्होंने बिल की सार्वजनिक रूप से आलोचना शुरू कर दी।

एक वक्त ट्रंप के सबसे बड़े समर्थक रहे एलन मस्क, अब उनके सबसे बड़े आलोचकों में से एक हो गए हैं। मस्क सार्वजनिक तौर पर ट्रंप की आलोचना कर रहे हैं और ट्रंप ने भी सार्वजनिक तौर पर पलटवार किया है। ट्रंप ने टेस्ला और स्पेसएक्स को मिलने वाले सरकारी ठेकों को बंद करने की धमकी दी है। जिससे मस्क को भारी नुकसान की आशंका है। साथ ही ट्रंप से भिड़ने के बाद मस्क की कंपनी टेस्ला के शेयरों में भारी गिरावट हुई है। मार्केट कैप में 13 लाख करोड़ रुपए गंवाकर एलन मस्क की कंपनी टेस्ला अमेरिकी बाजार में एक दिन में सबसे ज्यादा नुकसान वाली टॉप पांच कंपनियों में शामिल हो गई है। राष्ट्रपति ट्रंप और टेस्ला के सीईओ एलन मस्क के बीच बढ़ते विवाद के बाद टेस्ला के मार्केट कैप में करीब 152.4 बिलियन डॉलर (12,92,000 करोड़ रुपए) की गिरावट आई। डॉव जोन्स के मार्केट डेटा के अनुसार रिकॉर्ड पर यह एक दिन की सबसे बड़ी गिरावट है। टेस्ला ने पिछले पांच सत्रों में बाजार मूल्य में लगभग 237.2 अरब डॉलर गंवा दिए हैं। 2 जनवरी के बाद से कंपनी के शेयरों में यह पांच दिनों की सबसे खराब गिरावट है। गत दिनों हुए सत्र के दौरान 276 मिलियन से अधिक टेस्ला शेयरों की खरीदारी-बिकवाली हुई जो जनवरी 2023 के बाद से सबसे अधिक है।

यह पहली बार नहीं है, जब डोनाल्ड ट्रंप का कोई दोस्त उनका ही दुश्मन बन गया हो। ट्रंप के सार्वजनिक जीवन में आने के बाद कम से कम 5 ऐसे दोस्त थे, जो खुलकर उनके दुश्मन बन गए। एक दोस्त को तो ट्रंप ने व्हाइट हाउस से धक्के मारकर भगा दिया था। डोनाल्ड ट्रंप जब बिजनेस में थे, तब माइकल कोहेन उनके पर्सनल एडवोकेट और फिक्सर थे। कोहेन ने एक बार ट्रंप के लिए गोली खाने की बात कही थी, लेकिन 2016 आते-आते दोनों के रिश्ते खराब हो गए। हालात यहां तक पहुंच गई कि कोहेन ने भरी अदालत में ट्रंप के खिलाफ गवाही दे दी। इसके बाद दोनों के रिश्ते खराब हो गए। कोहेन ने ट्रंप को झूठा और मक्कार की उपाधि दी थी। एक वक्त डोनाल्ड ट्रंप के करीबी रहे जॉन बॉल्टन को 2018 में अमेरिका का राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बनाया गया था, लेकिन जल्द ही दोनों में मतभेद हो गए। चीन और मध्य पूर्व को लेकर ट्रंप बॉल्टन से खफा रहने लगे। आखिर में 2019 में डोनाल्ड ट्रंप ने बॉल्टन को बर्खास्त कर दिया। इसके बाद बॉल्टन ट्रंप के विरोधी हो गए। बॉल्टन ने एक पुस्तक लिखकर डोनाल्ड ट्रंप पर चीन के राष्ट्रपति को फायदा पहुंचाने का आरोप लगाया। हालांकि, बॉल्टन के आरोपों का ट्रंप पर कोई असर नहीं हुआ।

ट्रंप जब पहली बार अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गए, तो उन्होंने अपने मित्र रेक्स टिलरसन तो विदेश मंत्री कुर्सी सौंपी। दोनों के बीच एक साल में ही रिश्ते खराब हो गए, जिसके बाद टिलरसन को कुर्सी छोड़नी पड़ गई। अक्टूबर 2017 में टिलरसन ने ट्रंप को मूर्ख करार दिया। उन्होंने ट्रंप के चुनाव को लेकर भी कई गंभीर आरोप लगाए, जिसे बाद में व्हाइट हाउस ने खारिज कर दिया। डोनाल्ड ट्रंप जब पहली बार राष्ट्रपति चुने गए, तब उन्होंने अपने भरोसेमंद मार्क मिल्ली को सेना प्रमुख की जिम्मेदारी सौंपी। मिल्ली 2020 तक ट्रंप के साथ रहे, लेकिन जैसे ही ट्रंप ने 2020 में हार के बाद कुर्सी छोड़ने से इनकार किया। वैसे ही मिल्ली ने ट्रंप से दूरी बना ली। मिल्ली का कहना था कि ट्रंप पथभ्रष्ट हो गए हैं। वे तानाशाही के रास्ते पर आगे बढ़ रहे हैं, इसलिए हम उनके साथ नहीं रह सकते हैं। अमेरिकी टीवी स्टार मैनिगॉल्ट न्यूमैन 2003 में पहली बार ट्रंप के संपर्क में आई थी। इसके बाद दोनों में काफी बेहतरीन संबंध बन गए। 2015 में न्यूमैन ने खुलकर ट्रंप का साथ दिया। ट्रंप भी जब राष्ट्रपति बने तो उन्होंने न्यूमैन को व्हाइट हाउस में सलाहकार बनाया। लेकिन 2017 में दोनों के रिश्ते खराब हो गए। न्यूमैन ने ट्रंप पर धक्के मारकर व्हाइट हाउस से बाहर निकलवाने का आरोप लगाया। इस आरोप के बाद ट्रंप और न्यूमैन की लड़ाई कोर्ट पहुंच गई।

● सुश्री नित्या

ट्रंप-मस्क के बीच विवाद गहराया

मस्क ने न केवल ईवी/सोलर प्रोत्साहन को बनाए रखने की वकालत की, बल्कि तेल और गैस सब्सिडी को लेकर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि बिल में पर्यावरण के अनुकूल प्रोत्साहनों में कटौती की जा रही है, जबकि पारंपरिक ऊर्जा उद्योग को छुआ तक नहीं गया है। यह पूरी तरह अनुचित है। उन्होंने खर्च बिल में शामिल पॉर्क प्रोजेक्ट्स (अनावश्यक खर्च) को हटाने की मांग की। अपने विरोध को और स्पष्ट करने के लिए मस्क ने सोशल मीडिया पर फिल्म किल बिल का पोस्टर शेयर किया और बढ़ते सरकारी घाटे पर तंज कसते हुए कई मीम्स भी पोस्ट किए। उन्होंने कहा, अमेरिका तेजी से ऋण दासता की ओर बढ़ रहा है। एक ऐसा बिल लाया जाए जो घाटे को नियंत्रित रखे और देश की ऋण सीमा को अनावश्यक रूप से न बढ़ाए।

टॉपर तो बन रहीं पर टॉप पोस्ट तक नहीं पहुंची

आज जमाना मसल्स का नहीं माइंड का है। देश की सबसे कठिन परीक्षा में महिलाओं ने अपना दमखम दिखा दिया है। उनका दावा भी टॉप पोस्ट पर मजबूती के साथ देखना चाहिए। यूपीएससी ने सिविल सेवा परीक्षा 2024 का अंतिम परिणाम घोषित कर दिया। इसमें शक्ति दुबे ने टॉप किया है। दूसरे स्थान पर भी लड़की का ही नाम है। हर्षिता गोयल ने दूसरे स्थान पर अपनी जगह बनाई है। टॉप 25 में 11 लड़कियां हैं। पिछले 11 सालों के आंकडे देखें तो यह साफ हो जाता है कि 6 साल लड़कियां टॉप पर रही हैं। 2014 में इरा सिंघल, 2015 में टीना डाबी, 2016 में नंदिनी केआर, 2021 में श्रुति किशोर, 2022 में इशिता किशोर और 2024 में शक्ति दुबे ने टॉप पोजीशन हासिल की है।

सिविल सेवा परीक्षा 2024 में टॉप 5 में जिन लड़कियों ने जगह बनाई, उन्होंने पूरी मेहनत और संघर्ष से इस मुकाम को हासिल किया है। शक्ति दुबे मूल रूप से उप्र के प्रयागराज की रहने वाली हैं। उनकी स्कूलिंग होम टाउन प्रयागराज से ही हुई है। उनकी पढ़ाई बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से हुई है। शक्ति बताती है कि उनका ग्रेजुएशन इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से हुआ है। ग्रेजुएशन के बाद शक्ति दुबे बनारस आ गईं। साल 2018 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से बायोकैमिस्ट्री में पोस्ट ग्रेजुएशन की डिग्री हासिल की है। दूसरे स्थान पर रहने वाली हर्षिता गोयल हरियाणा की रहने वाली है। पिछले कई वर्षों से वह गुजरात के वडोदरा में रह रही हैं। हर्षिता एक चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं और उन्होंने समाज सेवा के लिए अपनी फाइनेंस की दुनिया को छोड़ दिया। वह थैलेसीमिया और कैंसर से जूझ रहे बच्चों की मदद करने वाले एनजीओ के साथ जुड़ी थीं। हर्षिता की सफलता सामाजिक समर्पण और दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रतीक है।

चौथे स्थान पर रहने वाली मार्गी चिराग शाह गुजरात के अहमदाबाद की रहने वाली हैं। गुजरात टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी से कम्प्यूटर इंजीनियरिंग करने वाली मार्गी ने समाजशास्त्र को वैकल्पिक विषय के रूप में चुना और ऑल इंडिया रैंक-4 हासिल की। टेक्निकल बैकग्राउंड के बावजूद समाज से जुड़ाव ने उन्हें इस क्षेत्र में आने की प्रेरणा दी। कोमल पूनिया उप्र के सहारनपुर की रहने वाली हैं। उन्होंने दूसरे प्रयास में यूपीएससी क्लियर कर जिले का नाम रोशन किया है। कोमल की मेहनत और जज्बे ने यह दिखा दिया कि लगन और निरंतर प्रयास से कोई भी मंजिल पाई जा सकती है। मप्र के ग्वालियर की रहने वाली आयुषी बंसल ने 2022 में 188वीं और 2023 में 97वीं रैंक हासिल की थी। आयुषी के जीवन में पिता का साया बचपन में ही उठ गया था, लेकिन मां की प्रेरणा और अपनी मेहनत से उन्होंने यह कठिन परीक्षा पास की। कोचिंग की तैयारी के लिए पहले दिल्ली आईं। फिर मैकेंजी जैसी बड़ी कंपनी में जॉब की और आखिरकार अपनी राह चुनी।

गाजियाबाद की आशी शर्मा को रैंक-12 प्राप्त हुआ है। आशी का यह दूसरा अटेम्प्ट था। उप्र के उन्नाव जिले की रहने वाली सौम्या मिश्रा को यूपीएससी में रैंक 18 प्राप्त हुआ है। सौम्या के पिता राघवेंद्र कुमार मिश्र पेशे से शिक्षक हैं। पीसीएस 2021 की परीक्षा में सौम्या मिश्रा ने टॉप किया था। इस बार सौम्या के साथ उनकी बहन सुमेघा मिश्रा ने 53वीं रैंक हासिल कर परीक्षा क्रैक की है। उप्र की शक्ति दुबे के साथ कोमल पुनिया, आशी शर्मा, सौम्या मिश्रा, मुस्कान श्रीवास्तव, शोभिका पाठक और अवधिजा गुप्ता ने टॉप 20 में जगह बनाने में सफलता हासिल की। देश की सबसे कठिन परीक्षाओं में यूपीएससी का नाम आता है। इसको क्रैक करना बहुत कठिन होता है। अब लड़कियों ने इस परीक्षा की टॉप लिस्ट में अपनी जगह बनानी शुरू कर दी है। इस परीक्षा को क्रैक करने के लिए कैंडिडेट्स दिन-रात एक कर देते हैं। अब लड़कियों ने भी अपनी पहचान बनानी शुरू कर दी है। यूपीएससी सिविल सर्विस 2024 की फाइनल लिस्ट में उप्र की लड़कियों का दबदबा रहा है। टॉप-20 में उप्र की 4 लड़कियों का नाम है। यूपीएससी सिविल सर्विस में इस साल कुल 1090 कैंडिडेट्स को सफलता हासिल हुई है।

बड़ा सवाल यह है कि आईएएस और आईपीएस में टॉप करने वाली यह लड़कियां जब नौकरी करती हैं तो इनको टॉप पोस्ट पर काम करने का मौका नहीं दिया जाता है। आज का दौर बदल रहा है। अब जमाना मसल्स का नहीं माइंड का है। यूपीएससी परीक्षाओं में टॉप पर रहकर लड़कियों ने दिखा दिया कि उनमें कितना दम है। अब उनको टॉप पोस्ट संभालने के लिए दी जा सकती है। आईएएस बनने वाली महिला अफसरों को जिलों में डीएम की पोस्ट दी जानी चाहिए। आईपीएस बनने वाली महिला अफसरों को जिले में एसपी, एसएसपी और पुलिस कमिश्नर बनने का मौका देना चाहिए।

● ज्योत्सना अनूप यादव

महिलाओं को कम मिलते हैं मुख्य सचिव के पद

टॉप ब्यूरोक्रेसी में भी महिलाओं को मुख्य सचिव के पद कम मिलते हैं। लेकिन लीडरशिप यानि अगुवाई और निर्णय लेने वाले पदों में पहुंचने वाली महिलाओं की संख्या में अंतर है। जरूरत है कि इस अंतर को दूर किया जाए। जो लड़कियां परीक्षाओं में टॉप कर रही हैं और यहां वह लड़कों की संख्या से कम नहीं हैं उनको लीडरशिप वाले पद जैसे डीएम, एसपी और विभागों में प्रमुख पद दिए जाएं। विभागों में भी महिलाओं के साथ संस्कृति और शिक्षा विभाग जैसे पदों की जिम्मेदारी दी जाती है। जब तक यह भेदभाव खत्म नहीं होगा, तब तक यूपीएससी परीक्षा में बराबरी करना बेमकसद सा हो जाता है।

पीएमओ और रक्षा विभागों में अफसर के रूप में काम करने के मौके महिलाओं को कम दिए जाते हैं। महिलाएं परीक्षा पास करके अपनी क्षमता के बारे में बता रही हैं। वे यह हक भी मांग रही हैं कि उनको भी पुरूषों के बराबर काबिल समझ कर टॉप पोस्ट दिए जाने चाहिए। महिला-पुरूष को बराबरी का हक नहीं दिया जाता है। उप्र में नीरा यादव के बाद कोई महिला मुख्य सचिव नहीं बनी हैं। अभी भी महिला डीजीपी नहीं बनी है। भले ही परीक्षाओं में महिलाएं टॉप कर रही हों

विरासत को संभालने की जिम्मेदारी

शुभमन गिल को बीसीसीआई ने भारतीय टेस्ट टीम का नया कप्तान नियुक्त करके बड़ा कदम उठाया है। रोहित शर्मा और विराट कोहली के टेस्ट क्रिकेट से अचानक संन्यास लेने के बाद 25 वर्षीय गिल को यह जिम्मेदारी सौंपी गई। वे 37 वें टेस्ट कप्तान बने और मंसूर अली खान पटौदी, कपिल देव, सचिन तेंडुलकर और रवि शास्त्री जैसे नामों के बाद सबसे युवा टेस्ट कप्तानों में शामिल हो गए हैं। क्रिकेट जगत में इस निर्णय को लेकर दो राय हैं। एक वर्ग इसे भविष्य की दृष्टि से शानदार फैसला मान रहा है, तो दूसरा शुभमन की तैयारियों और अनुभव पर प्रश्नचिन्ह लगा रहा है। जून में इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज बड़ी चुनौती है। गिल को सिर्फ कप्तानी ही नहीं संभालनी है, बल्कि दो दिग्गज खिलाड़ियों की विरासत को भी संभालना है। एक तरफ रोहित शर्मा, जिनकी कप्तानी में संतुलन और ठहराव था, दूसरी ओर विराट कोहली, जिनकी बल्लेबाजी में विश्वास और निरंतरता थी। गिल की कप्तानी भारतीय क्रिकेट के लिए एक टर्निंग पॉइंट है। टीम अब युवा चेहरों से भरी है। न रोहित, न विराट और न ही अश्विन या मोहम्मद शमी। अनुभवहीन लेकिन प्रतिभावान दल को नई दिशा देना गिल की सबसे बड़ी परीक्षा होगी। जैसा गिल का करियर रहा है, उम्मीदें बीसीसीआई के साथ-साथ प्रशंसकों को भी हैं।

गौरतलब है कि शुभमन गिल ने बहुत कम उम्र में अपनी प्रतिभा से सबको चौंकाया। 2014 में पंजाब की अंतर-जिला अंडर-16 एमएल मार्कन ट्रॉफी में निर्मल सिंह के साथ 587 रन की रिकॉर्ड साझेदारी की, जिसमें गिल ने 351 रन बनाए। इस पारी ने उनके परिवार को अपने छोटे से गांव से मोहाली शिफ्ट होने के लिए प्रेरित किया। क्रिकेट को प्राथमिकता देने के लिए किया गया यह फैसला निर्णायक भी साबित हुआ। जल्द ही गिल ने अंडर-19 क्रिकेट में अपनी चमक दिखाई और 2018 अंडर-19 वर्ल्डकप में उप-कप्तान रहते हुए टूर्नामेंट के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज बने। पाकिस्तान के खिलाफ सेमीफाइनल में उनकी नाबाद 102 रन की पारी ने उन्हें देशभर में प्रसिद्ध कर दिया। हालांकि उस वक्त ज्यादा चर्चा पृथ्वी शॉ की हो रही थी, जो टीम के कप्तान थे। किस्मत ने करवट ली, शॉ की फॉर्म और फिटनेस ने उन्हें पीछे धकेला और गिल को मौका मिला। रणजी ट्रॉफी में गिल ने शतक और अर्धशतक से आगाज किया। युवराज सिंह से सीख लेते हुए उन्होंने तकनीक के साथ-साथ क्रिकेट की बारीकियां भी समझीं। 2020 में जब भारत ने ऑस्ट्रेलिया का दौरा किया, गिल को टीम में शामिल किया गया। मेलबर्न टेस्ट में डेब्यू कर उन्होंने अपनी तकनीकी सटीकता और संयमित खेल से सबका ध्यान खींचा। भारत ने ऐतिहासिक रूप से वह सीरीज 2-1 से जीती।

गिल को प्रिंस का खिताब विराट कोहली के किंग टैग के उत्तराधिकारी के रूप में मिला। उनसे उम्मीद की गई कि वे अगली पीढ़ी के अग्रणी बल्लेबाज बनेंगे। लेकिन टेस्ट क्रिकेट में उनका प्रदर्शन उम्मीद के मुताबिक नहीं रहा। 32 मैचों में 1893 रन, कुछ यादगार पारियों के साथ, लेकिन विराट कोहली के स्तर तक पहुंचने के लिए यह पर्याप्त नहीं कहा जा सकता। विराट ने टेस्ट में 30 शतक और 9,000 से ज्यादा रन बनाते हुए विदेशों में भी जीत की नींव रखी। वहीं गिल को अब भी तेज गेंदबाजी और स्विंग के सामने खुद को साबित करना है। कोहली ने न केवल रन बनाए, बल्कि भारतीय क्रिकेट में फिटनेस, आक्रामकता और मानसिकता का स्तर भी ऊपर उठाया। गिल को भी केवल बल्लेबाज नहीं, बल्कि एक प्रेरक लीडर बनना होगा।

अब बात कप्तानी की। रोहित शर्मा के जाने के बाद गिल को यह जिम्मेदारी मिली है। रोहित ने टेस्ट क्रिकेट में एक शांत लेकिन सटीक नेतृत्व किया। गेंदबाजों का रोटेशन, फील्ड सेटिंग और खिलाड़ियों के साथ विश्वास का रिश्ता उनकी ताकत रही। गिल के लिए यह नई भूमिका है। उन्होंने आइपीएल में गुजरात टाइटंस की कप्तानी की है, लेकिन टेस्ट कप्तानी की गहराई उससे कहीं अधिक है- मानसिक थकान, पांच दिन की योजना और हर सेशन का प्रबंधन। जिस टीम को वे लीड करने जा रहे हैं, उसमें न केवल अनुभव की कमी है, बल्कि एक ट्रांजिशन के दौर से भी गुजर रही है। उन्हें ड्रेसिंग रूम की नब्ज समझनी होगी और एक नई टीम संस्कृति का निर्माण करना होगा। चयनकर्ताओं में मुख्य भूमिका निभाने वाले अजीत अगरकर और कोच गौतम गंभीर ने गिल में यह क्षमता देखी है।

इंग्लैंड में टेस्ट सीरीज गिल के लिए अग्निपरीक्षा साबित हो सकती है। वहां की परिस्थितियों में स्विंग गेंदबाजी के खिलाफ उनका रिकॉर्ड अभी भी सवालों के घेरे में है। इंग्लैंड की आक्रामक बैजबॉल शैली के सामने गिल को केवल कप्तानी ही नहीं, बल्कि बल्लेबाजी में भी दम दिखाना होगा। भारत ने 2007 के बाद से इंग्लैंड में कोई टेस्ट सीरीज नहीं जीती है। ऐसे में यह दौरा न सिर्फ भारत की नई टेस्ट यात्रा की शुरुआत है, बल्कि गिल की नेतृत्व क्षमता का पहला असली इम्तिहान भी है।

शुभमन गिल को जब कप्तानी सौंपी गई, तो उसे लेकर तमाम सवाल उठे- अनुभव, निरंतरता, दबाव झेलने की क्षमता। लेकिन यही वह मोड़ है, जहां एक खिलाड़ी अपने भाग्य का निर्माण करता है। विराट कोहली और रोहित शर्मा के युग के बाद, भारतीय क्रिकेट एक नई दिशा में बढ़ रहा है। गिल के पास अब सिर्फ बल्ले से जवाब देने का नहीं, बल्कि एक लीडर के तौर पर मिसाल पेश करने का भी मौका है। इतिहास उन्हें एक अस्थायी कप्तान के तौर पर याद रखेगा या एक युग निर्माता के रूप में, इसका फैसला इंग्लैंड दौरे की 22 गज की पट्टी पर लिखा जाएगा।

● आशीष नेमा

भैया रिटायर क्या हुए...

भैया रिटायर क्या हुए, जिंदगी में नसीहतों की बाढ़ सी आ गई। कुछ दिन पहले ही रिटायर हुए हैं और वजह-बेवजह ही बड़े स्ट्रैस्ड हैं। रिटायर्ड आदमी की जिंदगी ऐसी हो जाती है, मानो आप अचानक एक सार्वजनिक संपत्ति बन गए हों, जिसे हर कोई अपने अनुभवों और ज्ञान से सजाने-संवारने का अधिकार समझता है।

रिटायरमेंट के बाद आदमी जितना अपने भविष्य के बारे में नहीं सोचता, उससे कहीं ज्यादा लोग उसके लिए सोचने लगते हैं। हर कोई अचानक सलाहकार बन जाता है, और ऐसी नसीहतें देने लगता है, मानो उन्होंने खुद रिटायरमेंट के सारे विशेषज्ञ पाठ्यक्रम पढ़ रखे हों।

पहली नसीहत होती है सेहत के बारे में।

अब तो सेहत का ख्याल रखना शुरू कर दो!

गोया पहले हम रोजाना आलू के पराठे चबाकर और ऑफिस की कुर्सी पर दिनभर बैठे-बैठे हीलियम के गुब्बारे की तरह फूल रहे थे, और अब रिटायरमेंट के बाद अचानक ओलंपिक एथलीट बनने की तैयारी करनी हो।

और यदि किसी दिन आपने कह दिया कि आज तो आराम करूंगा, तो आपको ऐसे देखा जाता है जैसे आप अपनी सेहत को जानबूझकर बर्बाद कर रहे हों। सुबह-सुबह टहलने की सलाह ऐसे दी जाती है अगर एक दिन भी घूमने नहीं गए तो तुरंत अस्पताल का रास्ता पकड़ना पड़ेगा। अगर आपने हिम्मत करके मॉर्निंग वॉक शुरू कर भी दी, तो पड़ोसी ऐसे ताने मारते मिलेंगे, बड़े दिन बाद दिखे, लगता है अब रिटायरमेंट का असर दिखने लगा है!

दूसरी सलाह होती है वित्तीय प्रबंधन को लेकर।

अब पैसों को बहुत सोच-समझ कर खर्च करना।

अरे भाई, जिंदगीभर जो कमाया वो सोच-समझकर ही खर्च किया। अब रिटायरमेंट के बाद ऐसा क्या नया हो गया कि हमें इसका ककहरा फिर सीखना पड़ेगा। लेकिन नहीं, हर कोई यह समझाने लगता है कि किस बैंक में एफडी करवानी है, किस म्युचुअल फंड में निवेश करना है, और कहां-कहां से बचत करनी है। रिटायरमेंट के बाद आप अचानक से फाइनेंशियल गाइडेंस के लिए सॉफ्ट टारगेट बन जाते हो। मानो आपने अपनी पूरी जिंदगी पैसे उधार लेकर ऐशो-आराम में बर्बाद कर दी हो। और ये सलाह देने वाले अक्सर वही लोग होते हैं जिनकी खुद की आर्थिक स्थिति डांवाडोल रहती है। लेकिन फिर भी वो आपको म्युचुअल फंड और फिक्स्ड डिपॉजिट्स का एक्सपर्ट बताने में कोई कसर नहीं छोड़ते। अब यदि आपने किसी दिन अपने शौक के लिए कोई नई गाड़ी या गैजेट खरीद लिया तो आपको ऐसे घेरा जाएगा जैसे आपने अपनी पेंशन बर्बाद करने का कोई अपराध कर दिया हो।

अब इस उम्र में ये सब? बचत पर ध्यान दो!

आप सोचते हैं, भैया कमाया ही इसीलिए था कि अब अपने ऊपर खर्च कर सकूं!

समय के सदुपयोग करने की सलाह तो हर कोई जेब में रखे घूमता है, जहां मिले हाथ में थमा दी।

अब खाली वक्त में कोई समाजसेवा का काम पकड़ लो दादा। अभी तक सिर्फ अपने बारे में ही सोचा है अब जाति समाज की भी खबर लो।

इस तरह की बातें सुनकर लगने लगता है कि अभी तक हम दुनिया के पहले दर्जे के खुद फरामोश थे जिसका पाप धोने का अब वक्त आ गया है। कहीं किसी एनजीओ से जुड़ने का सुझाव मिलेगा, तो कोई कहेगा कि बच्चों को पढ़ाओ। अगर आप ऐसा कुछ नहीं कर रहे, तो मानो आप अपनी जिंदगी यूं ही बर्बाद किए दे रहे हो। और यदि गलती से जवाब में आपने यह कह दिया कि अब मैं थोड़ा आराम करना चाहता हूं, तो आपको अक्षम्य अपराध करार दिए जाने की भी पूरी संभावना होती है।

चौथी नसीहत होती है परिवार के साथ वक्त बिताने की।

अब तो बच्चों के साथ कुछ वक्त बिताओ।

यह सलाह सुनकर लगता है जैसे बच्चे हमेशा से इंतजार कर रहे थे कि कब हम रिटायर हों और वो हमारे साथ कंचे खेलें। सच्चाई तो यह है कि बच्चे अब खुद इतने व्यस्त हैं कि उन्हें अपने कामों से फुर्सत नहीं मिलती। लेकिन रायचंदों का तो मानना है कि अब हमें उनके पीछे-पीछे घूमते रहना चाहिए, ताकि उन्हें लगे कि हम फैमिली मैन बन गए हैं। और अगर आप कभी अकेले कुछ वक्त बिताना चाहें, तो फिर शुरू हो जाते हैं।

अरे, बच्चों के बिना अकेले मन लगेगा क्या?

और अंतिम नसीहत होती है अगला जीवन सुधारने की।

अब भगवान का नाम लो, भजन पूजन करो।

अरे भाई अब दम मारने की फुर्सत मिली है इस जिंदगी में थोड़ा सुस्ता तो लें फिर सोचेंगे अगले जन्म का। और अगर कहीं आपने खुदा न खास्ता यह कह दिया कि मुझे तो क्रिकेट का मैच देखना पसंद है या फिल्म देखना है तब आप मोहल्ले के सबसे बड़े नास्तिक करार दे दिए जाओगे।

कुल मिलाकर, रिटायरमेंट के बाद की जिंदगी में नसीहतों की बाढ़ आ जाती है। हर कोई यह मानता है कि अब आपकी जिंदगी का एकमात्र उद्देश्य उनकी सलाह मानकर उसे अमल में लाना है। चाहे आप कितना ही कहना चाहें कि भई, अभी मैं खुद को संभाल ही रहा हूं, लेकिन लोगों और समाज को तो आपको संवारने का ठेका मिल ही गया है।

● **डॉ. यशोधरा भटनागर**

मेट्रोपॉलिटन सिटी का सपना साकार

मप्र सरकार प्रदेश के बड़े शहरों के आसपास के छोटे-छोटे शहरों को मिलाकर मेट्रोपॉलिटन सिटी बनाने जा रही है। सरकार ने इसके लिए एक्ट की मंजूरी दे दी है। इसके तहत इंदौर, भोपाल, जबलपुर, ग्वालियर और उज्जैन में मेट्रोपॉलिटन अथॉरिटी बनाई जाएगी। इससे मप्र के शहरों का विकास दिल्ली-एनसीआर और बेंगलुरु जैसे शहरों की तरह होगा। वहीं इस योजना से प्रदेश में रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे।

मप्र में अभी तक शहरों के विकास की बात भोपाल और इंदौर तक ही सीमित रहती थी। लेकिन मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर, भोपाल, जबलपुर, ग्वालियर और उज्जैन को मेट्रोपॉलिटन सिटी बनाने के सपने को साकार करते हुए उसके आसपास के शहरों के विकास की भी नींव रख दी है। गौरतलब है कि मप्र कैबिनेट ने 20 मई को मप्र मेट्रोपॉलिटन नियोजन एवं विकास अधिनियम 2025 (एक्ट) को मंजूरी दे दी है। इसके तहत इंदौर, भोपाल, जबलपुर, ग्वालियर और उज्जैन में मेट्रोपॉलिटन अथॉरिटी बनाई जाएगी। पहले चरण में प्रदेश के दो सबसे बड़े शहरी क्षेत्र भोपाल और इंदौर को मेट्रोपॉलिटन रीजन के रूप में विकसित करने की शुरुआत होगी। भोपाल मेट्रोपॉलिटन रीजन में 9600 वर्ग किमी और इंदौर रीजन में करीब 10 हजार वर्ग किमी क्षेत्र शामिल होगा। दोनों क्षेत्रों के लिए मेट्रोपॉलिटन प्लानिंग कमेटी व मेट्रोपॉलिटन रीजन डेवलपमेंट अथॉरिटी का गठन होगा।

इंदौर और भोपाल दोनों शहरों का विकास तेजी से हो रहा है। सबसे अहम बात ये है कि दोनों शहरों के आसपास शहरीकरण की रफ्तार बाकी शहरों से कहीं ज्यादा है। जैसे-जैसे शहर का दायरा बढ़ रहा है उसके हिसाब से प्लान जरूरी है। शहरी और ग्रामीण विकास के लिए एकीकृत और समन्वित प्रयासों की जरूरत है। साथ ही विकास की क्षमताओं के आधार पर भूमि उपयोग का निर्धारण करने और आसपास के औद्योगिक क्षेत्रों और शहरों के एकीकृत विकास की जरूरत है। इंदौर मेट्रोपॉलिटन एरिया में पांच जिले इंदौर, देवास, उज्जैन, धार और शाजापुर को शामिल किया गया है। कुल क्षेत्रफल करीब 9 हजार वर्ग किमी का है। इस क्षेत्र की आबादी 55 लाख के करीब होगी, मगर 75 लाख की आबादी को ध्यान में रखकर रीजन विकसित किया जाएगा। इंदौर विकास प्राधिकरण (आईडीए) को नोडल एजेंसी बनाया है। इंदौर मेट्रोपॉलिटन के तेजी से हो रहे काम की वजह है सिंहस्थ-2028। दरअसल, इंदौर का जो एरिया तय हुआ है, उसमें दिल्ली-मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (डीएमआईसी) को जोड़ा गया है। सरकार की कोशिश है कि इससे उद्योगों और व्यापार को नई गति मिल सके। इससे देवास, पीथमपुर, उज्जैन और बदनावर जैसे क्षेत्रों में औद्योगिक निवेश को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही इंदौर, देवास और अन्य शहरों को मजबूत सड़क, रेल और हवाई मार्गों से जोड़ा जाएगा ताकि सिंहस्थ में आने वाले श्रद्धालुओं को बेहतर कनेक्टिविटी मिल सके।

भोपाल मेट्रोपॉलिटन एरिया में भोपाल, सीहोर, रायसेन, विदिशा और राजगढ़ जिले के ब्यावरा को शामिल किया गया है। भोपाल विकास प्राधिकरण को मेट्रोपॉलिटन रीजन डेवलप करने के लिए नोडल एजेंसी बनाया गया है। इन पांचों जिलों को मिलाकर भोपाल रीजन का कुल क्षेत्रफल 9600 वर्ग किमी होगा। 14 माह में इन जिलों का सर्वे कर रीजनल डेवलपमेंट एंड इंवेस्टमेंट प्लान बनेगा। भोपाल रीजन दक्षिण में औबेदुल्लागंज और उत्तर में श्यामपुर व आष्टा तक हो जाएगा। अनुमान है कि भोपाल मेट्रोपॉलिटन रीजन की कुल आबादी 35 लाख होगी। यह पूरा प्लान 60 लाख की संभावित आबादी के हिसाब से तैयार किया जा रहा है। मेट्रोपॉलिटन एरिया को 4 चरणों में डेवलप किया जाता है, जिसमें इंसेप्शन, सिचुएशन एनालिसिस, रीजनल एवं इन्वेस्टमेंट प्लान और डीपीआर शामिल है। इंदौर के संदर्भ में पहले चरण यानी इंसेप्शन का काम पूरा हो चुका है। मेट्रोपॉलिटन रीजन का कुल क्षेत्रफल, इसमें शामिल होने वाले जिले, तहसील और गांवों की संख्या तय हो चुकी है। अब सिचुएशन एनालिसिस का ड्राफ्ट तैयार होगा यानी इसमें शामिल जिलों की अलग-अलग तहसील, निकायों का डेटा, वहां की जनसंख्या, स्थापित उद्योग, क्षेत्र की विशेषता की स्टडी होगी। इसके बाद वहां की भौगोलिक, आर्थिक, धार्मिक-सामाजिक स्थिति का आंकलन होगा। कहां कौनसी इंडस्ट्री है, किस तरह की जरूरतें हैं, इसका भी खाका तैयार होगा। इसके बाद रीजनल एवं इन्वेस्टमेंट प्लान बनेगा, जिसमें ये देखा जाएगा कि मेट्रोपॉलिटन एरिया का समान रूप से विकास हो सके। इसके बाद डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट जारी की जाएगी। कैबिनेट से मंजूरी के बाद एक्ट का बिल जुलाई में संभावित मानसून सत्र में पेश होगा। इंजीनियरिंग, लागत अनुमान और वर्क प्लान की डीपीआर के लिए 2 जून को टेंडर निकलेगा। दोनों शहरों को मेट्रोपॉलिटन रीजन में डेवलप करने के लिए नए एक्ट को कैबिनेट से मंजूरी मिल गई है। विधानसभा से एक्ट को मंजूरी मिलने के बाद महानगर विकास प्राधिकरण (मेट्रोपॉलिटन डेवलपमेंट अथॉरिटी) का गठन किया जाएगा। मुख्यमंत्री अथॉरिटी के अध्यक्ष होंगे। ये अथॉरिटी मेट्रोपॉलिटन एरिया का प्लान तैयार करने के साथ इसके क्रियान्वयन में अहम भूमिका अदा करेगी। साथ ही महानगर योजना समिति (मेट्रोपॉलिटन प्लानिंग कमेटी) का भी गठन किया जाएगा।

- फीचर

पब्लिक ट्रांसपोर्ट को जोड़ने पर सबसे अधिक फोकस

दोनों मेट्रोपॉलिटन रीजन में पब्लिक ट्रांसपोर्ट को जोड़ने पर सबसे अधिक फोकस होगा। इसके अलावा इन्हें स्मार्ट बनाने के लिए अलग ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी बनेगी। यह ट्रैफिक मैनेजमेंट, मेट्रो, रेलवे, एयरपोर्ट, हाईवे और रैपिड ट्रांजिट प्रोजेक्ट्स में विभागों के बीच समन्वय सुनिश्चित करेगी। कैबिनेट ने एक्ट के मसौदे को मंजूरी दी है उसमें इंदौर, भोपाल, देवास और उज्जैन में विकास प्राधिकरण काम कर रहे हैं। विकास प्राधिकरण शहरी क्षेत्र में प्रभावी है। ये तय हुआ है कि इंदौर, उज्जैन और देवास विकास प्राधिकरण की सीमाओं के बाहर, शेष क्षेत्र में प्लानिंग और को-ऑर्डिनेशन का काम मेट्रोपॉलिटन डेवलपमेंट अथॉरिटी करेगी। दर असल, इसके लिए तीन विकल्प सुझाए गए थे जिसमें इंदौर उज्जैन और देवास विकास प्राधिकरण को मर्ज करते हुए नया महानगर विकास प्राधिकरण बनाने का प्रस्ताव था। दूसरा। इंदौर, उज्जैन और देवास विकास प्राधिकरण अपना काम करते रहेंगे और महानगर विकास प्राधिकरण प्लानिंग और को-ऑर्डिनेशन में उनकी मदद करें। तीसरे विकल्प के तौर पर विकास प्राधिकरण की सीमाओं के बाहर प्लानिंग करना था। यानी मौजूदा प्राधिकरण शहरों के भीतर प्रभावी रहेंगे और उनकी सीमाओं के बाहर बाकी क्षेत्र में डेवलपमेंट का काम मेट्रोपॉलिटन डेवलपमेंट अथॉरिटी देखेगी।

किसानों के हित में समर्पित
मध्यप्रदेश सरकार
प्रदेश सरकार करेगी
ग्रीष्मकालीन मूंग एवं उड़द की
न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
न्यूनतम समर्थन मूल्य
मूंग-₹ 8682
प्रति क्विंटल
उड़द-₹ 7400
प्रति क्विंटल
"सरकार ने किसानों के हित में निर्णय लेते हुए ग्रीष्मकालीन मूंग एवं उड़द के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर उपार्जन के लिये 19 जून से पंजीयन प्रारंभ करने की घोषणा की है। सरकार किसानों के आर्थिक सशक्तिकरण के लिये कृषि आधारित उद्योग लगाने में भी मदद कर रही है। किसानों को उनकी फसल का वाजिब दाम मिले इसके लिये हम प्रतिबद्ध हैं।"
डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री
न्यूनतम समर्थन मूल्य पर ग्रीष्मकालीन मूंग एवं उड़द के उपार्जन हेतु 19 जून, 2025 से शुरू होगा पंजीयन
न्यूनतम समर्थन मूल्य पर उपार्जन हेतु संबंधित किसानों को पंजीयन के लिये फसल का नाम, आधार नंबर, बैंक खाता नंबर, आईएफएससी कोड सहित भू-अधिकार ऋण पुस्तिका की स्व-प्रमाणित छायाप्रति संलग्न करना आवश्यक
बैंक खाता राष्ट्रीयकृत बैंक एवं जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक की शाखा का होना अनिवार्य
उपार्जन केन्द्रों पर किसानों की सुविधा के लिये होगी 'व्यवस्था उपार्जन समितियां'